Neo-Buddhist Movement : A Historical Study of Varanasi (1956-2011)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ की मास्टर ऑफ फिलॉसफी (इतिहास) की उपाधि के लिए प्रस्तुत

एक

शोध–प्रबन्ध

2019

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY

LUCKNOW

प्रज्ञा शील करूणा

ESTABLISHED 1996

शोध निर्देशिका

प्रोफेसर डॉ0 शूरा दारापुरी

इतिहास विभाग,

अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ,

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोधार्थिनी

सुमन

अनुक्रमांक नं0 : 136045

नामांकन सं0 : 520/17

इतिहास विभाग,

अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

(एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड,

लखनऊ– 226025

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड,
लखनऊ– 226025

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
(A Central University)
Vidya Vihar, Raebareilly Road,
Lucknow- 226025

Letter No. …………………
Date : ………………….

प्रमाण–पत्र

सुमन अनुक्रमांक सं0 **136045**, नामांकन संख्या **520/17** बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ से मास्टर ऑफ फिलॉसफी (इतिहास) विषयान्तर्गत **Neo-Buddhist Movement : A Historical Study of Varanasi (1956-2011)** उपाधि का शोध प्रबन्ध परीक्षणार्थ अग्रसारित किया जा रहा है।

शोध निर्देशिका
प्रोफेसर डॉ0 शूरा दारापुरी
इतिहास विभाग,
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ,
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ

घोषणा–पत्र

मैं **सुमन** घोषणा करती हूँ कि यह शोध–प्रबन्ध जिसका शीर्षक **Neo-Buddhist Movement : A Historical Study of Varanasi (1956-2011)** निर्देशन **प्रोफेसर डॉ0 शूरा दारापुरी** के इतिहास विभाग, अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ से मास्टर ऑफ फिलॉसफी (इतिहास) उपाधि हेतु प्रस्तुत किया गया है। उक्त शोध–प्रबन्ध मौलिकता पर आधारित हैं। उक्त शोध–प्रबन्ध शीर्षक से संबंधित विषय पर किसी भी विश्वविद्यालय व संस्थान द्वारा उपाधि/डिप्लोमा हेतु स्वीकृत नहीं किया गया है।

दिनांक :–

शोधार्थिनी

सुमन

अनुक्रमांक नं0 : **136045**

नामांकन सं0 : **520/17**

इतिहास विभाग,

अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ,

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर

विश्वविद्यालय, लखनऊ

समर्पित

पूज्यनीय

स्वर्गीय दादी–दादा,

और

माता–पिता

व

समस्त गुरुजनों

के

चरणों में

सादर अर्पित

प्राक्कथन

ज्ञान असीम है, इसकी कोई सीमा नहीं है। सत्य एक है, अनेक नहीं। बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने दलित समाज के साथ बरते जाने वाले भेदभाव को समाप्त करने एवं उन्हें समाज में समानता का अधिकार प्राप्त कराने के लिए, जीवन पर्यन्त संघर्ष किया। इसी भावना से प्रेरित होकर बौद्ध धर्म को ग्रहण किया। बाबा साहेब का कहना था कि मेरा जन्म भले ही हिन्दू धर्म में हुआ हैं, लेकिन मैं हिन्दू धर्मावलम्बी बनकर मरना नही चाहता। क्योकि इस धर्म में बहुत सी कमियाँ व्याप्त हैं।

सवाल गंभीर था कि अगर उन्हें बौद्ध धर्म ग्रहण करना था, तो प्रचलित हीनयान या महायान मत को क्यों नहीं ग्रहण किया। अपितु एक नवीन मत नवयान क्यों आरम्भ किया। जिसमें उन्होंने बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों को अपने 22 हिन्दू विरोधी शपथ के रूप में शामिल किया। उनके मत नवयान ने दलित समाज का किस सीमा तक सशक्तिकरण किया। विशेष रूप से बनारस जैसे परिक्षेत्र में नवयान का कितना प्रभाव रहा। यह प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा रहा या फिर शहरी क्षेत्रों में, मूल बौद्धों एवं नव बौद्धों के बीच बौद्ध धर्म के प्रति उनके दृष्टिकोणों पर उनके विचार जानने, नव बौद्धों के जीवन में आए सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक परिवर्तन का अध्ययन आदि शोधार्थिनी के शोध का केन्द्र बिन्दु रहा।

बनारस जैसा हिन्दू स्थल बौद्ध धर्म के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण क्षेत्र है। फिर ऐसे शहर में बौद्धों की जनसंख्या सम्पूर्ण जनसंख्या का मात्र 0.04 प्रतिशत के लगभग है, तो इसके पीछे क्या कारण हो सकता है। जिन धार्मिक कर्मकांडों के विरुद्ध बौद्ध धर्म का उदय हुआ, वही कर्मकांड फिर से बौद्ध धर्म में शामिल हो रहे हैं, इसके पीछे क्या कारण हो सकता है। इन सभी जिज्ञासाओं से प्रेरित होकर शोधार्थिनी ने इस विषय को शोध अध्ययन हेतु चयनित किया। शोधार्थिनी ने अपने इस शोध प्रबंध के सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए महत्वपूर्ण निष्कर्ष व सुझाव

देने का प्रयत्न किया है। शोधार्थिनी आशा करती है कि यह शोध प्रबंध नव बौद्धों की बनारस में स्थिति का एवं बौद्ध धर्म में शामिल हुए धार्मिक कर्मकांडों पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी। इस क्षेत्र में अध्ययन करने वाले शोधार्थियों के लिए यह शोध कार्य सहायक सिद्ध होगा।

दिनांक :–

सुमन

आभारोक्ति

अखंड–मंडलाकारं व्याप्तम् येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने में मुझे बहुत से सुयोग्य विद्वानों व व्यक्तियों का बहुमूल्य सहयोग और स्नेह प्राप्त हुआ। जिनकी मैं सदैव आभारी रहूंगी और जिनका आभार प्रकट करना, मैं स्वयं (दायित्वाधीन) अपना नैतिक कर्तव्य समझती हूँ।

सर्वप्रथम मैं प्रस्तुत शोध–प्रबंध की शोध निर्देशिका प्रोफेसर डॉ0 शूरा दारापुरी, इतिहास विभाग, अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के निर्देशन, पर्यवेक्षण से इस शोध कार्य को पूर्ण किया हैं, के प्रति श्रद्धापूर्ण सहृदय आभार प्रकट करती हूँ। जिन्होंने यथासंभव मेरा कुशल मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही मैं, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ की इतिहास विभाग के सभी सदस्यों तथा इतिहास संकायाध्यक्ष प्रोफेसर (डॉ0) एस0 विक्टर बाबू एवं डॉ0 वी0 एम0 रवि कुमार की हृदय से आभारी हूँ। जिनके स्नेह एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार व विद्वतापूर्ण निर्देशन से यह कार्य समय से पूर्ण हो सका। मैं सहृदय इनके सहयोग की प्रशंसा करती हूँ। इसी के साथ मैं, श्री एस0 आर0 दारापुरी (सेवानिवृत पूर्व आई0जी0) को विशेष सहयोग के लिए सहृदय धन्यवाद देती हूँ।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध हेतु शीर्षक के चयन से लेकर शोध कार्य पूर्ण करने तक स्नेह व प्रेरणापूर्ण मार्गदर्शन करने में इतिहास विभाग की सुयोग्य विद्वान प्रोफेसर डॉ0 शूरा दारापुरी जी की हृदय से आभारी हूं। जिनके प्रेरणापूर्ण मार्गदर्शन से इस शोध कार्य को समयान्तर्गत पूर्ण करने में बहुमूल्य सुझाव व प्रोत्साहन मिला, जिसकी मैं आजीवन चिरऋणी रहूंगी।

मैं अपने पूज्यनीय माता श्रीमती अनुराधा त्रिपाठी एवं पिता श्री कृष्ण कुमार त्रिपाठी की सदैव कृतज्ञ रहूंगी, जिन्होंने आदर्श शिक्षा, उत्तम विचार व संस्कार दिए, जो व्यक्तिगत जीवन के उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं। जिनके आशीर्वाद के फलस्वरुप आज मैं इस शोध–प्रबन्ध को प्रस्तुत करने में सफल हुई हूँ।

मैं विशेष रूप से अपने सहपाठियों आरती, सुशील सिंह के सहयोग की आजीवन आभारी रहूंगी।

सुमन

विषय सूची

शीर्षक : Neo-Buddhist Movement : A Historical Study of Varanasi (1956-2011)

प्रमाण–पत्र, संकाय प्रमुख

घोषणा–पत्र

समर्पित

प्राक्कथन

आभार

विषय सूची

सन्दर्भग्रन्थ सूची

	पृष्ठ संख्या
अध्याय 1– भूमिका	1–11
अध्याय 2– बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जीवन परिचय एवं दर्शन	12–28
अध्याय 3– बौद्ध धर्म एवं नव बौद्ध धर्म का तुलनात्मक अध्ययन	29–49
अध्याय 4– नव बौद्ध आंदोलन के उद्‌भव का कारण (दलित चेतना– के संबंध में)	50–58
➢ सामाजिक कारण	
➢ धार्मिक कारण	
➢ आर्थिक कारण	
अध्याय 5– नव बौद्ध आंदोलन भारत में, विशेषतः बनारस के संदर्भ में	59–87
अध्याय 6– निष्कर्ष एवं सुझाव	88–96

अध्याय–1

भूमिका

भूमिका

"यो हवे् दहरो भिच्खू युज्जति बुद्ध सासने
सो मं लोकं पभासोति अभ्भा मुत्तोव चनिमा"[1]

"धर्म की सबको बहुत जरूरत है, मेरे मन से यह बात निश्चित है कि धर्म के बिना समाज जागृति नहीं हो सकता है। समता, मैत्री, बंधुभाव यह भी बातें संसार के उद्धार के लिए आवश्यक होती है, और ये बुद्ध धर्म में ही मिल सकती है। मैंने 20 वर्षों से धर्म का अध्ययन किया है। सभी धर्मों का अध्ययन करने के बाद संसार को बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेना चाहिए"[2]–

कथन बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का यह कथन उनके द्वारा बौद्ध मत स्वीकार करने के पीछे उनकी मानसिक स्थिति को प्रकट करता है, कि बौद्ध धर्म के प्रति उनके हृदय में कितना सम्मान था। वास्तव में बौद्ध धर्म को ग्रहण करने के पीछे जिम्मेदार कारकों, बौद्ध धर्म की विशेषताओं तथा बौद्ध आन्दोलन के प्रति दलितों के आकर्षण की वजहों के बारे में विचार करना इस शोध का उद्देश्य रहा।

महात्मा बुद्ध

[1] भीमाम्बेडकर शतकम् पे0 नं0 10 Editing by Dr. Priya Sen Singh
[2] द बुद्ध एंड हिज धम्म लेखक भीमराव अम्बेडकर अनुवादक – डॉ. भदन्त आनन्द कौशल्यायन

भारत की धरती का सौभाग्य है कि भारत में महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ। जिस समय उनका जन्म हुआ था, हिन्दू धर्म कर्मकाण्डों, रूढ़ियों से ग्रस्त था। बलि एवं अस्पृश्यता जैसी स्थिति ने मानवीय जीवन को अत्यंत नरकीय बना दिया था। ऐसे समय में ऐसे धर्म की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी, जिससे सभी मनुष्यों को धर्म पालन की स्वतंत्रता प्राप्त हो और उन लोगों को जो राम चरित मानस ग्रन्थ में "ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी, सकल ताड़न के अधिकारी जैसे स्वर उन्हें सामान्य मनुष्य की तरह जीने से वंचित कर रहा, को बौद्ध धर्म ने निर्वाण प्राप्ति का अवसर प्रदान किया एवं जीने का मकसद दिया। वास्तव में बौद्ध धर्म दुनिया का विश्व धर्म है, जो अपने उत्कृष्ट सिद्धान्तों एवं विचारों से न केवल जन्मस्थान पर अपनी विजय पताका फहरा रहा था, बल्कि आगे चलकर विश्व में उसने अपनी धर्म–ध्वजा फहराया और मनुष्य को मानवता, कल्याण, नैतिकता, सद्भाव जैसे विचारों से सद्मार्ग पर चलने को प्रेरित किया। तथागत बुद्ध द्वारा अपने अनुयायियों को प्रदत्त चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, दस पारमिता, पंचशील आदि दर्शनों एवं सिद्धांतों ने मानव को बिना किसी भेदभाव के मोक्ष प्राप्त करने का विकल्प दिया। जो कि उस समय (छठी शताब्दी) में दुर्लभ या हिन्दू धर्म कर्मकाण्डों से ग्रस्त होकर मानव को मानसिक शान्ति प्रदान करने में सक्षम नहीं हो पा रहा था। बुद्ध के क्रांतिकारी दर्शन द्वारा उस मानसिक सन्ताप से वह मुक्त हुआ, एवं इस बदलाव ने सामाजिक चेतना में ओज का संचार किया। जिसे धम्मयात्रा द्वारा मौर्य सम्राट अशोक ने आगे बढ़ाया एवं विदेशों में धम्म प्रचार हेतु धम्म प्रचारक भेजे। इसी कड़ी में आगे चलकर बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने अपने अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण करके, भारतीय बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके साथ ही युगों से पीड़ित, दलित, शोषित वर्ग को सम्मानपूर्वक जीने की राह दिखायी। बचपन में ही बाबा साहेब को जिस तरीके के सामाजिक तिरस्कारों का सामना करना पड़ा था, उसने उनके स्वाभिमान को ठेस पहुंचाया, और मानवीय अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु उन्हें प्रेरित किया।

रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई की 14वीं सन्तान के रूप में बालक भीम का जन्म 14 अप्रैल 1891 को महु (इंदौर जिले) में हुआ था, जबकि मूलवंश

महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले मराठी परिवार से था[3]। महार जाति से सम्बन्धित भीम को बचपन से ही छुआछूत की समस्या का सामना करना पड़ा। उनके साथ सामाजिक एवं आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था। यहाँ तक कि मेधावी भीम को शिक्षा के स्तर पर भी सामाजिक प्रतिरोधों का सामना करना पड़ा। परन्तु उन्होंने न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी उच्च शिक्षण संस्थाओं से उच्च शिक्षा ग्रहण की।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर

लेकिन उनके बालमन पर बचपन में हुए तिरस्कार ने काफी प्रभाव डाला। जैसे शैक्षिक जीवन में कक्षा से बाहर खड़ा करना, जमीन पर सबसे अलग बैठने को मजबूर करना। यही कारण है कि जब उन्हें मौका मिला तो उन्होंने उस सामाजिक बुराई के खिलाफ आवाज उठाई। संविधान में अस्पृश्यता निवारण कानून बनाकर छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी, और अन्ततः 14 अक्टूबर 1956 को दीक्षा भूमि नागपुर में 5 लाख अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म को अंगीकार किया। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने धर्म परिवर्तन क्यों किया? विषय पर बोलते हुए कहा था कि "मैं स्पष्ट शब्दों में कहना चाहता हूँ कि मनुष्य, धर्म के लिए नहीं बल्कि धर्म, मनुष्य के लिए है। अगर मनुष्यता की प्राप्ति करनी है तो धर्म परिवर्तन करो, स्वतंत्रता से जीविका उपार्जन करना चाहते हो तो धर्म परिवर्तन करो, अपने परिवार एवं कौम को सुखी बनाना चाहते है तो धर्म परिवर्तन करो।"[4]

[3] जाति का विनाश अपनाने से अनुवाद राज किशोर
[4] जाति का विनाश अपनाने से अनुवाद राज किशोर

भगवान दास का कहना है कि ''यह धर्म के इतिहास में महत्वपूर्ण घटना है। जिसकी मिसाल दुनिया में कहीं नहीं मिलती, कभी भी कहीं भी एक व्यक्ति के कहने पर पुराने रीति–रिवाज, धर्म–विश्वासों को छोड़कर लोगों ने इतनी बड़ी संख्या में एक धर्म का तत्वों की प्रमुखता को स्वीकार नहीं किया।''

धर्म परिवर्तन के बाद बाबा साहेब ने कहा था कि "आज मेरा नया जन्म हुआ है''।[5] जब वे बौद्ध धर्म ग्रहण करने जा रहे थे, तब उनसे पत्रकारों ने पूछा कि आप बौद्ध धर्म में महायान अपनायेंगे या हीनयान, तो बाबा साहेब ने जवाब दिया कि न हीनयान न महायान, क्योंकि इन दोनों में ही कुछ अंधविश्वासी तत्व हैं। इसलिए मेरा बौद्ध धर्म नवयान धर्म होगा।[6]

नवयान बौद्ध धर्म में बाबा साहेब ने अपने अनुयायियों से 22 हिन्दू धर्म विरोधी शपथ लेना अनिवार्य बनाया। जैसे– हिन्दू धर्म की विद्वेष की अवधारणा में अविश्वास, अवतारवाद का खण्डन, सामान्य हिन्दू कर्मकाण्डों–श्राद्ध, तर्पण, पिंडदान का परित्याग, गौरी–गणपति पूजा करने से मनाही, ब्रह्मणों द्वारा निष्पादित होने वाले समारोहों का बहिष्कार, मनुष्य समानता पर बल, बुद्ध के उपदेशों में विश्वास, अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण, प्राणियों के प्रति दया, चोरी, झूठ, शराब का सेवन आदि का प्रतिबंध।

वास्तव में वे ऐसा समाज निर्मित करना चाहते थे, जहाँ समानता, सद्भाव की स्थिति हो। इसलिए उन्होंने असमानता पर आधारित हिन्दू धर्म का त्याग करने और बौद्ध धर्म अपनाने से सम्बंधित सलाह दी थी। नवयानी बौद्ध अनुयायियों को नव बौद्ध इसलिए कहा जाता था, क्योंकि वे पिछले छह दशक पूर्व ही बौद्ध बने थे। यह सम्प्रदाय महायान, थेरवाद और ब्रजयान से पूर्णतः अलग है। किन्तु इनमें तीनों सम्प्रदायों में से बुद्ध के मूल सिद्धान्तों के साथ केवल विज्ञानवाद एवं तर्क शुद्ध सिद्धांत ही लिये गये। इस सम्प्रदाय में किसी भी प्रकार का अंधविश्वास या कुरीतियों का कोई स्थान नहीं है। इन्होंने बुद्ध के चार आर्य सत्यों जो कि निराशा एवं दुःख से पूर्ण थे, उसे नहीं माना। इनका मानना था कि अगर जीवन निराशापूर्ण ही है तो व्यक्ति जीवन में प्रयत्नों से आशा का संचार कैसे करेगा। बाबा साहेब का

---

[5] भगवान दास भारत में बौद्ध का पुर्नजागरण एवं समस्याये, दलित लिवरेशन टुडे, मई 1996 लखनऊ पृ. 7
[6] विकिपीडिया

मानना था कि समाज का वह वर्ग जो पहले से ही दलित, शोषित व पीड़ित है, जिसका जीवन संघर्ष से भरा है। अगर वह अपने जीवन को निराशापूर्ण एवं दुःखमय मान ले तो उसके जीवित रहने का उद्‌देश्य ही समाप्त हो जायेगा। उसे सम्मान एवं सुख की आशा ही नहीं होगी तो वह क्यों जीवन को जीने का इच्छुक होगा। क्योंकि जीवन का ध्येय उत्तरोत्तर उन्नति करना होता है। यदि व्यक्ति आशा एवं सुख की कामना न करेगा, तो ही अपनी वर्तमान परिस्थिति में संतुष्ट रहेगा तब उन्नति की ओर अग्रसर कैसे होगा? जब व्यक्ति आशा एवं कामना से भरपूर रहता है तो वह अपनी परिस्थितियों से न केवल डटकर मुकाबला करता है बल्कि वह उन परिस्थितियों से निकल भी आता है। इसलिए बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर बौद्ध धर्म के चारों आर्य सत्य में विश्वास नहीं करते थे। वह चाहते थे कि उसका अनुसरण कर बौद्ध धर्म ग्रहण करने वाला दलित समुदाय तथा अन्य वर्ग निरन्तर जीवन में आगे बढ़ने तथा जीवन को बेहतर करने की कोशिश करें। क्योंकि किसी भी प्रकार की निराशा मृत्यु सदृश्य है। वास्तव में वे नवयान के रूप में बौद्ध धर्म में श्रेष्ठ सिद्धांतों को अपनाना चाहते थे। वे विशाल बौद्ध साहित्य से एक ऐसा चयन तैयार करना चाहते थे। जिसमें जो कुछ भी हो यथासम्भव बुद्धिगम्य हो। जिसमें भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षाओं की एक पूरी रूपरेखा आ जाये। जिसमें यथासंभव पुनरूक्ति भी कम से कम हो और जो न केवल बुद्धि प्रधान मस्तिष्क को बल्कि भावना प्रधान प्रवृत्तियों को भी कल्याणमार्गी बना सकने में समर्थ हो सके।

इसलिए बाबा साहेब अम्बेडकर का कथन था कि "बौद्ध त्रिपिटक और उसकी अष्ट्क कथायें समुद्र की तरह विशाल है। उन्हें कंठस्थ कर सकना सचमुच एक बड़ी ही असाधारण बात थी"।

बाबा साहेब को त्रिपिटकों में बड़ा विश्वास था। क्योंकि उनका मानना था कि त्रिपिटकों में ही एक कसौटी विद्यमान है। जिससे किसी भी वचन के सम्बन्ध में यथार्थ निर्णय पर पहुंचने में सहायता ली जा सकती है, वह कसौटी है "भगवान बुद्ध के बारे में एक बात बड़े ही विश्वास के साथ कही जा सकती है, वे कुछ नहीं थे, यदि उनका कथन बुद्धि संगत, तर्क संगत नहीं होता, तो दूसरी बातों का यथा योग्य मूल्यांकन करते हुए यह बात कही जा सकती है कि जो बात बुद्धि संगत है, जो बात तर्क संगत है वहीं 'बुद्ध वचन' है''।

बाबा साहेब का कहना था कि ऐसी कोई भी बात जिसका सम्बंध जन कल्याण से नहीं है, ऐसी चर्चा जिसका सम्बन्ध आदमी के कल्याण से नहीं है। यही भगवान बुद्ध के ही कथन माने जाते है तो उसे बुद्ध वचन स्वीकार नहीं करना चाहिए। क्योंकि बुद्ध वचन का दृष्टिकोण मानव का कल्याण है न की मानव का नाश। इसलिए बाबा साहेब ने अपने नवयान सम्प्रदाय में उन्हीं बातों को शामिल किया। जिसे बुद्धि एवं तर्क द्वारा साबित किया जा सके। बाबा भीमराव अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को दीक्षा भूमि नागपुर में अपने पाँच लाख अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म को अंगीकार किया।

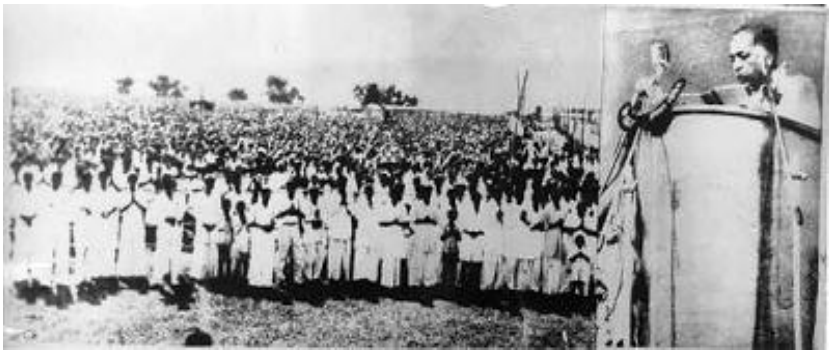

जब बाबा भीमराव अम्बेडकर ने 1936 में धर्म परिवर्तन की घोषणा की थी। तब उनकी काफी आलोचना हुई थी। यहाँ तक कि "लाहौर के जात पात तोड़कमंडल के वार्षिक अधिवेशन जिसकी वह अध्यक्षता करने वाले थे चूंकि उनके व्याख्यान अत्यंत उग्र थे, जो समिति को स्वीकार्य नहीं थे। अतः सम्मेलन ही रद्द कर दिया गया।"[7]

निश्चित रूप से यह एक अपमानजनक स्थिति थी। यह कितना सही था? इस पर विचार किया जा सकता है। समिति को पता था कि जाति और हिन्दू शास्त्रों के बारे में अम्बेडकर के क्या विचार है।[8] उन्होंने धर्म त्याग का निर्णय क्यों लिया है। अतः अम्बेडकर के व्याख्यान में अवश्य ऐसी बातें होती जो उस समय में रूढ़िवादियों को चुभती, अतः समिति ने जनता को एक ऐसे व्यक्ति के मौलिक विचारों को सुनने के अवसर से वंचित कर दिया। जिसने समाज में अपने संघर्ष के बलबूते अपने लिए एक नयी स्थिति का निर्माण किया था। उनका नवयान भी ऐसा ही मार्ग था। जो दलितों, शोषितों के मन को धीरज प्रदान कर सकता था। अतः

[7] जाति का विनाश अपनाने से अनुवाद राज किशोर
[8] तत्रैव

जब अम्बेडकर ने धर्म परिवर्तन का निर्णय लिया, तो वह हिन्दू समाज पर एक बड़ा गम्भीर संकट था। क्योंकि दलित हिन्दू समाज का निचला एवं सबसे शोषित, वंचित समाज था। उसने बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर में अपना मसीहा देखा, जो उनका सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, बाहय त्राश से मुक्ति दिलाने आया था। यहाँ तक कि उन्होंने अपने राजनीतिक आन्दोलन का केन्द्र बिंदु दलित उत्थान रखा। उनका मानना था कि राजनीतिक अधिकार के बिना सामाजिक, आर्थिक उत्थान नहीं हो सकता। इसलिए वे बराबर अंग्रेजी प्रशासकों से मिलकर दलितों के उचित प्रतिनिधित्व का अधिकार दिये जाने की वकालत करते रहे। दलितों के लिए पृथक निर्वाचन की मांग करके उन्होंने हिन्दू समाज में उथल–पुथल पैदा कर दी। स्वयं महात्मा गांधी को आगे आना पड़ा और उनके एवं बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के बीच समझौता हुआ। वे केन्द्रिय–विधायिका एवं प्रान्तीय विधायिका में दलितों का बेहतर प्रतिनिधित्व लेकर ही रहे। जो दलित उत्थान की दृष्टिकोण से बेहतर अवसर था। ऐसी स्थितियों ने उन्हें दलितों का नायक बना दिया। जब उन्होंने धर्म परिवर्तन का निर्णय लिया, तो उनके अनुयायियों की बड़ी संख्या भी धर्म परिवर्तन करने को तैयार हो गई। सवाल यह उठता है कि वे लोग जो अम्बेडकर के साथ धर्म परिवर्तन कर रहे थे। क्या वे केवल अम्बेडकर से प्रभावित होकर तो नहीं कर रहे थे? वास्तव में उनका जीवन भी सामाजिक विषमताओं से भरा हुआ था। वे भी धार्मिक निषेधों, सामाजिक असमानताओं से मुक्ति चाहते थे। वे भी ऐसा धर्म चाहते थे, जो उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखाए, जिसकी नजरों में वे मनुष्य समझे जायें, इसलिए उन्होनें बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की। उनके द्वारा आरम्भ किया गया नवयान बौद्ध धर्म का एक सम्प्रदाय है, जो बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर द्वारा ही निर्मित है। नवयान का अर्थ है नया मार्ग या शुद्ध मार्ग। सवाल यह उठता है कि क्या नवयान बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद दलितों के जीवन में परिवर्तन आया कि नहीं, और यदि आया तो किस तरह का ? वास्तव में क्या नवयान, बौद्ध धर्म के अन्य सम्प्रदायों जैसे महायान, हीनयान, ब्रजयान, थेरवाद आदि से अलग था ? वे कौन से सिद्धांत थे, जो नवयान यानि अम्बेडकर द्वारा परिभाषित बौद्ध धर्म ने नहीं स्वीकार किये और अम्बेडकर के बताये नवयान मार्ग पर चलने वाले दलित वास्तव में उन दलितों से जो हिन्दू धर्म को मानते थे ? वे कितना अधिक सम्मानजनक

स्थिति को प्राप्त कर पाए ? उनकी सामाजिक स्थिति में क्या बदलाव आया। उनकी धार्मिक असमानता किस हद तक दूर हुई ? उसका, उनके आर्थिक जीवन पर कितना प्रभाव पड़ा ? अगर इन बातों पर हम विचार करेंगें तो पायेंगे कि निश्चित रूप से काफी प्रभाव पड़ा। उनके आत्म विश्वास में वृद्धि हुई, उन्हें अपनी सामाजिक कठिनाइयों से निपटने में बौद्ध धर्म ने काफी मदद किया।

2011 की जनगणना के मुताबिक देश में बौद्धों की जनसंख्या 84 लाख से अधिक है। इसमें से 87 % (73 लाख)[9] लोग दलित समुदाय से धर्मान्तरित नव बौद्ध है। जो निश्चित रूप से एक काफी बड़ा ऑकड़ा है। यहाँ यह भी ध्यान देने वाली बात है कि ऐसे दलितों की संख्या भी काफी है, जो बौद्ध धर्मान्तरित तो नहीं है और न ही कहीं इस बात का साक्ष्य है कि वे बौद्ध हैं, परन्तु धर्म से वे हिन्दू है। परन्तु उनकी आस्था, विश्वास बौद्ध धर्म में है। वे बौद्ध सिद्धान्तों एवं मान्यताओं में विश्वास रखते है। सरकारी दस्तावेजों में वे हिन्दू है, तो निश्चित रूप से सवाल उठता है कि ऐसा क्यों? कहीं न कहीं इनके पीछे आरक्षण का लाभ लेने की वजह जिम्मेदार प्रतीत होती है। नव बौद्ध का लिंगानुपात भी दलित जातियों की अपेक्षा काफी ज्यादा है। 1000/953 इसमें महिलाओं की स्थिति[10] काफी बेहतर है। दलित महिलाओं की अपेक्षा काफी बेहतर है। ऐसा देखा गया है कि दलित महिलाएं आर्थिक स्तर पर नव बौद्ध महिलाओं से काफी पिछड़ी है। खेतीबारी, मजदूरी ही उनके आर्थिक आत्मनिर्भरता के उपाय हैं। जबकि नव बौद्ध धर्म में महिलाएं न केवल खेतीबारी, व्यवसाय बल्कि शिक्षा क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थिति में है। 2011 की जनगणना के आंकडे बताते है कि भारत में महिला साक्षरता 72.7% है, वहीं दलित महिला की साक्षरता 54.70 प्रतिशत है इससे इनके बीच शिक्षा का स्तर काफी बेहतर है, जो कि निःसन्देह उल्लेखनीय प्रगति है।

बनारस जैसे महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल पर अध्ययन के दौरान वहाँ दलितों से नव बौद्ध बने लोगों के जीवन में आये बदलाव को काफी करीब से देखने का अवसर मिला। किस तरह नव बौद्ध बने दलितों में एक मानसिक संतुष्टी, राजनीतिक चेतना, सामाजिक बदलाव का प्रसार हुआ है। यहाँ तक कि वहाँ की राजनीति पर

[9] जनसंख्या एवं नगरीकरण 2011
[10] तत्रैव

इन नव बौद्धों का असर दिखायी पड़ता है। इनकी मांगों पर ध्यान दिया जाने लगा है। इस सामाजिक एकता, सुरक्षा का असर उनके सामाजिक, आर्थिक, व राजनीतिक वर्चस्व वृद्धि में सहायक हुआ है। वह हिन्दु समाज जो इन्हें सामाजिक रूप से अस्पृश्य समझकर इनका शोषण, दोहन करता था। अब वे अपनी सोच बदलने पर और उनके साथ तथा दलितों के साथ भी अच्छा व्यवहार करने को बाध्य हुए हैं।

शोध की प्रेरणा

हाल ही में बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर हुए हिंसात्मक आंदोलन ने एक बार फिर लोगों का ध्यान खींचा। इससे पहले भी जगह–जगह पर उदाहरण के लिए उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में 2015 में दलितों के 100 परिवारों ने एक साथ धर्मांतरण किया, तो निश्चित रूप से सवाल उभरता है क्यों?

चूंकि बनारस बौद्ध तीर्थ स्थलों में महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। अतः ऐसी जगह पर नव बौद्ध आंदोलन की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। इसी से प्रेरित होकर मैंने अपने अध्ययन का केंद्र बिंदु बनाया है।

परिकल्पना

1. बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर को अपने सामाजिक जीवन में जिन अवरोधो ने उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए विवश किया, बौद्ध धर्म अपनाने के बाद वह उन समस्त प्रतिरोधों से निपटने में कामयाब रहे।
2. दलितो के बौद्ध धर्म अपनाने की मुख्य वजह बौद्ध धर्म की विशेषतायें थी, जिनको बाबा साहेब ने स्वीकार किया था।
3. नव बौद्ध दलित एवं गैर बौद्ध दलितो में बाबासाहेब को लेकर मतभिन्नता/मतभेद हैं।

शोध का उद्देश्य

नव बौद्ध बने दलितों की स्थिति का अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य रहा। विशेषतः बनारस के संदर्भ में।

1. लिंग अनुपात क्या है,
2. साक्षरता की स्थिति क्या है,
3. नव बौद्ध बनने के पीछे कौन सा कारण ज्यादा प्रभावी हैं,

वास्तव में नव बौद्ध आंदोलन बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के विचारों एवं सिद्धांतों पर चलकर किस सीमा तक अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रहा। इन समस्त तथ्यों की खोज करना ही इस अनुसंधान का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

शोध की पद्धति

प्रस्तुत शोध कार्य की मुख्य पद्धति में सर्वेक्षणात्मक, विवेचनात्मक तथा अवलोकनात्मक एवं साक्षात्कार विधाओं का उपयोग हैं। जिसके तहत अंतर्गत बनारस क्षेत्र का भ्रमण व अवलोकन करके सामग्री एकत्रित किया जाएगा। जिसमे प्राथमिक एवं द्वितीयक आकडें, शोध रिपोर्ट, ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकायें इत्यादि सम्मिलित होंगे।

शोध का महत्व

इस शोध का महत्व इसलिए बढ़ जाता है, क्योंकि इस क्षेत्र में नव बौद्ध आंदोलन पर बहुत कम या नगण्य शोध हुए है, इस कारण लोगों को बनारस में नव बौद्ध आंदोलन के प्रभाव को जानने का स्त्रोत कम है। अतः आशा है कि इस शोध कार्य से इस क्षेत्र में नए तथ्यों को उद्घाटित किया जा सकेगा। जो कि भविष्य में इस क्षेत्र में कार्य करने वालों के लिए महत्वपूर्ण सामग्री साबित हो सकें और नव बौद्ध आंदोलन में बनारस का महत्व रेखांकित हो सके।

दलित, बौद्ध धर्म की वजह से या अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म की ओर तेजी से आकर्षित हुए, जानने की कोशिश होगी।

चूंकि बनारस में सारनाथ, जो कि बौद्ध धर्म का एक बड़ा तीर्थ स्थल है। ऐसे में बनारस में नव बौद्ध आंदोलन ने किस सीमा तक वहां की जनता को प्रभावित किया।

शोध अध्याय की रूपरेखा

अध्याय 1– भूमिका

अध्याय 2– बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जीवन परिचय एवं दर्शन

इस अध्याय के अंतर्गत बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जीवन परिचय एवं बाबा साहेब के बौद्व दर्शन को वर्णित किया गया है।

अध्याय 3– बौद्ध धर्म एवं नव बौद्ध धर्म का तुलनात्मक अध्ययन

इस अध्याय के अंतर्गत बौद्ध धर्म एवं नव बौद्ध धर्म का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्याय 4– नव बौद्ध आंदोलन के उद्भव का कारण (दलित चेतना के संबंध में)

- सामाजिक कारण
- धार्मिक कारण
- आर्थिक कारण

अध्याय 5– नव बौद्ध आंदोलन भारत में, विशेषतः बनारस के संदर्भ में

इस अध्याय के अंतर्गत नव बौद्ध आंदोलन भारत में, विशेषतः बनारस के संदर्भ में को स्पष्ट किया गया है।

अध्याय 6– निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्याय के अंतर्गत निष्कर्ष एवं सुझाव प्रेषित है, तथा परिकल्पना का परीक्षण निष्कर्षित है।

☆☆☆

अध्याय–2

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर का जीवन परिचय एवं दर्शन

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जीवन परिचय एवं दर्शन

जीवन परिचय

भीमराव रामजी अम्बेडकर, बाबा साहेब अम्बेडकर नाम से लोकप्रिय, भारतीय संविधान शिल्पी, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री समाज सुधारक[1] राजनीतिज्ञ थे। स्वतंत्र भारत के प्रथम अछूत कानून एवं न्यायमंत्री थे। दलित बौद्ध आन्दोलन को प्रेरित करने में तथा अछूतों से किये जाने वाले सामाजिक भेदभाव के खिलाफ उन्होंने न केवल जनमत को अभियान चलाकर जागरूक किया। बल्कि स्वंत्रत भारत के संविधान निर्माण के समय संविधान में कठोर प्रावधान करके अस्पृश्यता जैसी बुराई को सामाप्त करने की दायित्वपूर्ण जिम्मेदारी भी निभाई। उल्लेखनीय है कि उन्होंने दलित वर्ग का ही नहीं, बल्कि सभी वंचित वर्गों के लिए चाहे वो श्रमिक, किसान या महिला थी, सभी के अधिकारों का समर्थन भी किया। वे भारतीय संविधान एवं गणराज्य के निर्माता थे।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में मध्य प्रदेश के महु (इंदौर जिले) में हुआ था। जो उस समय ब्रिटिश भारत का हिस्सा था। उसे मध्यप्रांत कहा जाता था। इनके पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल और माता भीमाबाई[2] थी। ये मराठा मूल के अस्पृश्य जाति से थे। जो महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले में आंवडवे गाँव से सम्बन्धित थे। चूँकि महार जाति से थे, जिसे हिन्दू समाज में अछूत माना जाता था। सामाजिक स्तर पर इनके साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता था। जिससे न केवल सामाजिक परेशानियों का सामना करना पड़ता, बल्कि आर्थिक परेशानियों का सामना भी करना पड़ता था।[3]

जहाँ तक परिवारिक स्थिति की बात थी, तो इनके पिता भारतीय सेना की महू छावनी में सेवारत थे। वे काफी बुद्धिमान व्यक्ति थे, उन्हें मराठी, हिन्दी व अंग्रेजी की जानकारी थी।

---

[1] *B.R. Ambedkar's Anniversary*

[2] Ambedkar and Untouchabilty : Fighting he Indian caste System Newyork : Columbia university press Page 2 ISBN 0-231-1302-1

[3] "Mhar" Encyclopedia Britannica. Britannica.com मूल से 30 नवम्बर 2018 को पुरालोवित

बालक भीम अपने जब छोटे थे, तभी से ही वे सामाजिक भेदभाव से परिचित होते रहे और यह भेदभाव उनके मन में समाज के प्रति रोष उत्पन्न कर देता था। भीम पढ़ने में कुशाग्र बुद्धि के थे। किन्तु छुआ–छूत के कारण उन्हें अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। जब भीम छोटे थे, तभी उनकी माता भीमाबाई सकपाल का देहावसान हो गया। अतः छोटे बच्चों के पालन पोषण के लिए उनके पिता ने 1898 में जिजाबाई से पुर्नविवाह किया।

रामजी सकपाल ने सतारा के गर्वनमेंट हाईस्कूल में भीम का नाम भीमा राम जी अंबावडेकर दर्ज कराया। आंवडवे उनके गाँव का नाम था। क्योंकि कोकणी प्रांत के लोग अपने गाँव का नाम अपने नाम के साथ जोड़ते थे। वे इसे केवल परम्परा नहीं बल्कि सम्मान समझते थे। बाद में शिक्षक महादेव अम्बेडकर ने, जो कि अम्बेडकर से बहुत स्नेह करते थे, उनको अपना नाम देकर विद्यालय के अभिलेखों में अम्बेडकर नाम लिखवा दिया।

अम्बेडकर कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। इनका शैक्षिक जीवन का आरम्भ 7 नवम्बर 1900 में हुआ था। यह अछूतो में अंग्रेजी माध्यम से पठने वाले तथा उच्च शिक्षा प्राप्त पहले व्यक्ति थे। उन्होंने माध्यमिक शिक्षा मुम्बई में एल्फिस्टोन रोड पर स्थित गवन्मेंट हाईस्कूल में ग्रहण किया। वे अपने समुदाय के पहले व्यक्ति थे, जो अंग्रेजी की शिक्षा ग्रहण किये। 1912 में उन्होंने राजनीतिक विज्ञान एवं अर्थशास्त्र में स्नातक किया। बाद में उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यूयार्क शहर में स्थित कोलम्बिया विश्वविद्यालय से परास्नातक की शिक्षा प्राप्त किया। इस कार्य में बड़ौदा रियासत ने 11.50 डालर प्रति वर्ष इन्हें छात्रवृत्ति प्रदान की। बाद में इन्होंने प्राचीन भारतीय वाणिज्य पर शोध प्रस्तुत किया। ये जान देवी और लोकतंत्र पर उनके काम से बहुत प्रभावित थे[4]। बाद में 1916 में उन्होंने दूसरी कला स्नातकोत्तर उपाधि–शोधकार्य नेशनल डिबिडेंट ऑफ इण्डिया–ए हिस्टोरिक एण्ड एनालिटिकल स्टडी हेतु प्राप्त की। बाद में 1916 में अर्थशास्त्र में PHD की उपाधि ''इवोल्यूशन ऑफ प्रोविन्शिअल फिनान्स इन ब्रिटिश इण्डिया के लिए (1927) प्राप्त किये। कुछ समय बाद उन्होंने भारत में जातियाँ, उनकी प्रणाली, उत्पत्ति और विकास नामक

[4] जाति का विनाश अपनाने से अनुवाद राज किशोर पृ. 121

शोध पत्र प्रस्तुत किया।[5] हालांकि उन्हें उस दौरान काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा। जून 1917 में बडौदा रियासत ने अम्बेडकर की छात्रवृत्ति रोक दी गयी। जिसकी वजह से उन्हें भारत वापस आना पड़ा। उन्होंने बडौदा रियासत में सेना सचिव के रूप में काम किया। किन्तु भेद–भाव से निराश होकर उन्होंने उन्होंने मुम्बई के सिडनेम कालेज आफ कामर्स एडं इकोनामिक्स में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रोफेसर के रूप में नौकरी कर ली। 1920 में उन्होने पुनः इंग्लैण्ड जाकर विज्ञान में एम0 एस0 सी0 की उपाधि प्राप्त की। 1922 में उन्हें वैरिस्टर एटलाज की उपाधि प्राप्त हुई। इस तरह देखा जाय तो उन्होंने कठिनाईयों के बावजूद कड़ी मेहनत से उच्च शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने उस समय के महत्वपूर्ण विश्वविविद्यालयों में पढ़ाई की (जैसे–वान विश्वविद्यालय, जर्मनी), कोलम्बिया विश्वविद्यालय तथा उस्मानिया विश्वविद्यालय)। जहां तक व्यक्तिगत जीवन का सवाल है, जब वे 14 वर्ष के थे, तभी इनका विवाह रमाबाई अम्बेडकर से हो गया। जो 9 वर्ष की अबोध बालिका थी। इनके साथ 1906 में विवाह हुआ था। इनसे बाबा भीमराव अम्बेडकर को 5 सन्तान हुई–चार पुत्र यशंवत, रमेश, गंगाधर, राजरत्न और एक पुत्री इन्दू यशवंत को छोडकर इनके चारों सन्तानों की मृत्यु हो गई। रामबाई अम्बेडकर की मृत्यु 1935 में हो गई। इनके बाद बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने डॉ0 सविता अम्बेडकर से 1948 में विवाह किया। जिनकी मृत्यु 2003 में हुई। हालांकि डॉ0 सविता अम्बेडकर का मूल नाम डॉ0 शारदा कबीर था।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद बाबा साहेब ने स्वतत्रंता आदोलन में भाग लेना आरम्भ किया। जिसका उद्देश्य दलित हितों की रक्षा करना था। 1920 में मांटग्यू चेम्सफोर्ड कमेटी रिपोर्ट आनी थी। सभी वर्गो से राय ली जा रही थी। चूँकि बाबा साहेब उस समय दलितवर्ग के सर्वाधिक शिक्षित व्यक्ति थे, अतः ब्रिटिश सरकार ने उन्हें भी अपनी बात रखने के लिए आयोग के समक्ष बुलाया। यही वह समय था, जब उन्होंने पहली बार दलितों, अछूतों के लिए अलग से मताधिकार की मांग की और कारण बताया कि अछूतों की आबादी अधिक होने के बावजूद सही प्रतिनिधित्व नहीं मिला है। उनका मानना था कि स्वशासन का अधिकार केवल सवर्णों का ही नहीं, बल्कि दलितों का भी जन्मसिद्ध अधिकार है। बाद में उन्होंने

[5] विकिपीडिया

अनेक पत्रिकाओं के माध्यम से दलितों की पीड़ा को मुखारित किया। जैसे मूकनायक पत्रिका[6] उनका मानना था कि कोई भी पत्रिका, दलितों की भावना का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। जो पत्रिकाएं है वे सवर्णों के द्वारा सम्पादित एवं सवर्ण भावनाओं का ही उद्गार करती है। ज्ञान एवं शक्ति के बिना पीड़ित, शोषित, आछूत उन्नति नहीं कर सकते है। यहाँ तक कि 1920 में शाहू जी महाराजा की अध्यक्षता में हुए दलित सम्मेलन में बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने भागीदारी की और वहाँ समाज की समस्याओं को मुखरित करते हुए कहा कि कोई भी समिति, संगठन शोषितो, दलितों का कल्याण नहीं कर सकती है जब तक कि दलित स्वयं जागरूक न होकर अपने अधिकारों के लिए एकजुट नही होंगे।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर पर अनेक विचारों का प्रभाव पड़ा था। बचपन से ही अत्यंत मेधावी डॉ0 अम्बेडकर पर गौतम बुद्ध, कबीर, ज्योतिबा फूले, महादेव गोविन्द रानाडे, जैसे सुधारको का काफी प्रभाव रहा। जहाँ गौतम बुद्ध द्वारा मानवीय गरिमा को बढ़ाने के लिए, उनकी समस्याओं के समाप्ति के लिए बौद्ध धर्म में उन्होनें शोषितो, पीड़ितों को आश्रय दिया। वही कबीर दास ने निर्गुण भक्ति द्वारा भक्तिमार्ग दिखाया। ज्योतिबा फूले ने समाज के दलितों, शोषितों के लिए उनको संघर्ष करने की प्रेरणा दिया। यही कारण है कि बाबा साहेब ने वैचारिक पृष्ठभूमि पर शोषितों, अछूतों के संघर्ष की लड़ाई लड़ी।[7]

यहाँ तक कि ब्रिटिश सरकार के साथ गोलमेज सम्मेलनों के दौरान उन्होंने दलित अधिकारों की मांग किया। उनका मानना था कि जब तक राजनीतिक भागीदारी दलितों की नहीं होगी, तब तक उनका सामाजिक सुधार भी सशक्त नहीं होगा। दलितों का अपमान होता रहेगा, उनके अधिकारों का हनन भी। अतः आवश्यक है कि दलितों को राजनीतिक अधिकार दिये जाये। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने दलितों को मैक्डोनाल्ड अवार्ड के अनुपात में धारा सभाओं में दलितों के लिए सीटे आरक्षित रखने और पृथक मताधिकार की मांग ही नहीं किया, बल्कि जोरदार वकालत की और कहा कि यह वर्ग युगों से दलित एवं शोषित है, अतः अब समय आ गया है कि उन्हें अधिकार दिये जाये। उनके साथ मानवीय सम्बंध

[6] विकिपीडिया
[7] मोहन सिंह डॉ0 भीमराव अम्बेडकर व्यक्तित्व के कुछ पहलू

स्थापित किया जाय। उनका मानना था कि यदि होमरूल लागू भी हो जाय तो अगर दलितों को उच्च वर्गो की दासता से मुक्ति ही ना मिले तो ऐसे होमरूल का कोई फायदा नहीं। उसी समय मुस्लिम लीग एवं कांग्रेस में वयस्क मताधिकार तथा साम्प्रदायिक आधार पर मतदान के सम्बंध में समझौता हुआ। जिसे कांग्रेस लीग समझौता कहा गया। डॉ0 अम्बेडकर ने इसकी निन्दा की और कहा ''हिन्दू और मुस्लिम दोनों वर्गों से चुने हुए प्रतिनिधियों की शक्ति स्रोत उन वर्गो के समूह और बड़े लोग है। इन दोनों संगठनों का अपने वर्ग के कमजोर हिस्सों से न तो लगाव है और न ही वे उनसे राजनीतिक शक्ति प्राप्त करते है। इसलिए उनका निरन्तर जोर था कि सवर्ण हिन्दू अपनी दलितों के प्रति मानसिकता में जवर्दस्त बदलाव लाये''[8]। लेकिन उनकी मांग का कांग्रेस द्वारा विरोध किया गया। कांग्रेस का मानना था कि पृथक मताधिकार दलितो के लिए जरूरी नहीं है। बल्कि वयस्क मताधिकार द्वारा ही उनकी समस्या समाप्त हो जायेगी। क्योकि उनका मानना था कि अभी दलित शोषित इस योग्य नहीं है। उनमें निर्वाचित होने वाले लोगों की कमी है।

डॉ0 अम्बेडकर के दलित सम्बंधी विचार जिसे आगे चलकर अम्बेडकर वाद कहा गया, वास्तव में स्वतन्त्रता, समानता, भाईचारा, बौद्ध धर्म, विज्ञानवाद, मानवतावाद, सत्य, अहिंसा आदि के विषय अम्बेडकर वाद के प्रमुख सिद्धांत है। छुआ–छूत को नष्ट करवा दलितों में सामाजिक सुधार, भारत में बौद्ध धर्म का प्रचार एंव प्रसार, भारतीय संविधान में निहित अधिकारों तथा मौलिक अधिकारों की रक्षा करना एक नैतिक तथा जाति मुक्त समाज की रचना और भारत देश की प्रगति उनका प्रमुख उद्देश्य था[9]। जब देश आजाद हुआ तो बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर को संविधान निर्माण का कठिन कार्य सौपा गया। जिसे उन्होंने बड़ी लगन एवं परिश्रम से सम्पन्न किया। उन्होंने संविधान में मानवीय गरिमा को सुरक्षित रखने के लिए जहाँ मौलिक अधिकारों की बात की, वही नागरिकों को देश के लिए जिम्मेदार बनाने के लिए और राज्य द्वारा उनके हितों का ख्याल रखने के लिए नीति निदेशक तत्वों को संविधान में समाहित किया। [10]

---

[8] मोहन सिह– डॉ0 भीमराव अम्बेडकर–व्यक्तित्व के कुछ पहलु
[9] विकीपीडिया
[10] मोहन सिंह

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने न केवल राजनैतिक, सामाजिक सुधारों की बात रखी, बल्कि उन्होंने अपने लेखन में भी इस संवेदनशील मुद्दे को उठाया। उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना किया। उन्हें तकरीबन 10 से अधिक भाषाओं का ज्ञान था। जैसे हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, पालि, संस्कृत, जर्मन, फारसी, फ्रेच, कन्नड़ और बंगाली जैसी भाषाए। उन्होंने विदेशों में अपना लम्बा समय शिक्षा में बिताया था। अतः वहाँ के रहन–सहन ने उन्हें विशेष रूप से प्रभावित किया। इसलिए उनका मानना था कि केवल पूजा–पाठ के आन्दोलनों से दलितों, शोषितो का उद्वार नहीं होने वाला है। यहाँ तक कि उन्होंने गाँधी जी के हरिजन आंदोलन का भी विरोध किया और कहा कि इससे कुछ नहीं होने वाला है। अछूत इस स्थिति में भी उच्च वर्णों के दास ही बने रहेंगे। उन्होंने महात्मा गाँधी से कहा कि अगर वास्तव में आप हरिजनों का उत्थान चाहते हो तो उनकी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक अधिकारों की बात करें। उनके उत्थान के लिए कार्य करे। तभी हरिजन सुखी एवं सम्मानित जीवन जी सकते है। जब गॉधी जी ने डिप्रेस्ड क्लास लीग का नाम बदल कर हरिजन सेवक संघ रख दिया। तब ये बात उनको बुरी लगी। उन लोगों की राय में छुआ–छुत की समाप्ति एक मंच है, कार्यक्रम नहीं। अम्बेडकर ने कहा ''यह कांग्रेस का मंच है जो अछूतों को अपने झण्डे तले लाने के लिए[11]'' उनका कहना था कि अछूत हिन्दुओं के तत्व नहीं है, बल्कि भारत की राष्ट्रीय व्यवस्था में अलग तत्व है जैसे मुसलमान। इसलिए धर्म परिवर्तन को अपना सबसे सही सलाह माना और कहा कि ''मैं स्वीकार करता हूँ और बुद्ध की शिक्षाओं का पालन करूगां। मैं हीनयान और महायान दो धार्मिक आदेशों की अलग–अलग राय से मेरे लोगों को दूर रखूंगा। हमारा बौद्ध धर्म एक नया बौद्ध धर्म नवयान है।''[12]

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, शाम होटल नागपुर 13 अक्टूबर 1956''[13] यह कथन बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के बौद्ध धर्म ग्रहण करने की पूर्व संध्या पर। वास्तव में बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का धर्म के सम्बंध में मानना था कि –''धर्म की सबकों बहुत जरूरत है। मेरे मत से यह बात निश्चित है कि धर्म के बिना समाज

[11] मोहन सिंह डॉ. भीमराव अम्बेडकर व्यक्तित्व के
[12] www.navayan.com
[13] विकिपीडिया

जागृत नहीं हो सकता है। समता, मैत्री, बंधुभाव यह भी बातें संसार के उद्धार के लिए आवश्यक होती है और यह बुद्ध धर्म में ही मिल सकता है। मैने 20 वर्षो से बुद्ध धर्म का अध्ययन कर के अनुभव किया कि हमे बुद्ध धर्म स्वीकार कर लेना चाहिए, ऐसा मेरा मत है''[14] कथन– बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जन्म हिन्दू धर्म के दलित वर्ग में हुआ था। उनका जीवन हिन्दू धर्म में छुआछूत (अस्पृश्यता) से अपने अपमान से पीड़ित था। वे अपने और अपने जैसे लोगों के लिए समाज में मानवता पूर्ण व्यवहार प्राप्त करना चाहते थे। समाज में सम्मान पाने के इच्छुक थे।

अम्बेडकर की दृष्टिकोण में धर्म, विश्वास, पाखण्ड, अंधविश्वास और मानव आपसी भेदभाव से ऊपर था। इसलिए वह मानवीय गतिविधियों की तीव्रता में सहयोगी होने वाले नैतिक आचरण को ही धर्म की संज्ञा देते थे।[15]

सभी धर्मो का निकट से अध्ययन करने के कारण हिन्दू धर्म की कुरितियों की वजह से उनकी हिन्दू धर्म में आस्था समाप्त हो गई। उनका मानना था कि वह धर्म कदापि धर्म नही है, जो दो मनुष्यों में ही भेदभाव करें, उन्हें पशुओं एवं अपराधी से भी बदतर समझें और उन्हे नरकीय जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर करें। उनका मानना था कि धर्म अध्यात्मिक शान्ति है। जो व्यक्ति और काल से ऊपर उठकर निरन्तर भाव से सभी पर, सभी नस्लो एवं देशों में शाश्वत रूप मे एक जैसा रमा रहे। धर्म नियमों पर नही, सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए।''[16]

यहॉ तक कि वह हिन्दू धर्म की पुस्तक गीता के सम्बन्ध में उनका कथन था कि ''यह न तो कर्म की पुस्तक है, और न ही दर्शन की कोई पुस्तक है। यह धर्म के कुछ सिंद्धातों का दार्शनिक आधार पर बचाव करने का एक प्रयास है।''[17]

हिन्दुओं के उत्पीड़न से मुक्ति के लिए ही वे बार–बार पृथक निर्वाचन के अधिकार की मांग करते रहे। यहॉ तक कि 1935 में नासिक महार सम्मेलन में उत्तेजक भाषण देते हुए अम्बेडकर ने कहा कि ''आप लोगों को जानकार आश्चर्य होगा कि मैं धर्म परिवर्तन करने जा रहा हूँ। सभी सुने, मैं हिन्दू हूँ और हिन्दू

---

[14] –विकिपीडिया
[15] डा0 भीम राव अम्बेडकर व्यक्तित्व के कुछ पहलू'', मोहन सिंह पृष्ठ सं0 135
[16] डा0 भीम राव अम्बेडकर एक व्यक्तित्व के कुछ पहलू'' मोहन सिंह पृष्ठ 135
[17] डा0 अम्बेडकर राइटिंग एण्ड स्पीचेज वाल्यूम 3 पृष्ठ 36

रहूँगा। मैं हिन्दू धर्म में पैदा हुआ, लेकिन हिन्दू धर्म में मरना नही चाहता। इस धर्म से खराब दुनिया में कोई धर्म नही है। इसलिए इसे त्याग दो। इस धर्म में लोग पशुओं से भी गये–गुजरे है। सभी धर्मो में लोग अच्छी तरह रहते है। लेकिन इस धर्म में अछूत समाज से बाहर है। स्वतंन्त्रता, समानता प्राप्त करने का एक ही रास्ता है धर्म परिवर्तन। यह सम्मेलन पूरे देश को बतायेगा कि महार जाति के लोग धर्म परिवर्तन के लिए तैयार है। महार को चाहिए कि हिन्दू त्यवहारों को मनाना बन्द करे। हिन्दू देवी–देवताओं की पूजा भी बन्द करें। मंदिरों में भी न जाये। जहाँ सम्मान न हो, उस धर्म को सदा के लिए छोड़ दे।''[18]

अम्बेडकर का कथन था कि ''ब्राह्मण धर्म परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढालता था। वह केवल समानता की कल्पना को ही स्वीकार नही कर पाता था।''[19]

अम्बेडकर के इन कथनों से उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक समाज में भूचाल आ गया। हिन्दू समाज के इस तरह विखंडित होने की संभावना से ही हिन्दू नेता अवाक् रह गये। महात्मा गाँधी को बड़ा सदमा लगा। उन्होनें उनके इस कदम को दुर्भाग्य पूर्ण माना। महात्मा गाँधी का मानना था कि धर्म कोई त्याग की वस्तु नही होती है। बल्कि अगर धर्म मे कमी है तो उसके सुधार के लिए कदम उठाना चाहिए। उन्होने आगे कहा, ''धर्म एक मकान या अंगरखे की तरह नही है कि जब मर्जी हो बदला जा सके। यह शरीर से ज्यादा, आत्मा का अभिन्न अंग है। धर्म एक ऐसा बंधन है जो आदमी को ईश्वर से जोड़ता है। शरीर के नष्ट हो जाने के बाद भी आत्मा से जुड़ा रहता है। यदि अम्बेडकर की ईश्वर में आस्था हो तो मैं उनसे कहूँगा कि वे अपने क्रोध को शान्त करें। अपनी स्थिति पर पुनर्विचार करें। अपने पूर्वजों के धर्म पर आस्थाहीन अनुयायियों की कमजोरी के आधार पर नही कर्म, गुणों के आधार पर पुनर्विचार करें।''[20]

लेकिन गाँधी जी की इन बातों का प्रभाव अम्बेडकर पर नही पड़ा। वह अपने जीवन के कटु अनुभव से यह सीख चुके थे कि अगर वह धर्म नही भी बदलते है तो भी हिन्दू समाज कोशिश करे तो भी इतनी जल्दी कोई सामाजिक व्यवहार बदलने वाला नही है। यदि अगर बदल भी जाये तब भी समाज अस्पृश्यों, दलितों

---

[18] बुद्ध एण्ड धम्म–बाबा भीव राव अम्बेडकर–पृष्ठ

[20] दि क्लेल्टेड वर्क्स आफ महात्मा गॉधी खण्ड 62–64–65

के साथ समानता का व्यवहार नही करेगा। हालाँकि गाँधी जी लगातार कोशिश कर रहे थे कि हिन्दू अस्पृश्यता को समाज से खत्म करने के लिए समाज के सम्मानित लोगों को आगे आना चाहिए। यही कारण है कि वे पटेल को हिन्दू अस्पृश्यता समाप्त करने के लिए दुष्प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया करते थे। परन्तु भीमराव अम्बेडकर, गाँधी जी के विचारों को खोखली आदर्शवादिता मानते थे। इसलिए उनकी किसी अपील का अम्बेडकर पर कोई प्रभाव नही पड़ता था। यद्यपि अम्बेडकर गाँधी जी की इस विचार से मतैव्य रखते थे कि ''धर्म जरुरी है'' लेकिन इस बात से सहमत नही थे कि जब पूर्वजों का धर्म उनके धर्म की कल्पना के विपरीत हो तब भी उन्हें इस धर्म से चिपके रहना चाहिए। धर्म का तात्विक आधार जो भी हो नैतिक सिद्धांत और सामाजिक व्यवहार ही उसकी सही नींव होते है। वे हिन्दू धर्म की मनुवादी सोच से बहुत निराश थे। वे इस मत से असहमत थे कि ''ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, सकल, ताड़ना के अधिकारी''। अम्बेडकर का कहना था कि मैं पूरी तरह निराश हो चुका हूँ कि हिन्दू समाज किसी और बेहतर नींव पर अपना पुननिर्माण कर सकती है।

बाबा साहेब का कहना था कि ''यदि नई दुनिया पुरानी दुनिया से भिन्न है तो नई दुनिया को पुरानी दुनिया से अधिक धर्म की जरूरत है, ''बुद्ध और उनके धम्म का भविष्य'' लेख में यह बात कही थी। वे वास्तव में बहुत पहले ही धर्म त्याग का मन बना चुके थे, जिसे वे बराबर कहते थे। जिस धर्म में उन्होने पहली सांस लिया है वे उस धर्म में अपना प्राण त्याग नही करेंगे।

उन्होंने भारत की सभ्यतागत समीक्षा की। सामाजिक, आर्थिक, ढाँचे की बनावट को विश्लेषित किया। जिससे हिन्दू धर्म को देखने का विवेक उनमें विकसित हुआ। इसलिए जब बौद्ध धर्म अपनाने का निर्णय लिया तो वह कोई उत्तेजना में या आवेश पूर्ण निर्णय नही था। बल्कि एक सुविचारित निर्णय था। इसके पीछे उनके अपने तर्क थे, जिसके लिए उन्होने बहुत तैयारी किया था। बहुत सारे ग्रंथो का अध्ययन किया। साथ ही उनके व्यक्तिगत अनुभवों ने भी उनकी मानसिकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यही कारण है कि जब आजादी की लड़ाई चल रही थी। तब उन्होने महसूस किया कि भारत में आजादी के बाद समता एवं न्यायपूर्ण स्थिति होनी चाहिए और तभी भारत एक सभ्य एवं समृद्ध देश बनेगा।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के 14 अक्टूबर 1956 की बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद से बौद्ध धर्म का भारत में प्रचार–प्रसार बहुत अधिक तेजी से बढ़ा। 14 अक्टूबर 1956 नागपुर में 5 लाख से ज्यादा लोग 16 अक्टूबर 1956 को चन्द्रपुर में ढाई लाख से भी ज्यादा लोगों ने बौद्ध धर्म अपनाया।

26 अक्टूबर 1956 को ढाई हजार लोगों को इस तरह देखा जाय जब 6 दिसम्बर 1956 में उनके महापारिनिर्वाण दिवस को उनकी मृत शरीर की उपस्थिति में बम्बई दादर चौपाटी में विशालय समुदाय ने बौद्ध धर्म अपनाया।

नवयान

बौद्ध धर्म महात्मा बुद्ध द्वारा स्थापित भारत के महान धर्मो में से एक था। हालाँकि महात्मा बुद्ध इसे केवल आचार संहिता ही मानते थे। लेकिन जैसे–जैसे बौद्ध धर्म की लोकप्रियता बढ़ती गई, वैसे–वैसे इसमें काफी बुराईया शामिल होती गई। महात्मा बुद्ध को भगवान बुद्ध माना गया, उन्हे ईश्वर मान लिया गया। धीरे–धीरे बौद्ध धर्म का जिन बुराईयो के खिलाफ जन्म हुआ था। वे सभी बुराईया इसमें शामिल हो गई और बौद्ध धर्म पतन की ओर अग्रसर हो गया। इसकी वजह यह थी कि 7वीं शताब्दी तक आते–आते बौद्ध धर्म में तंत्र–मंत्र का प्रभाव बढ़ने लगा। जिसके परिणाम स्वरूप बज्रयान, सम्प्रदाय थेरवाद जैसे कई सम्प्रदाय का उदय हुआ।[21]

जब बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने धर्म परिवर्तन करने का निर्णय लिया तब उनके सामने अनेक समस्याये आयी। जहाँ एक तरफ हिन्दू नही चाहते थे कि

[21] विकिपीडिया

वे हिन्दू धर्म छोड़े, वहीं पर सिख, ईस्लाम, ईसाई, बौद्धों ने भी उन्हे अपना धर्म ग्रहण करने का आग्रह किया। बाबा साहेब हिन्दू धर्म के तिरस्कार से ऊब गये थे। उनका हृदय हिन्दू धर्म की विचारधारा, उनके शोषण पूर्ण विचारो से त्रस्त था। यही कारण था कि वे हिन्दू धर्म छोड़ने का बचपन मे ही निर्णय ले चुके थे। लेकिन सार्वजनिक तौर पर घोषणा बाद में किया। ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म को भी अपनाने पर विचार करते हुए उन्होने कहा ''यदि दलित वर्ग ईसाई धर्म या इस्लाम को अपनायेगें'' तो वे न केवल हिन्दू धर्म से बाहर चले जायेंगे। बल्कि हिन्दू संस्कृति से भी बाहर चले जायेगे। किन्तु यदि वे सिख धर्म अपनायेगें तो वे हिन्दू संस्कृति में बने रहेंगे, हिन्दुओं के लिए यह कम लाभदायक बात नहीं है''। सवाल यह उठता है कि बाबा साहेब ने बौद्ध धर्म ही क्यों स्वीकार किया ? उनका मानना था कि बौद्ध धर्म श्रेष्ठ मानवीय धर्म है। वे महात्मा बुद्ध को सामाजिक क्रान्तिकारी मानते थे, और कहा कि उन्होंने दलित, शोषित, मानवता को ज्ञान का पवित्र मार्ग दिखाया। जीवन में सत्कर्मों द्वारा मोक्ष का अधिकारी बनाया। अम्बेडकर जब धर्म परिवर्तन करने वाले थे, तब बौद्ध धर्म ग्रहण करने के मुद्दे पर बोलते हुए कहा कि ''यह बात ध्यान देने योग्य है कि धर्म परिवर्तन से सारे देश पर क्या असर होगा? इस्लाम या ईसाई धर्म अपनाने पर दलित वर्ग अपनी राष्ट्रियता खो देगे। अगर वे इस्लाम में जायेंगे तो मुसलमानों की संख्या दो गुनी हो जायेगी और मुस्लमानों के प्रभुत्व का खतरा भी वास्तविक रू्प से बढ़ जायेगा। यदि वे ईसाई धर्म स्वीकार कर लेगें तो ईसाई की जनसंख्या भी 5 से 6 करोड़ हो जायेगी। इससे अंग्रेजों को भारत देश पर कब्जा जमायें रखने में बड़ी सहायता मिलेगी, इसका विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा बल्कि उसमें वे सहायक ही होगें। दलित वर्गों का निःराष्ट्रीयकरण नहीं होगा।''[22] इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण करने पर विचार किया। बौद्ध धर्म ने छठी शताब्दी ई0 पू0 में हिन्दू धर्म से त्रस्त मानवता को मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग दिखाया था। अतः बाबा साहेब ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। परन्तु जैसा हम जानते है कि उन्होंने बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों को परिवर्तित रूप में स्वीकार किया किन्तु बाद में उसमें शामिल धार्मिक कर्मकाण्डों को स्वीकार नहीं किया। अतः उन्होंने अपने बौद्ध धर्म को नवयान बौद्ध धर्म माना। अम्बेडकर के अनुसार बुद्ध धर्म

[22] मधुलिमये –डॉ0 अम्बेडकर एक चिन्तन–पृष्ठ 102

का भारत वर्ष में इतना विस्तार हो चुका था कि ब्राह्मणों के अतिरिक्त सभी वर्गों ने इसे अपना धर्म स्वीकार कर लिया था, बौद्ध धर्म यज्ञादि के विरूद्ध जनता को जागृत कर चुका था। अहिंसा को परम धर्म के रूप में मान्यता दे चुका था।

समाज मे स्त्रियों का महत्व बढ़ गया था। अन्ततः कर्मकाण्ड समाप्त हो रहे थे। अंततः चातुवर्ण्य के सभी बंधन कमजोर पड़ गये थे[23]।

निश्चित रूप से ये सभी कारक बौद्ध धर्म को ग्रहण करने के पीछे सक्रिय थे। नवयान बौद्ध धर्म का एक सम्प्रदाय है जो भारतीय बौद्ध नेता बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर द्वारा निर्मित है। नवयान का अर्थ है नया मार्ग या शुद्ध वाहन या शुद्ध मार्ग। इस बुद्ध धर्म के सारे अनुयायी इसे "अम्बेडकरवादी" बौद्ध धर्म कहते है। इन नव बौद्धों का अम्बेडकर द्वारा निर्धारित 22 प्रतिज्ञाओं का पालन अनिवार्य तथा महत्वपूर्ण माना जाता है। जो अम्बडेकर ने 14 अक्टूबर 1956 के धर्म परिवर्तन समारोह में दिया था।[24] जिसे अम्बेडकर के अनुयायियों को नवयान सम्प्रदाय को मानने वाला कहा गया। यहाँ तक कि सरकारों ने इसे नव बौद्ध भी नाम दिया। अम्बेडकर का नव बौद्ध यानि नवयान सम्प्रदाय काफी मामलों में पुरानो बौद्ध सम्प्रदायों थेरवाद, बज्रयान, महायान से भिन्न था। वास्तव में जहाँ ये तीनों सम्प्रदाय बुद्ध के मूल सिद्धांतों को मानते थे, वहीं पर इससे कुछ भिन्न अन्य विचार ग्रहण कर लिया। जबकि नवयान सम्प्रदाय में बुद्ध के मूल सिद्धान्तों को ही स्वीकार किया गया था। साथ ही उन सिद्धांतो को ही लिया गया, जो विज्ञानवादी एवं तर्कशुद्ध/तर्कसंगत सिद्धांत थे। इस सम्प्रदाय में अंधविश्वासों, कुरीतियों, जाति प्रथा पर, लिंगभेद पर कड़ा प्रहार किया गया। इन बुराईयों का नवयान सम्प्रदान में कोई स्थान नहीं था। श्रेष्ठ सिद्धांत एवं विचार जो मानवीय जीवन को सुगम बना सके, उन्हीं पर सारा ध्यान केन्द्रित किया गया। जब बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर बौद्ध धर्म स्वीकार करने जा रहे थे, तो लोगों के मन में हजारों सवाल थे कि आखिर बाबा साहेब बौद्ध धर्म के किस सम्प्रदाय को स्वीकार करेंगे। जब पत्रकारों ने उनसे पूछा, तब उन्होने बहुत शांत, ओज, प्रसन्नचित मुद्रा में जवाब दिया। मेरा धर्म न तो महायान बौद्ध धर्म होगा और न ही हीनयान बौद्ध धर्म होगा, क्योंकि देखा जाय तो

---

[23] www.wikipedia.com/
[24] www.wikipedia.com/

इन दोनों धर्मों में ही कुछ ऐसी बातें हैं जो मूल बौद्ध धर्म से मेल नहीं खाती है, जो अंधविश्वास से भरी है। अतः मेरे द्वारा ग्रहण किया गया धर्म, नवयान बौद्ध धर्म होगा। जिसमें बुद्ध के मूल सिद्धान्त एवं तर्कशील विवेकवादी सिद्धांत ही होगें। कोई भी कुरीति एवं अंधविश्वास नहीं होगा। यह एक शुद्ध बौद्ध धर्म होगा''। किन्तु बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने स्पष्ट तौर पर कहा कि ''मैं महात्मा बुद्ध को मानता हूँ और मैं उन्हीं का अनुयायी हूँ'', वे स्वयं को महात्मा बुद्ध के समान नहीं मानते थे। किन्तु बाद में हम देखते है कि दलितों ने अम्बेडकर को अपना आध्यात्मिक नेता माना और महात्मा बुद्ध को गुरू माना।[25]

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की 22 प्रतिज्ञाएः—

बाबा साहेब ने बौद्ध धर्म ग्रहण करते समय 22 प्रतिज्ञायें लेना अनिवार्य किया। वास्तव में उनका उद्देश्य इन 22 प्रतिज्ञाओं के माध्यम से उनका हिन्दू धर्म की असमानता के खिलाफ रोष प्रकट करना था। वास्तव में ये 22 सिद्धांत उनके जीवन भर के सामाजिक अवहेलना, तिरस्कार से उत्पन्न विचार थे। अम्बेडकर को अहसास था कि अगर बौद्ध धर्म में हिन्दू धर्म की बुराईयाँ शामिल रही तो उनके बौद्ध धर्म ग्रहण करने का कोई मतलब नही रह जायेगा। तब बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म की तरह भयाक्रांत संस्था ही बनी रहेगी। अछूतों को कभी भी वो सम्मान नहीं दे पायेगी, जिसकी जरूरत अछूतों को है। अतः उन्होंने नवयान की बुनियाद रखा। जिसे मानने वाले को 22 सिद्धांतों की शपथ लेनी पड़ती थी। वे निम्न हैंः—

1. मैं ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश में कोई विश्वास नहीं करूँगा और न ही मैं उनकी पूजा करूँगा। वास्तव में ऐसा इसलिए किया, क्योंकि हिन्दू धर्म में कुछ जातियों को अस्पृश्य मानकर पूजा करने ही नहीं, बल्कि पूजा सुनने से भी वंचित कर दिया गया था। जो अत्यंत अमानवीय एवं अत्याचार पूर्ण स्थिति थी। केवल ब्राह्मणों को पूजा का अधिकार देने की स्थिति बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की व्यथित कर रहा था। अतः इन्होंने हिन्दू धर्म में अपनी आस्था नहीं होने की बात कही।[26]

[25] विकिपीडिया
[26] तत्रैव

2. मैं राम और कृष्ण, जो भगवान के अवतार माने जाते है। मैं उनमें कोई आस्था नहीं रखूंगा, और न ही मैं उनकी पूजा करूँगा।
3. मैं गौरी, गणपति और हिन्दुओं के अन्य देवी–देवताओं में आस्था नहीं रखूँगा, और न ही पूजा करूँगा।
4. मैं भगवान के अवतार में विश्वास नहीं करता हूँ।
5. मैं यह नहीं मानता और न कभी मानूंगा कि भगवान बुद्ध विष्णु के अवतार थे। मैं इसे पागलपन और झूठा प्रचार–प्रसार मानता हूँ।
6. मैं श्राद्ध (तर्पण) में भाग नही लूंगा और न ही पिंड दान करूंगा।
7. मैं बुद्ध के सिद्धांतों और उपदेशों का उल्लंघन करने वाले तरीके से कार्य नहीं करूंगा।
8. मैं ब्राह्मणों द्वारा निष्पादित होने वाले किसी भी समारोह को स्वीकार नहीं करूंगा और न ही भागीदारी करूंगा।
9. मैं मनुष्य की समानता में विश्वास करता हूँ।
10. मैं समानता स्थापित करने का प्रयास करूँगा।
11. मैं बुद्ध के आष्टांगिक मार्ग का अनुशरण करूँगा।
12. मैं बुद्ध द्वारा निर्धारित परमितों का पालन करूँगा।
13. मैं सभी जीवित प्राणियों के प्रति दया और प्रेम व दयालुता रखूँगा तथा उनकी रक्षा करूँगा।
14. मैं चोरी नहीं करूँगा।
15. मैं झूठ नहीं बोलूँगा।
16. मैं कामुक पापों को नही करूँगा।
17. मैं मदिरा, नशा जैसे मादक पदार्थों का सेवन नही करूँगा।
18. मैं यह महान आष्टांगिक मार्ग के पालन का प्रयास करूंगा एवं सहानुभूति और प्रेम भरी दयालुता का दैनिक जीवन में अभ्यास करूँगा।[27]
19. मैं हिन्दू धर्म का त्याग करता हूँ, जो मानवता के लिए हानिकारक और उन्नति और मानवता के विकास में बाधक है। क्योंकि यह असमानता पर आधारित है, और स्व धर्म के रूप में बौद्ध धर्म को अपनाता हूँ।[28]

[27] विकिपीडिया

20. मैं दृढ़ता के साथ यह विश्वास करता हूँ कि बुद्ध का धम्म ही सच्चा धर्म है।
21. मुझे विश्वास है कि मैं फिर से जन्म ले रहा हूँ (इस धर्म परिवर्तन के बाद)।
22. मैं गम्भीरता एवं दृढ़ता के साथ घोषित करता हूँ कि मैं इस (धर्म परिवर्तन के) बाद अपने जीवन का बुद्ध के सिद्धांतों व शिक्षाओं का उनके धम्म के अनुसार मार्गदर्शन करूँगा।[29]

गौरी, गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, महेश जैसे हिन्दू धर्म के किसी देवी देवता को मानने और उनकी पूजा करने से इंकार करके इन्होंने हिन्दू धर्म को चुनौती दिया। उनका कहना था कि मुझे ईश्वर के अवतार लेने पर विश्वास नहीं है। वो महात्मा बुद्ध को ईश्वर नहीं मानते थे। जैसे बौद्ध धर्म में भी बुद्ध को भावी मैत्रेय के रूप में जन्म लेंने की बात की गई। वो बुद्ध को विष्णु का अवतार नहीं मानते थे। क्योंकि उनका मानना था कि ये हिन्दू पुरोहितों का प्रपंच है। हिन्दू धर्म को लोकप्रिय बनाने का और इसका शिकार महात्मा बुद्ध के मूल सिद्धांत हुए हैं। वो महात्मा बुद्ध को अवतार मानने की अवधारणा को पागलपन एवं मिथ्या मानते थे। क्योंकि महात्मा बुद्ध पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते थे। उनका मानना था कि आत्मा का पुनर्जन्म नहीं होता है। जब मनुष्य की तृष्णाएं एवं वासनाएं नष्ट हो जाती है तब वह पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो जाता है।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर उन सभी हिन्दू धर्म की परम्पराओं को त्याग करने को कहा जो बौद्ध धर्म के आचरण के विरूद्ध हो। क्योंकि हिन्दू धर्म ने लम्बे समय तक शोषण का जो चक्र चलाया एवं मानवीय गरिमा को नुकसान पहुंचाया, इससे मुक्ति जरूरी थी। उन्होंने ब्राह्मणवादी परम्परा को मानने से इंकार कर दिया। क्योंकि उनका मानना था कि आदिकाल से इन ब्राह्मणों ने निम्न वर्गों का अत्यन्त शोषण किया है। उनसे उनके सम्मान पूर्वक जीवन जीने का अधिकार छीन लिया। अतः उन्होंने ब्राह्मणों के हाथो कोई भी धार्मिक क्रिया को सम्पन्न करवाने से इंकार कर दिया। अपने लोगों के बीच से ही पढ़े–लिखे समझदार व्यक्ति द्वारा धार्मिक क्रिया सम्पन्न करवाने की बात रखी। वास्तव में इसके पीछे ब्राह्मणवादी व्यवस्था के प्रभुत्व को चुनौती देना था। मनुष्य का समानता के सिद्धांत मे विश्वास की

[28] विकिपीडिया
[29] विकिपीडिया

अवधारणा भी थी। समानता की स्थापना करना, उनका मुख्य लक्ष्य था। यही कारण था कि उन्होंने न केवल व्यक्तिगत स्तर पर मनुष्यों की समानता के स्थापना का प्रयास किया, बल्कि स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान वे लगातार ब्रिटिश सरकार से एवं राजनीतिक के महत्वपूर्ण दिग्गजों के समक्ष छुआछूत को समाप्त करने एवं राजनीतिक अधिकार, सामाजिक सुधार का प्रश्न उठाते रहे और जब उन्हें अवसर मिला तो संविधान में अनुच्छेद 17 द्वारा अस्पृश्यता उन्मूलन का मौलिक अधिकार नागरिकों को प्रदान किया।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने नवयान सिद्धान्तों के तहत महात्मा बुद्ध के मूल सिद्धांतों पर बल दिया जैसे–

(1) अष्टांगिक मार्ग–

(1) सम्यक दृष्टि
(2) संम्यक संकल्प
(3) सम्यक वाणी
(4) सम्यक कर्मान्त
(5) सम्यक आजीव
(6) सम्यक प्रयत्न
(7) सम्यक स्मृति
(8) सम्यक समाधि

बबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का मानना था कि ये मार्ग व्यक्ति को अच्छे व्यवहार करने पर बल देता है। संतुलित जीवन ही प्रसन्नता का कारण होता है। इसके अलावा उन्होंने महात्मा बुद्ध के दश शीलों के पालन करने पर बल दिया। उन्होंने अपने नव बौद्धों को महात्मा बुद्ध के मतानुसार मन, वचन, कर्म से पवित्र रहने को कहा। सभी प्राणियों को समान मानने के साथ ही उन पर दया करने और उनके लालन पालन की शपथ को भी अपनी प्रतिज्ञाओं में शामिल करवाया। उन्होंने मनुष्य को चोरी न करने, भोग विलास से दूर रहने, झूठ न बोलने, तथा अवगुणों से दूर रहने को कहा। उनका मानना था कि ये अवगुण ही व्यक्ति के पतन के कारण है, अतः उन्होंने चारित्रिक विशिष्टताओं पर बल दिया और बुद्ध के धम्म के प्रति अपनी आस्था व्यक्त किया। उन्होंने बुद्ध धम्म के तीन तत्वों को अच्छे एवं संतुलित जीवन के लिए आवश्यक माना। वे तत्व थे –

- प्रज्ञा
- शील
- करूणा

हिन्दू धर्म के जिन सामाजिक, धार्मिक अवरोधों से उनका जीवन त्रस्त रहा, और उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जिसकी वजह से वे हिन्दू धर्म को मानव कल्याण एवं विकास के मार्ग में हानिकारक मानते थे। इसलिए उन्होंने हिन्दू धर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म ग्रहण किया। इस प्रकार स्पष्ट तौर पर गौतम बुद्ध के धर्म में आस्था प्रकट करते हुए उसे अपना धर्म कहा और उसे ही सही धर्म भी कहा। बौद्ध धर्म ग्रहण करने को उन्होंने अपना नया जन्म माना।

☆☆☆

अध्याय–3

बौद्ध धर्म

एवं

नव बौद्ध धर्म

का

तुलनात्मक अध्ययन

बौद्ध धर्म एवं नव बौद्ध धर्म का तुलनात्मक अध्ययन

महात्मा बुद्ध जगत् और जीवन को यथार्थ मानकर चले, वे इस उलझन में नहीं पड़े कि विश्व या मनुष्य अमर है या नश्वर, सीमित है या असीम, जीव या शरीर एक ही है या अलग। जब किसी ने उनसे इस सम्बन्ध में उनके विचार जानने चाहे तो उन्होंने कुछ नही कहा। वे इस विषय पर बात करना व्यर्थ समझते थे। उनका मानना था कि वे ईश्वर नही है, अपितु गुरू है, और उनके विचार, आचरण सम्बन्धी विचार है। जो नैतिक मूल्यों पर आधारित है। वास्तव में जब बौद्ध धर्म का उदय हुआ तो वह कोई नया धर्म नही था, बल्कि वह तो उन समस्याओं के आलोक में उपजा था, जिन्होंने मानवीय जीवन को आडम्बरों, कर्मकाण्डों से नरकीय बना दिया था। जिसने दलित, शोषित, नारी आदि को पूजा के अधिकार से वंचित कर दिया था। इस सन्दर्भ में उनका मानना था कि कुछ ऐसे नियम होने चाहिए जो मानव को न केवल उत्कृष्ट जीवन की ओर उन्मुख करें, बल्कि नियम सरल एवं सहज होने चाहिए तथा मानव जीवन के लिए हितकारी भी होने चाहिए।

कुछ लोगों का मानना था कि मूल बौद्ध धर्म कोई दर्शन नहीं है, क्योंकि बुद्ध ने ईश्वर की सत्ता सम्बन्धी किसी भी प्रश्न का कोई उत्तर नही दिया। बौद्ध धर्म का मौजूदा स्वरूप महात्मा बुद्ध के बाद का विकास है। बौद्ध धर्म एक व्यवहारिक धर्म था, यह कोई आध्यात्मिक धर्म नही था। क्योंकि बुद्ध ईश्वर, सृष्टि सभी प्रश्नो पर मौन थे। बुद्ध का धर्म जीवन का विषय था। जो व्यक्ति को जीवन काल में ही निर्वाण का अधिकारी बनाता था। जिसका उद्देश्य मनुष्य जाति का कल्याण करना मनुष्य के साथ सद्व्यवहार से सम्बन्धित था।

चूंकि मेरे अध्ययन का विषय बौद्ध धर्म एवं नवयान के बीच तुलनात्मक अध्ययन है। जैसा हम जानते है कि नवयान जिसे बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म ग्रहण करते हुए परिचय देते हुए कहा था कि नवयान कोई नया धर्म नहीं है, बल्कि यह महात्मा बुद्ध के मूल सिद्धांतों पर आधारित था। जैसा कि हम जानते है कि मौर्य काल के बाद लगातार बौद्ध धर्म में अनेक वैचारिक द्वन्द

उपजे थे। बौद्ध धर्म को लोकप्रिय करने के चक्कर में उसमें हिन्दू धर्म के अनेक विचारों को बौद्ध धर्म में अपना लिया गया।

बौद्ध धर्म हीनयान, महायान, व्रजयान जैसे सम्प्रदायों में विभक्त होता चला गया। इन सभी सम्प्रदायों ने स्वयं को लोकप्रिय बनाने के लिए बुद्ध के सिद्धांतों से समझौता करना शुरू कर दिया, इससे मूल बौद्ध धर्म की विशेषताएं लुप्त होती गई, उनके स्थान पर अनेक अन्य विचार जो उस समय लोकप्रिय थे, बौद्ध धर्म में शामिल होते गये। अतः हम यहाँ महात्मा बुद्ध के मूल सिद्धान्तों का उल्लेख करके जानने की कोशिश करेंगे कि वे सिद्धांत क्या थे, जो बाद में नवयान के मार्गदर्शक बने।

चार आर्य सत्य :– बौद्ध धर्म में चार आर्य सत्यों की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसके आधार पर ही अन्य बौद्ध सिद्धांतों का विकास हुआ है। वे निम्न हैं–

(1) **दुख :–** बौद्ध धर्म में संसार को सभी दुःखों का कारण अर्थात सभी वस्तुएं दुखमय है, माना गया। जैसा कि हम जानते है जब सिद्धार्थ ने गृह त्याग किया था, तो उसके पीछे कारण बताया गया था कि उन्होंने बृद्ध, बीमार, मृत एवं सन्यासी को देखा था और जीवन के मूल उद्‌देश्य का पता चला। उन्हे लगा यह सारा संसार दुःखमय है। व्यक्ति मानसिक भुलावे में रहता है कि संसार सुखमय है, परन्तु होता इसके विपरीत है।

(2) **दुःख समुदाय :–** बुद्ध का मानना था कि यह संसार दुःखमय है, परन्तु यह दुःखमय क्यों है? इसके पीछे अवश्य ही कोई कारण होगा। क्योंकि कारण के बिना कार्य का होना सम्भव नहीं है। महात्मा बुद्ध का मानना था कि समस्त दुःखों का कारण व्यक्ति की अज्ञानता एवं तृष्णा है। व्यक्ति की तृष्णा ही उसके दुःखों की उत्पत्ति का कारण होती है। यह आसक्ति एवं मोह उत्पन्न करती है, परन्तु सवाल यह है कि तृष्णा का जन्म कैसे होता है तो महात्मा बुद्ध ने कहा कि रूप, शब्द, गंध, रस, स्पर्श तथा मानसिक वितर्क एवं विचार से मनुष्य में आसक्ति उत्पन्न होती है, जिससे तृष्णा का जन्म होता है।

(3) दुःख निरोध :– महात्मा बुद्ध का कहना था कि यह समस्त संसार दुःखमय है, इसके पीछे दुःख उत्पत्ति के उत्तरदायी कारण भी है तो निश्चित रूप से इसके

निदान का मार्ग भी होगा कि कैसे दुःख से छुटकारा मिले, दुःख का समूल नाश हो। तब इनका कहना था कि तृष्णा के मूलोच्छेदन से दुःख से छुटकारा मिल सकता है। दुःख के कारण को प्रतीत्यसमुत्पाद भी कहा जाता है। महात्मा बुद्ध का कहना था कि संसार में जो कुछ भी अच्छा लगता है, प्रिय लगता है, संसार में जिसमें रस मिलता है, उसे जो दुःख रूप समझेंगे और उससे डरेंगे, वे ही तृष्णा को छोड़ सकेंगे। रूप वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान का विरोध ही दुःख निरोध है।

(4) दुःख निरोध मार्ग :– जब महात्मा बुद्ध से दुःख मुक्ति का मार्ग बताने को कहा गया तब उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा पर चलकर दुःखों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इसमें आठ अंगों की व्यवस्था है जिसे अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है।

अष्टांगिक मार्ग :– महात्मा बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के निदान के लिए तृष्णा के समूल नाश को आवश्यक बताया। उनका मानना था कि इच्छाएँ ही व्यक्ति के लोभ का कारण बनती है और वही व्यक्ति का जन्म–मरण के बंधन में बांधे रखती है। यदि व्यक्ति जन्म–मरण के बंधन से मुक्त होना चाहता है तो आवश्यक है कि वह अपनी तृष्णा का नाश करे। जिसके लिए उसे अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करना होगा। जो व्यक्ति को न केवल इस जीवन में सुख पूर्वक जीवन जीने का मार्ग देगा बल्कि निर्वाण प्राप्त में भी सक्षम बनाएगा। यह जीवन को व्यतीत करने का मध्यम मार्ग है। इसलिए अष्टांगिक मार्ग को मध्यम मार्ग भी कहा जाता है। ये आठ अंग निम्न हैं–

(1) सम्यक दृष्टि :– महात्मा बुद्ध ने कहा था कि व्यक्ति की दृष्टि यानि विचार सम्यक यानि सामान्य होने चाहिए। उसे सत्य–झूठ, पाप–पुण्य, अच्छे आचरण–बुरे आचरण में भेद करने में सक्षम होना चाहिए, यही सही ज्ञान है। सम्यक दृष्टि ही वह माध्यम है जिससे चारों आर्य सत्यों का ज्ञान होता है, यह ज्ञान श्रद्धा एवं भक्ति से युक्त होना चाहिए।

(2) सम्यक संकल्प :– सम्यक संकल्प का मतलब दृढ़ निश्चय है। बुद्ध के अनुसार यदि व्यक्ति आत्म कल्याण चाहता है या जन कल्याण का भाव रखता है तो उसे दृढ़ निश्चय के साथ किसी भी प्रकार की हिंसा या दूषित भावना से मुक्त होकर

कल्याण मार्ग पर उन्मुख होना चाहिए और यह उन्मुखता उसे निर्वाण का मार्ग प्रदान करेगी।

(3) सम्यक वाणी :– अर्थात वाणी पर नियंत्रण। बुद्ध का कहना था कि हिंसा चाहे मानसिक, वाचिक या कार्यिक हो, हिंसा होती है। वह व्यक्ति को असद्मार्ग पर ले जाती है। इसलिए जरूरी है कि व्यक्ति किसी भी तरह की हिंसा का समर्थन न करे चाहे वह वाणी की ही हिंसा हो, यानि किसी को मन, वचन, कर्म, से पीड़ित न करना।

(4) सम्यक कर्मान्त :– सही कर्म करना, यानि कर्मों में पवित्रता बनाए रखना। किसी भी प्रकार की हिंसा, द्रोह, दुराचरण से दूर रहना और अच्छे कर्म करना। क्योंकि बुरे कर्म सदैव पीड़ा का कारण होते है और व्यक्ति को अद्यःपतन की ओर ले जाते है। अतः आवश्यक है कि व्यक्ति के कर्म बेहतर हो और उन्नति की ओर वो अग्रसर हो।

(5) सम्यक आजीव :– न्यायपूर्ण मार्ग से आजीविका चलाना। जीवन निर्वाह में निषिद्ध मार्गों का त्याग करना। बुद्ध का कहना था कि अच्छी आजीविका यानि ऐसी जीवन निर्वाह का मार्ग जो सत्य का अनुसण करता हो, श्रेष्ठ होता है। वह व्यक्ति को बुराइयों से, पाप से बचाता है। इसलिए जीवन में थोड़ा ही कमाओ या जो संसाधन जुटाओ, उन्हें प्राप्त करने का मार्ग सच्चाई एवं ईमानदारी का हो।

(6) सम्यक् प्रयत्न :– इसका अर्थ व्यायाम लगाया गया है। महात्मा बुद्ध का कहना था कि व्यक्ति को अच्छे कर्म करने के लिए निरन्तर उद्यम करते रहना चाहिए। क्योंकि निरन्तर किया गया प्रयास सदैव उन्नति का मार्ग खोलता है।

(7) सम्यक स्मृति :– महात्मा बुद्ध का कहना था कि व्यक्ति को लोभ आदि मन के सन्तापो से बचना होगा तथा उत्तम एवं श्रेष्ठ शिक्षा को सदैव ध्यान में रखना होगा।

(8) सम्यक समाधि :– मन अथवा चित्त की एकाग्रता को राग–द्वेष से विहीन होकर बनाये रखना। क्योंकि जब तक चित्त की एकाग्रता न होगी, तब तक निर्वाण का ध्येय प्राप्त न होगा। मनुष्य जन्म–मरण के चक्र में ही फंसा रहेगा। चूंकि मानव जीवन का सत्य निर्वाण है, अतः उसकी प्राप्ति के लिए चित्त की एकाग्रता आवश्यक है।

मध्यम प्रतिपदा (मध्य मार्ग) :– महात्मा बुद्ध ने मनुष्य को जीवन के कष्ट, दुःखों से छुटकारा पाने के लिए कल्याण मित्र यानि अष्टांगिक मार्ग की दिशा दिखाया था। वह मूल्य रूप से शुद्ध आचरण के व्यवहार पर आधारित था। मध्यम प्रतिपदा के तहत यानि अष्टांगिक मार्ग में न तो अधिक शारीरिक कष्टों एवं क्लेश से युक्त कठोर तपस्या को उचित बतलाया गया और न ही अत्याधिक भोग विलास को। वास्तव में उसका मार्ग दोनों के बीच ही था न अधिक, न कम यानि मध्यम मार्ग, इसे ही मध्यम प्रतिपदा कहा गया। इसका पालन करके ही मनुष्य निर्वाण प्राप्त कर सकता था।

दसशील :– महात्मा बुद्ध मानते थ कि मनुष्य के पास वह अवसर है, जब वह अपने जीवन को नैतिकताओं और शील (यानि आचरण) पर बल देकर स्वयं को निर्वाण पथ पर अग्रसर कर सकता है। महात्मा बुद्ध ने अपने अनुयायियों को मन वचन कर्म से पवित्र रहने को कहा। इसके लिए उन्होंने अनुयायियों को दस शीलों[1] के पालन करने को कहा जो निम्न है।

(1) अहिंसा व्रत का पालन करना

(2) सदा सत्य बोलना

(3) अस्तेय (चोरी न करना)

(4) अपरिग्रह अर्थात वस्तुओं का संग्रह न करना

(5) ब्रह्मचर्य अर्थात भोग विलास से दूर रहना

(6) नृत्य ज्ञान का त्याग

(7) सुगंधित पदार्थों का त्याग

(8) असमय भोजन का त्याग

(9) कोमल शय्या का त्याग

(10) कामिनी–कांचन का त्याग

महात्मा बुद्ध के सदाचार के इन नियमों द्वारा मनुष्य को अपने जीवन को सदाचारी एवं नैतिक बनाना था। ताकि वह संसारिक दुःखों से मुक्त हो सके, तृष्णायें समाप्त हो सके।

[1] अखिल मूर्ति–प्राचीन भारत का इतिहास पेज–132

बौद्ध धर्म के अनुसार जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण की प्राप्ति है, जिसका अर्थ होता है दीपक बुझ जाना[2] यानि कर्मों का बहाव रूक जाना अर्थात जीवन मृत्यु के चक्र से मुक्ति। महात्मा बुद्ध का मानना था कि निर्वाण केवल मृत्यु के बाद ही प्राप्त नही हो सकता, बल्कि यह तो इस जीवन में भी संभव है।

हालांकि उल्लेखनीय है कि महात्मा बुद्ध के विचार भिक्षु एवं गृहस्थ दोनों के लिए थे। बस गृहस्थों को कुछ नियमों में छूट प्रदान की गई थी। उनका मानना था कि इन नियमों का पालन करके कोई भी व्यक्ति सन्मार्ग की ओर बढ़ सकता है।

महात्मा बुद्ध के दर्शन सम्बन्धी कुछ अन्य विचार :–

पुनर्जन्मवाद :– महात्मा बुद्ध कर्म में विश्वास करने वाले मनीषी थे। उनका मानना था कि व्यक्ति जैसा कर्म करता है, वैसा ही जन्म उसे प्राप्त होता है। यदि वह अच्छा कर्म करेगा तो निश्चित रुप से उसका जन्म भी श्रेष्ठ होगा अन्यथा नहीं। इसलिए आवश्यक है कि अच्छे कर्म को जीवन का आधार बनाओ। किन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि महात्मा बुद्ध ने आत्मा के अस्तित्व के सम्बंध में कुछ नहीं कहा। अतः निश्चित रूप से प्रश्न था कि अच्छे एवं बुरे कर्मों का फल कौन भोगता है? पुनर्जन्म होता किसका है? यदि आत्मा का अस्तित्व ही नही तो पुनर्जन्म संभव कैसे है? तब महात्मा बुद्ध ने कहा था कि आत्मा का कोई पुनर्जन्म नहीं होता है, यह पुनर्जन्म यदि होता है तो तृष्णा एवं इच्छाओं से भरे शरीर का। जब मनुष्य की तृष्णाएं एवं वासनाएं समाप्त हो जाती है, तब पुनर्जन्म के चक्र से वह मुक्त हो जाता है।

कर्मवाद :– कर्मवाद के अनुसार कर्म ही व्यक्ति के जीवन का निर्धारण करते है, जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है वैसा ही उसका फल प्राप्त करता है। व्यक्ति का इहलोक एवं परलोक दोनों ही उसके कर्मों पर निर्भर करता है। कर्म करने का मतलब यह नहीं कि व्यक्ति वैदिक कर्मकाण्डों को अपनाए, बल्कि वे व्यक्ति के नैतिक कृत्यों को चाहे वह वाचिक, कायिक या मानसिक हो वही कर्म होते है। इसलिए वह मनुष्यों को सत्कर्म करने की प्रेरणा देते है। उनका मानना था कि

[2] बुद्ध और उनका धम्म–बाबा भीमराव अम्बेडकर

सत्कर्मों द्वारा ही शूद्र कुल में उत्पन्न पुरूष ज्ञानी एवं निष्कलंक पाप रहित मुनि हो सकता है।

निर्वाण :– निर्वाण का अर्थ है दीपक का बुझ जाना, अर्थात कर्म का रूक जाना या समाप्त हो जाना। जैसा हम जानते है कि प्राचीन काल से मोक्ष प्राप्त करना, मनुष्य का परम लक्ष्य रहा है। अतः बौद्ध धर्म का भी अन्तिम लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना है। महात्मा बुद्ध का मानना था कि तृष्णा या वासना की अग्नि बुझ जाने पर निर्वाण की प्राप्ति इसी जन्म में इसी लोक में प्राप्त किये जा सकते है। इस सम्बन्ध में महात्मा बुद्ध का कहना था कि ''भिक्षुओं संसार अनादि है। तृष्णा से संचालित हुए प्राणी इसमें भटकते फिरते हैं। इसके आदि अंत का पता नहीं चलता। भवचक्र में पड़ा हुआ प्राणी अनादि काल से बार–बार जन्म लेता और मरता आया है। इसने संसार में बार–बार जन्म लेकर प्रिय वियोग और अप्रिय संयोग के कारण से रो–रोकर अपार आंसू बहाये है। दीर्घकाल तक तीव्र दुःख का अनुभव किया। अब तो तुम सभी संस्कारों से निर्वेद प्राप्त करो, वैराग्य प्राप्त करो, मुक्ति प्राप्त करो''।

अनात्मवाद :– महात्मा बुद्ध ने आत्मा सम्बन्धी प्रश्न पर मध्यम मार्गी रूख रखा। उन्होंने आत्मा के संबन्ध में कुछ नहीं कहा कि आत्मा है या नहीं है। वास्तव में वे इस विवाद में पड़ना ही नही चाहते थे। उनका मानना था कि यदि मैं कहूं कि आत्मा है तो मनुष्य मोह में पड़ जायेगा और मोह यानि आसक्ति ही समस्त दुःखों का मूल कारण है। यदि मैं इसे नहीं मानता तो मनुष्य को आत्मा के अस्तित्व में न होने से अपार कष्ट होगा कि मेरे मृत्यु के बाद कुछ भी मेरा शेष न रहेगा। इसलिए उन्होंने इस विवाद में पड़ना उचित नहीं समझा।

वेदों की प्रमाणिकता का खण्डन :– महात्मा बुद्ध वेदों की प्रमाणिकता में विश्वास नहीं करते थे। वे तर्कशील थे, इसलिए किसी भी प्रकार की अंधश्रद्धा में उन्हें यकीन न था। वे वेदों की अपौरुषेय नहीं मानते थे। वे नहीं मानते थे कि जो वेदों में वर्णित है, वही अन्तिम सत्य है। वे ईश्वर को सृष्टि का निर्माता भी नहीं मानते थे। इसलिए कुछ लोग महात्मा बुद्ध को नास्तिक भी मानते थे। महात्मा बुद्ध का कहना था कि यदि हम तर्कशील नहीं होंगे, तर्क के आधार पर किसी घटना का विवेचन नही करेगें तो बुद्धि होने का क्या मतलब। उसे किसी द्वारा कहे गये कार्यों

(कथनों) पर विश्वास न करके अपनी स्वयं की बुद्धि द्वारा चीजों को देखना, परखना चाहिए।

प्रतीव्य समुत्पाद – प्रतीव्य समुत्पाद में प्रतीव्य का अर्थ इसके होने और समुत्पाद का अर्थ यह उत्पन्न होता है यानि किसी कारण से ही किसी वस्तु या बात का जन्म होता है। यह बुद्ध के उपदेशों का सार है उनकी समस्त शिक्षाओं के आधार स्तम्भ। यह आर्य सत्यों में निहित है।

क्षणिकवाद – महात्मा बुद्ध का मानना था कि संसार में कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है, बल्कि नाशवान है। यह सम्पूर्ण संसार ही परिवर्तनशील है। जीवन गतिशील है।

महात्मा बुद्ध के धर्म, बौद्ध धर्म का जन्म छठी शताब्दी में समाज में व्याप्त धार्मिक कर्मकाण्डों, ब्राह्मणवादी जाति व्यवस्था के विरोध में हुआ था। महात्मा बुद्ध का मानना था[3] कि कोई भी व्यक्ति इसलिए श्रेष्ठ नही होता है कि उसका जन्म एक कुलीन परिवार में हुआ है, बल्कि इसलिए उसे श्रेष्ठ होना चाहिए, क्योंकि उसके कर्म श्रेष्ठ है। कुछ ऐसा समाज चाहते थे, जिसमे हिंसा एवं पापकर्म के लिए कोई स्थान न हो। जिसमें स्त्री का सम्मान है। वह दास प्रथा, बेगारी आदि के विरूद्ध थे, क्योंकि उनका मानना था कि इससे न केवल व्यक्ति की गरिमा का ह्रास होता है बल्कि वह अद्यःपतन का शिकार हो जाता है। उनकी मान्यता थी कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिवार, रिश्तों से प्रेम करना चाहिए और साधु–सन्यासियों की सेवा करनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को मन, वाणी, कर्म से सात्विकतापूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए।[4]

ध्यान देने योग्य बात यह है कि जहाँ एक तरह महात्मा बुद्ध स्वयं को एक शिक्षक मानकर मानवता को राह दिखाने की कोशिश कर रहे थे। वही दूसरी तरफ उनके विचारों में ही उत्तरोत्तर बदलाव उनके ही अनुयायियों ने करना शुरू कर दिया। बौद्ध धर्म की लोकप्रियता बढ़ने के साथ अनेक कर्मकाण्ड भी बौद्ध धर्म में शामिल होते गये। यहाँ तक एक समय ऐसा भी आया, जब बौद्ध धर्म में अनेक सम्प्रदायों एवं विचारों का समावेश हुआ जो मूल बौद्ध शिक्षाओं से विपरीत थे।

[3] विकीपीडिया।
[4] अखिलमूर्ति–प्राचीन भारत का इतिहास पेज–135

बौद्ध धर्म अनेक शाखाओं में बंट गई।[5] जैसेः–

1. हीनयान
2. महायान
3. थेरवाद
4. वज्रयान

सवाल यह है कि ये किस प्रकार मूल बौद्ध शिक्षाओं से पृथक थी?

महात्मा बुद्ध की मृत्यु के 585 वर्ष के बाद 102 ई0 में कनिष्क के शासनकाल में कश्मीर के कुण्डलवन में चतुर्थ बौद्ध संगीत में बौद्ध धर्म दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया है[6]। वे थे हीनयान एवं महायान।

हीनयान – हीनयान जिसे श्रावकयान या निम्नमार्ग भी कहा जाता था। इसमें महात्मा बुद्ध के मूल विचारों का ही महत्वपूर्ण स्थान है। लेकिन यह कुछ मामलों में मूल बुद्ध विचारों से भी ज्यादा कठोर है। हीनयान सम्प्रदाय बुद्ध को ईश्वर नहीं मानता, बल्कि उन्हें मानव मानता है। हीनयान का मानना है कि निर्वाण मनुष्य का अन्तिम ध्येय है। यह मार्ग बुद्ध के दिखाये गये मार्ग पर ही चलकर प्राप्त किया जा सकता है। हीनयान कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति में निर्वाण प्राप्त करने की शक्ति है। लेकिन वह सांसरिक तृष्णा में भटकता रहता है और निर्वाण मार्ग से विमुख हो जाता है। अतः आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने अन्दर के प्रकाश को पहचान कर सकने की योग्यता का विकास करना होगा और यही कर पाना मनुष्य के लिए बेहद मुश्किल होता है। अतः बुद्ध मार्ग पर चलकर निर्वाण प्राप्त करो। इस संसार की समस्त वासनाए हेय है अतः उनका परित्याग करो।

महायान– महायान सम्प्रदाय[7] को श्रेष्ठ मार्ग भी कहा जाता है। इस सम्प्रदाय के अनुयायी महात्मा बुद्ध को मानव नहीं मानते है। बल्कि उन्हें ईश्वर के रूप में पूजा करने पर बल देते है। वास्तव में समय के साथ बौद्ध धर्म के अनुयायी उस समय अन्य धर्मों से मिलने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए चाहते थे कि उनके धर्म में ऐसी चीजें हो जो ज्यादा से ज्यादा लोगों को बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित करें। अतः उन्होंने बौद्ध धर्म में काफी परिवर्तन करके बौद्ध धर्म को

[5] प्राचीन भारत इतिहास तथा संस्कृति– कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ–856
[6] प्राचीन भारत इतिहास तथा संस्कृति– कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ–856
[7] आउट लाइन आफ महायान बुद्धिज्म पृष्ठ 10– कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ–856

लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया। क्योंकि जहाँ हीनयान अत्यंत कठोर आदर्शों के साथ मनुष्य को निर्वाण प्राप्ति का मार्ग दिखा रहा था। जिसे अपनाना आसान नही था। दूसरी तरफ हिन्दू धर्म अपनी कमियों को दूर करके फिर से भक्तिमार्ग द्वारा मोक्ष प्राप्त करने का विकल्प देकर ज्यादा लोकप्रिय हो रहा था। इसके अलावा महायान सम्प्रदाय ज्यादा से ज्यादा विदेशियों को यवन, शक, पह्व, कुषाण आदि को अपने मत में दीक्षित करके अपने सम्प्रदाय को लोकप्रिय बनाना चाहते थे।[8]

चूंकि जैसा हम जानते है मूल बौद्ध धर्म में गृहस्थों के लिए निर्वाण की व्यवस्था नही थी। जबकि गृहस्थों की संख्या ज्यादा थी। वे भी निर्वाण प्राप्त करना चाहते थे। हीनयान सम्प्रदाय में भी इसकी व्यवस्था न थी। जबकि महायान का कहना था कि प्रत्येक व्यक्ति को केवल आत्म कल्याण ही नही करना चाहिए बल्कि उन लोगों की भी मदद निर्वाण प्राप्ति में करनी चाहिए, जो दुःखी है। गृहस्थ जीवन में होते हुए भी निर्वाण के आकांक्षी है। अतः ऐसे अवसर दिये जाने चाहिए जिससे उन्हें अन्य दुःखी त्रस्त प्राणियों की सेवा द्वारा निर्वाण की प्राप्ति हो सके। अतः महायान ने अपने मत में कहा कि एक मात्र बोधिसत्व नहीं है, बल्कि उनसे पहले भी बौद्ध धर्म के अनेक प्रवर्तक हो चुके है।

महायान सम्प्रदाय में मूर्तिपूजा का भी प्रचलन था[9]। इन्होंने बुद्ध को ईश्वर का अवतार माना। इनका मानना था कि बुद्ध तथा बोधिसत्वों की भक्ति द्वारा निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है। वास्तव में ऐसा करने के पीछे धर्म को लोकप्रिय बनाना था। जिसे उस समय भागवत धर्म से कड़ी चुनौती मिल रही थी। वास्तव में महायान ने देश एवं काल की परिस्थितियों के अनुसार अपने को व्यवहारिक और उपयोगी बनाने का प्रयास किया।

वज्रयान – जैसा हम जानते है छठी शताब्दी ई0 में बौद्ध धर्म का उदय हुआ और छठी शताब्दी तक आते–आते बौद्ध धर्म में अनेक दोष शामिल हो गये तथा अनेक सम्प्रदायों का उद्भव हुआ। जिसमें वज्रयान[10] भी एक महत्वपूर्ण सम्प्रदाय हुआ। यह सम्प्रदाय अनेक मामलों में हीनयान, महायान सम्प्रदायों से अलग था। इसमें स्त्री पूजा का प्रावधान था। इसमें बुद्ध की अनेक पत्नियों का उल्लेख

[8] एस0 के पाण्डे प्राचीन भारत का इतिहास
[9] के सी श्रीवास्तव– पृ0 857
[10] के0सी0 श्रीवास्तव– पृ0 857

हुआ है, जिन्हें चक्रेश्वरी देवी, तारा देवी के नाम से जाना जाता है। इसके सिद्धान्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ मंजु श्री मूलकल्प तथा गुहा समाज में मिलते है।

थेरवाद – थेरवाद सम्प्रदाय श्रीलंका, थाइलैण्ड, म्यांमार, कम्बोडिया, लाओस, बाग्लादेश, नेपाल आदि देशों में बौद्ध धर्म के थेरवाद सम्प्रदाय का प्रभाव है। थेरवाद वास्तव में बुद्ध के मौलिक विचार ही है। इस सम्प्रदाय ने भी कर्मकाण्डों से परहेज किया है। सहिष्णुता एवं दया पर इन्होंने भी बल दिया है।

सवाल यह है कि जब पहले से ही इतना ज्यादा बौद्ध सम्प्रदाय था, तो बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने एक नवीन मार्ग नवयान क्यों चलाया? तब यह जानना आवश्यक हो जाता है कि नवयान अपने पूर्व के हीनयान, महायान, वज्रयान से किस प्रकार अलग था।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने जब बौद्ध धर्म में धर्म परिवर्तन की बात कहीं, तब लोगों को लगा कि वे हीनयान या महायान सम्प्रदाय में से ही किसी को चुनेंगे, लेकिन जब उन्होंने कहा कि उनका धर्म न हीनयान होगा, न महायान होगा। बल्कि एक नवीन बौद्ध धर्म होगा, जो मूल बौद्ध धर्म होगा। जो मूल बौद्ध शिक्षाओं पर आधारित होगा, जिसे नवयान कहा जा सकता है।[11] यह दीक्षा भूमि नागपुर में हिन्दू धर्म की वर्णाश्रम व्यवस्था में सबसे नीचे के पायदान पर रखे गये लोगों द्वारा अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन के लिए 20 वीं सदी में चलाया गया आन्दोलन है।

भारत अश्वघोष लिखते है कि 1956 में बाबा साहेब ने कहा "मै सम्पूर्ण भारत को बौद्धमय बनाऊँगा।"[12] देखा जाय तो यह वह समय था, जब बौद्ध धर्म पतनोन्मुख था और बुद्ध मूर्तिया भी बड़ी मुश्किल से मिलती थी। बड़ी अजीब स्थिति तो तब उत्पन्न हो गयी, जब बुद्ध मूर्ति प्राप्त करने का प्रश्न उठा तब कही बुद्ध मूर्ति मिलना बहुत ही मुश्किल होता था। नागपुर म्यूजियम ने बुद्ध मूर्ति देने से पहले ही इन्कार कर दिया था। बड़ी मुश्किल से बर्मा से लायी गयी एक मूर्ति थी। लेकिन मूर्ति को अपने व्यक्तिगत संग्रह से लेकर एक व्यक्ति ने बाबा साहेब को वो मूर्ति लौटाने की शर्त पर दी। इस तरह से तब उन्होंने दीक्षा ली। आज वही भारत है,

---

[11] विकीपीडिया।

[12] भारत अश्वघोष– भारतीय दलित आन्दोलन का इतिहास, पृ0 110

जहाँ से प्रति वर्ष लाखों की संख्या में बौद्ध प्रतिमाएँ विदेशों में निर्यात की जा रही है। यह बाबा साहेब अम्बेडकर का ही कमाल था कि उसके बाद देश भर में सैकड़ो बौद्ध बिहार निर्मित हुए, हजारों बौद्ध प्रतिमाए गाँव—गाँव, नगर—नगर के गली कूचों में प्रतिष्ठित हुई तथा लाखों लोगों ने अपनी मानवीय विरासत के रूप में बौद्ध धर्म को फिर से अपनाया। इस नये बौद्ध धर्म के मार्ग को नवयान जिसे भीमयान के भी नाम से जाना जाता है। जो मूल बौद्ध सिद्धांत पर आधारित था। जैसा हम जानते है कि भारत में बौद्ध धर्म का जन्म असमानता से समता, सामाजिक एवं धार्मिक शोषण, उत्पीड़न से मुक्ति के दर्शन पर आधारित होकर अग्रसर हुआ। जब बाबा साहेब ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया तथा उसके दिखाए इस राह को उनके अनुयायियों ने अपनाया तो न केवल भारत में बल्कि विश्व में बौद्ध धर्म की प्रतिष्ठा एवं सम्मान में बढ़ोत्तरी हुई। इसके पूर्व बौद्ध धर्म पतनोन्मुख हो चुका था। भारत में यकायक इस तरह के बड़े धर्मान्तरण से सभी आश्चर्य चकित रह गये। वही दलितों को बौद्ध धर्म के रूप में ऐसा समाज मिला, जो समता एवं भाईचारे की भावना पर आधारित था। इस धर्म ने उन्हें भाई—चारे से परिचित कराया।

मई 1956 में बीबीसी लन्दन द्वारा अम्बेडकर की एक वार्ता प्रचारित की गई। जिसका विषय था—'मैं बौद्ध धर्म को क्यों पसन्द करता हूँ और वर्तमान परिस्थितियों में वह संसार के लिए वह क्यों उपयोगी है? बाबा साहेब ने कहा, "मैं बौद्ध धर्म को पसन्द करता हूँ क्योंकि वह समन्वित रूप से तीन सिद्धांत प्रदान करता है। जिन्हें अन्य कोई धर्म नही करता। बौद्ध धर्म प्रज्ञा, करूणा और समता का पाठ पढ़ाता है। यही है वह बात, जो मनुष्य एक सुखी एवं प्रसन्न जीवन के लिए चाहता है। समाज की न तो कोई देवता, और न ही कोई आत्मा सुरक्षा कर सकती है। बौद्ध धर्म ईसाई धर्म की तरह सताए गए और पद दलितों के लिए आशा का एक दीप है।"[13] बाबा साहेब ने जब बौद्ध धर्म स्वीकार किया तो अनेक बातों को, मूल बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को, ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। परन्तु कई ऐसे सिद्धांत थे, जिनको लेकर उनका विरोध था, जैसा कि हम जानते है जब बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया और उसे नया नाम नवयान दिया, उस समय वह

[13] भारतीय दलित आन्दोलन का इतिहास— 4 पृ0 104

नवयान ग्रहण करने वाले लोगों से 22 हिन्दू विरोधी शपथ ग्रहण करवाते थे। जिसके तहत अनेक हिन्दू धर्म विरोधी बातें शामिल थी। जो निम्न थे–

1. त्रिदेवों (ब्रह्म, विष्णु, महेश) की पूजा से इन्कार,
2. गौरी–गणेश पूजन न करना,
3. श्राद्ध, पिण्डदान जैसे धार्मिक कर्मकाण्डों से परहेज जैसे कई बिंदु,

अम्बेडकर को ऐसा लगता था कि दलितों को मुक्ति हिन्दू धर्म के बाहर ही प्राप्त हो सकती है। उन्होंने अपनी पुस्तक जाति का विनाश में, हिन्दू धर्म के वेदो एवं शास्त्रों की निरर्थकता एवं असमानता को उल्लिखित किया। अम्बेडकर का कथन है कि "हिन्दुओं को विचार करना चाहिए कि उन्हें सामाजिक परम्पराओं को संरक्षित करना है या सिर्फ कुछ जरूरी परम्पराओं को चयनित कर विरासत के तौर पर आने वाली पीढ़ियों के लिए आगे बढ़ाना है।" वास्तव में अम्बेडकर हिन्दू धर्म के प्रखर आलोचक के रूप में सामने आये। क्योंकि उनका पूरा जीवन ही सामाजिक विषमताओं एवं धार्मिक अन्यायों के साये में बीता था और इस तरह के हर अवरोध ने उनके हिन्दू धर्म विरोध की चिंगारी को भड़काया। उन्होंने अनेक खुले मंचों से भी हिन्दू धर्म विरोध के स्वर मुखरित किये। अम्बेडकर ने हमेशा ही वेदों की आलोचना किया। हिन्दू धर्म के तौर तरीकों पर आपत्ति जतायी, अछूतों के दमन के लिए और इन अछूतों के लिए दास जैसे शब्द के प्रयोग पर भी न केवल आपत्ति किया, बल्कि कड़े शब्दों में आलोचना किया। उन्होंने आर्यों की उत्पत्ति पर भी कड़े प्रश्न उठाए। अम्बेडकर ने अपने शिक्षक जान डेवी जिनसे वे काफी प्रभावित थे, को याद करते हुए लिखा–"समाज तुच्छ एवं विकृत परम्पराओं से भार ग्रस्त हो जाता है, जैसे ही समाज प्रबुद्ध होता है उसे एहसास होता है। मौजूदा सभी उपलब्धियों को संरक्षित और प्रेषित करना जिम्मेदारी नहीं है बल्कि समाज का भविष्य बेहतर करना जरूरी है।[14]

बाबा साहेब द्वारा आरम्भ किया गया बौद्ध सम्प्रदाय अनेक मामलों में पहले के बौद्ध सम्प्रदाय से पृथक था। जब अम्बेडकर बौद्ध धर्म ग्रहण कर रहे थे, तब भी उन्होंने कहा था कि मेरा बौद्ध धर्म न हीनयान होगा, न महायान होगा बल्कि यह नवीन मार्ग होगा, जिसे नवयान कहा जा सकता है। अम्बेडकर का बौद्ध धर्म

[14] जाति का विनाश–बाबा भीमराव अम्बेडकर अनुवाद राजकिशोर पृष्ठ 121

तार्किकता, स्पष्टता, मानवतावाद और वैज्ञानिक प्रकृति पर आधारित था। बाबा साहेब के नवजात धर्म में पारिव्राजक की पारम्परिक अवधारणा को लेकर संशय न था। उनका मानना था कि बौद्ध मोक्ष दाता के बजाय मार्गदाता है। स्वयं महात्मा बुद्ध ने परिवार के सदस्यों को बताकर ही ज्ञान प्राप्ति हेतु गृहत्याग किया। बाद में उनके ही घर के सदस्यों ने उनके धर्म की सदस्यता ग्रहण किया। वास्तविक बौद्ध धर्म में स्वार्थ विहीनता की बात रखी गई। इसमें सामूहिक पहचान पर विशेष ध्यान दिया गया, न की एकल पहचान पर। यही कारण है कि बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने नवयान धर्म के माध्यम से सामूहिकता पर विशेष बल देने हेतु नवयान द्वारा मूल बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों में सुधार किया। जो कि तत्कालीन समाज की ही नहीं बल्कि राजनीति सुधारों की भी एक व्यापक माँग रही है।

नवयान सिद्धान्त जहाँ अनेक मामलों में बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों पर विश्वास करता था। वही अनेक ऐसे सिद्धान्त थे, जिन पर बाबा साहेब का विरोध था। जैसे महात्मा बुद्ध के चार आर्यसत्य जो इस प्रकार थे।

1. दुःख
2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध
4. दुःख निरोधमार्ग

बाबा साहेब को इन कुलीन सत्यों पर आपत्ति थी। उनका मानना था कि यदि जीवन ही दुःखमय है, जो दुःखों पर आधारित कोई सामाजिक व्यवस्था बनायी नहीं जा सकती है। उनका मानना था कि यदि हम जीवन को दुःखमय मान ले तो हम अपनी वर्तमान स्थिति में ही सन्तुष्ट हो जायेंगे और उसे बदलने की कोशिश नहीं करेगे। जिसे किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि यदि किसी भी व्यक्ति में अपने वर्तमान कष्ट से निकलने का साहस न होगा तो वह अपनी स्थिति में परिवर्तन कैसे करेगा। यदि परिवर्तन नहीं किया तो उसको दुःखों से मुक्ति नहीं मिलेगी। उसका जीवन दुःखों एवं कष्टों से घिरा ही रहेगा। इसलिए यदि किसी व्यक्ति को दुःखों से मुक्ति चाहिये तो उसे अपने प्रयासों द्वारा दुःखों को समाप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। इसीलिए जीवन दुःखमय है, जैसे बौद्ध

सिद्धान्त में वे विश्वास नहीं करते थे। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी यथाशक्ति दुःखों से मुक्त होने का प्रयास करना होगा।

अम्बेडकर ''दुःख को सामूहिक सामाजिक पीड़ा के रूप में समझते थे, उनके लिए पीड़ा सामाजिक तौर पर निर्मित और ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट थी। जिसे सिर्फ एक धर्म ने अपने नैतिक ढ़ाँचे के केन्द्र में रखकर पार किया है, वो है बौद्ध धर्म। बौद्ध धर्म ही अछूतों को हिन्दुओं के हाथों भेदभाव और मानहानि से बचा सकता थी''[15]।

नवयान सम्प्रदाय ने पुनर्जन्म की अवधारणा को स्वीकार नहीं किया। बौद्ध धर्म का पुनर्जन्म सिद्धान्त व्यक्ति की मुक्ति पर केन्द्रित था। बल्कि नवयान का सिद्धान्त व्यक्ति की मुक्ति पर केन्द्रित न होकर सामूहिक मुक्ति पर केन्द्रित था। इसका उद्देश्य इस जीवन को ही बेहतर बनाना था, न कि मृत्यु के बाद बेहतर की उम्मीद रखना।

नवयान सम्प्रदाय में भी निर्वाण प्राप्ति अहम था। परन्तु उसके निर्वाण की अवधारणा विलकुल अलग थी। नवयान का लक्ष्य लौकिक जीवन के अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करना मुख्य लक्ष्य था, न कि सार्वभौमिक व्यक्ति की कोरी कल्पनाओं के बजाय। नवयान के अनुसार निर्वाण केवल स्वमुक्ति पर केन्द्रित नहीं था। बल्कि इसका उद्देश्य समाज में सम्मान एवं समतापूर्ण समाज स्थापित होने पर विशेष बल था। बाबा साहेब का मानना था कि जो मनुष्य दूसरे की पीड़ा नहीं समझ सकता वह निर्वाण का अधिकारी कैसे हो सकता है। बाबा साहेब को पुरोहितों में यकीन नहीं था। उनका मानना था कि यदि बौद्ध धर्म पंडितों एवं बुद्धिजीवियों की संस्था बन गई तो यह समाज में भय उत्पन्न करेगी और ऐसी स्थिति में यह भारत में अछूतों को बौद्ध धर्म स्वयं में शामिल नहीं कर पाएगा। अतः आवश्यक है कि बौद्ध संस्थाएं सद्भाव, सम्मान पर अपना कार्य करें। इसलिए बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने नवयान के माध्यम से बौद्ध धर्म को विश्वास में लेने के लिए बौद्ध समुदायों को पुनर्गठित किया। भिक्षु, भिक्षुणी, उपासकों के समकक्ष हो, ऐसी व्यवस्था बनाई गई। बाद में समाज सेवा भिक्षु की छवि से जोड़ दी गई, ऐसा इसलिए किया गया कि भिक्षु आत्मज्ञान और आत्मअनुभवों वाली असामाजिक व्यवस्था का हिस्सा न

[15] विकीपीडिया

बनाने पाए।[16] ऐनी एम0 बलैकवर्न का दृष्टिकोण अलग है। उनके अनुसार, ''अम्बेडकर ने एक ऐसे विचार को अभिव्यक्त किया, जिसमें एक व्यक्ति की भावनाएँ योग्य एवं सामाजिक जिम्मेदारी दोनों ही समानता एवं धार्मिक दण्ड जैसी ताकतों से पैदा होते है और बनाये रखते है। इससे सामाजिक असमानता को सुधारा जा सकता है। हालांकि सामान्य रूप में यह शक्ति एकता के बोध से नहीं आती है।''[17]

बाबा साहेब का मानना था कि प्राचीन बौद्ध धर्म में समाज सुधार की तीव्र परम्परा थी। उनका ऐसा मानना था कि समाज में जो विकृति है उन्हें समाप्त कर मूल्यों की रक्षा बौद्ध धर्म करने में सक्षम है। निश्चित रूप से वे इस विचार से न केवल सहमत थे, बल्कि अनेक ऐसे बौद्ध सिद्धान्तों पर विश्वास करते थे। जो मानव जीवन में समानता, भ्रातृत्व भाव की स्थापना कर सकता है। नवयान धर्म न केवल सामाजिक, धार्मिक सुधार के उद्देश्य से आरम्भ हुआ, बल्कि इसका राजनीतिक, नैतिक आधार भी था। बाबा साहेब का मानना था कि यह नैतिकता के बजाय राजनीतिक क्षेत्र में सामाजिक असमानता को चुनौती देगा।

वर्तमान भारत में जब–जब भगवान बुद्ध को स्मरण किया जाता है, तब–तब स्वाभाविक रूप से भीमराव अम्बेडकर का भी नाम लिया जाता है। बौद्ध धर्म के अनेक मूल सिद्धान्तों को बाबा साहेब ने ज्यो का त्यों स्वीकार किया। परन्तु अनेक ऐसे सिद्धान्त थे, जिन पर उनका सवाल था और उन्होंने उसे सुधार कर अपनाया जैसे – चार आर्य सत्य, पुनर्जन्म, निर्वाण सम्बधी अवधारणा आदि बौद्ध धर्म के अन्य सिद्धान्तों को न अपनाने के पीछे और एक नवीन सम्प्रदाय नवयान आरम्भ करने के पीछे प्रमुख कारण था, समय के साथ इसमें शामिल हुई अनेक प्रथाएँ जैसे महायान में बुद्ध की मूर्ति पूजा का आरम्भ होना। हालांकि बाबा साहेब ने भी अपनी दीक्षा के अवसर पर महात्मा बुद्ध की प्रतिमा के समक्ष बौद्ध धर्म ग्रहण किया था, लेकिन वे महात्मा बुद्ध को एक शिक्षक ही मानते थे। जैसा कि मूल बौद्ध धर्म में भी महात्मा बुद्ध ने स्वयं को एक शिक्षक ही माना था, न कि ईश्वर। बाबा साहेब ने धार्मिक कर्मकण्डों का पुरजोर विरोध किया। जो समय के साथ बौद्ध धर्म के सम्प्रदायों में शामिल हो गयी थी। बज्रयान जैसे सम्प्रदाय ने भगवान बुद्ध की स्त्री संगिनी को

[16] जाति का विनाश– बाबा भीमराव अम्बेडकर– अनुवाद राजकिशोर पृष्ठ 118
[17] विकीपीडिया

विशेष स्थान दिया। जैसे तारा देवी, चक्रेश्वरी देवी आदि। बाबा साहेब ने इसे नही माना। वास्तव में जिस एक चीज ने बाबा साहेब को बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित किया वह समानता का बौद्ध दृष्टिकोण। दलित समाज, हिन्दू धर्म में शोषण, अपमान से त्रस्त था और उसे मोक्ष का भी अधिकार नहीं था, जबकि बौद्ध धर्म सभी को निर्वाण का अधिकारी मानता था।

बाबा साहेब के अपने कुछ महत्त्वपूर्ण विचार[18] थे : जो निम्न है –

1. जीवन लम्बा होने के बजाय महान होना चाहिए।
2. मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ, जो स्वतन्त्रता, समानता एवं भाईचार सिखाता है।
3. यदि हम एक संयुक्त, एकीकृत, आधुनिक भारत चाहते है तो सभी धर्मों के शास्त्रों की सम्प्रभुता का अंत होना चाहिए।
4. हिन्दू धर्म में विवेक, कारण और स्वतन्त्र सोच के विकास के लिए कोई गुंजाइश नहीं है।
5. इतिहास बताता है कि जहाँ नैतिकता और अर्थशास्त्र के बीच संघर्ष होता है, वहाँ जीत हमेशा अर्थशास्त्र की होती है। निहित स्वार्थी को तब तक स्वेच्छा से नहीं छोड़ा गया है, जब तक मजबूर करने के लिए पर्याप्त बल न लगाया गया हो।
6. बुद्धि का विकास मानव के विकास का अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए।
7. समानता एक कल्पना हो सकती है, लेकिन फिर भी इसे एक आवश्यक सिद्धान्त रूप में स्वीकार करना होगा।
8. यदि मुझे लगा कि संविधान का दुरूपयोग किया जा रहा है तो मैं इसे सबसे पहले जलाऊँगा।
9. जब तक आप सामाजिक स्वतंत्रता नहीं हासिल कर लेते कानून आपको जो भी स्वतन्त्रता देता है, वो आपके लिए बेमानी है (ये वे विचार थे, जो बाबा साहेब के नवयान में भी ध्वनित होते थे)[19]।

इसलिए कहा जा सकता है कि नवयान कोई अलग सम्प्रदाय नहीं था। बल्कि बौद्ध धर्म के मूल सिद्धान्तों पर आधारित एक नवीन मार्ग था। जिसका

[18] विकीपीडिया
[19] विकीपीडिया

उद्देश्य बौद्ध धर्म में शामिल हो गई कुरीतियों का त्याग कर मूल बौद्ध सिद्धान्तों को स्वीकार करना और दलित, पीड़ित, शोषित को निर्वाण मार्ग का अधिकारी बनाना, समाज में सम्मान प्राप्त करने के योग्य बनाना।

इसलिए कई बिन्दुओं पर अलग–अलग मत होते हुए भी महात्मा बुद्ध के उपदेशों को ही नवयान का आधार बनाया और अपनी 22 प्रतिज्ञाओं के माध्यम से हिन्दू धर्म के अनेक नियमों की अवहेलना की। वे भगवान के अवतार जैसे सिद्धांतों में विश्वास नहीं करते थे। जब हिन्दू भगवान बुद्ध को विष्णु का अवतार मानते थे। तब वे इसे कोरी कल्पना, पागलपन एवं झूठा प्रचार–प्रसार मानते थे।

बाबा साहेब के नवयान का उद्देश्य समाज में समता स्थापित कर, समानता की भावना पर बल देना था। वहीं अष्टांगिक मार्गों पर चलकर निर्वाण प्राप्ति पर उन्हें पूरा विश्वास था। उनका मानना था कि ये सिद्धांत न केवल व्यक्ति का परलौकिक उत्थान करते है, बल्कि मानसिक अभ्युदय में भी सहायक बनते है। व्यक्ति अष्टांगिक मार्ग पर चलकर श्रेष्ठ कर्म करने लगता है और उसका व्यक्तित्व भगवान बुद्ध के मार्ग पर चलकर सन्तुष्टि को प्राप्त करता है। उन्होंने बुद्ध द्वारा निर्धारित परमिताओं के पालन पर विशेष बल दिया। बाबा साहेब बौद्ध धर्म के करूणा, दया के सिद्धांत से विशेष प्रभावित थे। इसलिए नवयान की 22 प्रतिज्ञाओं में उन्होंने दयालुता एवं करूणा पर विशेष ध्यान दिया। ताकि प्रत्येक प्राणी दूसरे के कल्याण में आत्मकल्याण की अनुभूति प्राप्त कर सके। उन्होंने बौद्ध धर्म के दस शीलों को बेहद महत्वपूर्ण माना। उन्होंने नवयान में 22 सिद्धांतों में चोरी न करने, झूठ न बोलने, बुरे कर्मों से दूर रहने, परपाप (कामुक पाप) तथा कोई भी मानसिक या शारीरिक अवगुणों से जैसे मादक पदार्थों के सेवन से दूर रहने पर विशेष बल दिया। क्योंकि वह जानते थे कि ये अवगुण ही मानवता की दुर्दशा के लिए विशेष रूप से जिम्मेदार है। ये मनुष्य को मानसिक अधःपतन की ओर ले जाते है जो न केवल उन्हें आर्थिक चोट पहुँचाते है, बल्कि उनका सामाजिक स्तर भी गिराता है। अतः बाबा साहेब ने दश शीलों पर विशेष बल दिया। जहाँ बौद्ध धर्म का उद्भव ही हिन्दू धर्म में आये जटिलताओं एवं कर्मकाण्डों की बहुलता के कारण हुआ था। जब भीमराव अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया तो उसके पीछे कारण हिन्दू धर्म

द्वारा दलितों का शोषण ही था। जो कि बौद्ध धर्म एवं नवयान में एक महत्वपूर्ण समानता का बिन्दु था।

अतः कहा जा सकता है कि बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के नवयान द्वारा महात्मा बुद्ध के मूल सिद्धांतों को ही अपनाया गया था, न कि बाद में शामिल हुए अन्य तत्वों को। जिस कारण बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने इस धर्म को अपनाया था। निश्चित रूप से दलित समाज को वो समानता, बंधुत्व की भावना इस धर्म में प्राप्त हुई। बाबा साहेब ने धर्म परिवर्तन क्यों? विषय पर बोलते हुए 31 मई 1936 को दादर (बम्बई) में कहा था कि ''मैं स्पष्ट शब्दों में कहना चाहता हूँ। मनुष्य धर्म के लिए नहीं बल्कि धर्म मनुष्य के लिए है। अगर मनुष्यता की प्राप्ति करनी है तो धर्म परिवर्तन करों, स्वतंत्रता से जीविका उपार्जन करना चाहते हो तो धर्म परिवर्तन करों अपने परिवार एवं कौम को सुखी बनाना चाहता हो तो धर्म परिवर्तन करो''।[20]

बौद्ध धर्म के प्रति उनके हृदय में कितना अधिक सम्मान था, यह उनके कथनों में स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने कहा था कि ''धर्म की सबको बहुत जरूरत है मेरे मत से यह बात निश्चित है कि धर्म के बिना समाज जागृत नहीं हो सकता है। समता, मैत्री, बंधुभाव यह भी बाते संसार के उद्धार के लिए आवश्यक होती है और ये बुद्ध धर्म में ही मिल सकती है। मैने 20 वर्षों से धर्म का अध्ययन किया है, सभी धर्मों का अध्ययन करने के बाद संसार को बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेना चाहिए, ऐसा मेरा मत है''।[21]

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने अपने धर्मान्तरण से पूर्व यह घोषणा किया कि ''मैं बौद्ध सिद्धांतों को मानता हूँ और उनका पालन करूंगा। मैं अपने लोगों (महार) को दोनों धार्मिक पंथ हीनयान और महायान के विचारों से दूर रखूँगा। हमारा बौद्ध धर्म एक नया बौद्ध धम्म है, नवयान।''[22]

वास्तव में देखा जाय तो नवयान आधुनिक भारतीय बौद्ध धर्म का एक सम्प्रदाय है। जिसे बींसवी शताब्दी के लिए उपयुक्त बताया गया है। देखा जाय तो बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने जिन सामाजिक समस्याओं यथा भेदभाव से,

---

[20] बुद्ध और उनका धम्म – बाबा भीमराव अम्बेडकर
[21] विकीपीडिया
[22] जाति का विनाश – बाबा भीमराव अम्बेडकर अनुवाद राजकिशोर

बचपन में त्रस्त हुए थे। उनसे प्रेरित होकर उन्होंने अछूतों (अस्पृश्यों) के कल्याण हेतु उन्होंने नवयान की स्थापना किया।

ऐनी एम0 व्लैकवर्न के अनुसार अम्बेडकर बौद्ध धर्म, धर्म, समानता और राष्ट्रवाद को एक दूसरे से सम्बंधित शब्दावली समझते थे। जिसके सामाजिक राजनीतिक निहितार्थ होते है। अम्बेडकर बौद्ध धर्म को एक आदर्श समुदाय के रूप में स्थापित करना चाहते थे। जो विचारधाराओं के स्तर पर समावेशी, लेकिन ब्राह्मणवादी हिन्दू धर्म और भारतीय राष्ट्रवाद के मातहत न हो।[23]

अम्बेडकर हिन्दू धर्म के धार्मिक प्रतिरोधों से इतने ज्यादा त्रस्त हो गये थे कि उन्हें हिन्दू धर्म का त्याग ही जरूरी समझा। अम्बेडकर ने अछूतों द्वारा बौद्ध धर्म आत्मसात करने को आवश्यक माना। क्योंकि बौद्ध धर्म सामाजिक सम्मान पर आधारित धर्म था। जैसा कि वेली महादेव बताते है कि ''बौद्ध धर्म सामाजिक समरसता, भक्ति के बजाय सम्मान पर आधारित था। इसलिए बाबा साहेब बौद्ध धर्म की तरफ आकर्षित हुए।''[24] अपने धर्म परिवर्तन के समय अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म के बृहद रूप के कारण इसे देश के लिए कम हानिकारक बताया। चूँकि बचपन से ही अम्बेडकर ने जाति का त्रास झेला था। अतः बाबा साहेब द्वारा आरम्भ बौद्ध दलित आन्दोलन जिसे नव बौद्ध आन्दोलन भी कहा जाता है। वास्तव में यह उन लोगों का अपनी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन करने के इच्छुक लोगों का संघर्ष था। जो वर्णाश्रम व्यवस्था में सबसे नीचले पायदान पर रखे गये थे। इसे अछूत, अस्पृश्य लोगों को मानवाधिकार दिलाने के लिए 20 वीं सदी में भारतीय नेता डॉ0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा चलाया गया। यह आन्दोलन एक महत्त्वपूर्ण आन्दोलन था। जिसका मकसद दलितों का उत्थान था। अम्बेडकर मानते थे कि दलितों का लम्बे समय से जो शोषण हो रहा है, उसकी समाप्ति हिन्दू धर्म के भीतर रह कर नहीं किया जा सकता है। बिना सुधार के सामाजिक उत्थान सम्भव नहीं हो सकता है, क्योंकि यह लम्बे समय तक परम्पराओं में रह चुकी है।

अतः आवश्यक है कि अब हमें यानि दलितों को एक ऐसा धर्म, जो विचारधारात्मक रूप से स्वान्त्रत्य, समानता एवं बंधुत्व की शिक्षा देता हो, वहीं धर्म

---

[23] विकीपीडिया
[24] विकीपीडिया

अपनाना चाहिए[25]। दलितों को लगा कि हिन्दू धर्म से निकलना ज्यादा आवश्यक है, तभी उनको समाज में सही स्थान प्राप्त होगा और उनकी हालत में सुधार होगा।

दलितों का नवबौद्ध धर्म ग्रहण करने से उनकी स्थिति पर प्रभाव पड़ा। उनकी हालत में सुधार आया, जबकि हिन्दू दलितों की स्थिति कमोवेश वैसी ही रही, हिन्दू दलित वोट बैक के रूप में इस्तेमाल होने लगा।

☆☆☆

[25] विकीपिडिया

अध्याय–4

नव बौद्ध आंदोलन

के

उद्‌भव का कारण

(दलित चेतना के संबंध में)

नव बौद्ध आंदोलन के उद्‌भव का कारण (दलित चेतना के संबंध में)

भारत के संविधान निर्माता डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को बौद्ध धर्म अपनाया था। उन्होंने नागपुर के शिवाजी पार्क में लगभग पांच लाख लोगों के साथ बौद्ध भिक्षु से पारम्परिक तरीके से तीन रत्न ग्रहण कर पंचशील अपनाया था। पश्चातकालिक समय में पहली बार लुम्बनी से बोधगया होते हुए वे 23 नवंबर 1956 को काशी पहुंचे थे। और सारनाथ में दर्शन किया था। इस दौरान जब वह वाराणसी के कैन्ट स्टेशन पर रात के एक बजे पहुंचे तो वहां बीएचयू के छात्रों और एम0 संघरतन, प्रभु नारायण सिंह, एम0एल0सी0 जगन्नाथ उपाध्याय इत्यादि लोगों ने बौद्ध अनुयायी का भव्य स्वागत किया था। इसके बाद वह सारनाथ के बौद्ध मंदिर पहुंचे। उसके दूसरे दिन सुबह 24 नवंबर को बीएचयू गए। 24 नवंबर को बाबा साहेब ने सारनाथ में आयोजित सभा में कहा था कि प्रत्येक बौद्ध के लिये आवश्यक है कि वह प्रत्येक रविवार को बौद्ध बिहार में जाए और वहां उपदेश सुने। बौद्ध धर्म केवल अछूतों के लिए ही नहीं बल्कि मानव समाज के लिये कल्याणकारी धर्म है। इसके पश्चात बीएचयू में 24 नवंबर 1956 को बीएचयू के छात्रसंघ ने बाबा साहब के स्वागत के लिए आट्र्स कॉलेज के मैदान में समारोह का आयोजन किया गया था। डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने छात्रों को संबोधित करते हुए धर्म और संविधान पर कहा कि इस बात पर गंभीरता से विचार करना चाहिए, क्या हमारे धर्मशास्त्रों में वर्णित जीवन–पद्धति हमारे संविधान से मेल खाती है या नही।

24 नवंबर को ही काशी विद्यापीठ के छात्रसंघ के उद्‌घाटन करते हुए बाबासाहेब ने कहा कि बुध के धर्म का प्रारम्भ ठोस आधार पर हुआ है, वह मानव धर्म है। मानव कल्याण के लिये उससे बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है।[1]

दलितों में धर्म परिवर्तन का कारण

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को बौद्धधर्म को 5 लाख अनुयायियों के साथ ग्रहण किया। बाबा साहेब ने बौद्ध धर्म ग्रहण करने से पूर्व ही हिन्दू धर्म में अपनी आस्था समाप्त होने की घोषणा कर दिया। उनका कहना था कि

[1] https://www.bhaskar.com/news/UP-VAR-b-r-ambedkar-death-anniversary-story-sarnath-varanasi-4964010-PHO.html?sld_seq=1 last accessed on12/6/2019

वे ऐसे धर्म में नहीं रह सकते है, जो दलितों एवं शोषितों से उनके सम्मानपूर्वक जीने का हक छीन लेता है। हिन्दू धर्म सामाजिक तौर पर दलितों को अस्पृश्य बना देता है। धार्मिक क्रिया कलापों से उन्हें वंचित कर देता है। उनके श्रम का शोषण करता है। श्रम मूल्य से उन्हें वंचित कर देता है। और इन सब के पीछे जिम्मेदार ठहराता है, उनके पूर्व जन्म के कर्म को ताकि वे इस शोषणकारी स्थिति को नियति स्वीकार कर ले।

ध्यातव्य है कि दलितों की आबादी भारत की कुल आबादी का लगभग 20 प्रतिशत है। 19 वीं शताब्दी में जब धर्म सुधार तीव्र हुआ और समाज में रूढ़ियों, कुरीतियों के सुधार पर बल दिया जाने लगा। मानव अधिकारों की बात होने लगी। तब दलितों, पिछड़ों में भी अपनी स्थिति को बदलने की भावना जागृत हुई। तत्कालीन धर्म सुधारकों ने उनकी स्थिति में सुधार पर जोर दिया। इसके लिए आवश्यक था कि उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया जाय। राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित की जाय और इस कार्य को करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया दलित सुधारकों ने, जैसे ज्योतिबा फूले, बी0 आर0 शिन्दे, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर आदि ने। जब बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने धर्म परिवर्तन किया। तब इतनी बड़ी मात्रा में लोगों द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने से तत्कालीन हिन्दूसभा में खलबली मच गई। सवाल उठा कि आखिर इतनी बड़ी मात्रा में लोगों ने क्यों धर्म परिवर्तन किया? तो निश्चित रूप से इस धर्म परिवर्तन के पीछे बहुत से कारण जिम्मेदार थे। जिन्हें विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। जो निम्न है–

सामाजिक कारण –

ऋग्वेद के 'दशम मण्डल' के 'पुरूष शूक्त' में चतुवर्ण का जिक्र हुआ है।[2] जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र थे। इसमें शूद्र को वर्णक्रम में सबसे निम्न माना गया। जिसका कर्तव्य उपर्युक्त तीनों वर्णों की सेवा करना था। इस वर्ण पर समय के साथ अनेक सामाजिक प्रतिबंध भी लगते गये। बेगार करना, बंधुआ मजदूरी, अस्पृश्यता, सार्वजनिक रास्तों पर चलने पर प्रतिबंध, मंदिरों में पूजा–अर्चना पर प्रतिबंध, सही तरीके से देखा जाये तो सभी सामाजिक क्रिया कलाप जो मानव होने के कारण उनका सार्वभौमिक अधिकार था, उससे उन्हें वंचित किया गया। यहाँ तक

[2] प्राचीन भारत का इतिहास – के0सी0 श्रीवास्तव

कि रामचरित्र मानस (तुलसीदास कृत) में कहा गया है कि ''**ढोल, गॅवार, शूद्र, पशु, नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी**''[3] **।** मराठों के देश में पेशवाओं के काल में अछूत को उस सड़क पर चलने की अनुमति नहीं थी, जिस पर कोई सवर्ण हिन्दू चल रहा हो, ताकि उसकी छाया से हिन्दू अपवित्र न हो जाये। उसके लिए आदेश था कि वह एक चिन्ह या निशानी के तौर पर अपनी कलाई में या गले में काला धागा बांधे रहे, ताकि कोई हिन्दू गलती से उसे छू जाने पर अपवित्र न हो जाये। यहाँ तक की कमर में झाडू बांधने जैसा रिवाज भी था[4]। ताकि वह जिस जमीन पर पैर रखे वह उसके पीछे बंधी उस झाडू से साफ हो जाये, ताकि उस जमीन पर पैर रखने से कोई हिंदू अपवित्र न हो जाये। यहाँ तक कि गले में मिट्टी की हांडी बांधकर चले जैसे आदेश ताकि जब वह थूके उसी में थूके ताकि जमीन पर पड़ी हुई अछूत की थूक पर अनजाने में किसी हिन्दू का पैर पड़ जाने से वह अपवित्र न हो जाये।[5] यहाँ तक की 1892 में कांग्रेस के आठवें अधिवेशन में श्री बनर्जी का कथन था कि ''कम से कम मैं उन लोगों से सहमत नहीं हूँ, जो कहते है कि जब तक सामाजिक व्यवस्था को हम सुधार नहीं लेते तब तक हम राजनीतिक सुधार के योग्य नहीं है। मुझे इन दोनों के बीच कोई सम्बन्ध दिखाई नहीं देता। क्या हम राजनीतिक सुधार योग्य इसलिए नहीं है कि क्योंकि हमारी विधवाओं का विवाह नहीं होता और हमारी लड़कियों की शादी दूसरे देशों की तुलना में कम उम्र में कर दी जाती है। क्योंकि हमारी पत्नियां और पुत्रियाँ हमारे साथ गाड़ी में बैठकर हमारे मित्रों से मिलने नहीं जाती और क्योंकि हम अपनी बेटियों को आक्सफोर्ड और कैब्रिज में पढ़ने के लिए नहीं भेजते ? निश्चित रूप से यह घृणित दृष्टिकोण था। वास्तव में दलितों की स्थिति के लिए सामाजिक सुधार एवं राजनीतिक सुधार दोनों की जरूरत थी।

अस्पृश्यता की घटनाएँ लगातार और वीभत्स रूप से व्यवहृत थी। 1928 ई0 में टाइम्स ऑफ इण्डिया ने भी रिपोर्ट दी थी कि इंदौर के सवर्ण हिन्दुओं यानी कालोही, राजपूतों और ब्राह्मणों, कनात्या, विचोली हफ्सी, विचोली मर्दाना तथा पन्द्रह अन्य गाँव के पटेलों और पटवारियों ने बलाई जाति के लोगों को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। उन्हें कपड़े, सोने, चांदी के गहने पहनने से रोक दिया गया। बिना

[3] तुलसीदास– रामचरित मानस
[4] जाति का विनाश– बाबा भीमराव अम्बेडकर अनुवाद राजकिशोर पृ0–41
[5] जाति का विनाश – डा0 भीमराव अम्बेडकर अनुवाद राज किशोर पृ0–41

मेहनताना माँगे उन्हें सेवाएँ देने के लिए बाध्य किया गया और जिन्हें यह नियम स्वीकार न था, उन्हें गॉव छोडकर चले जाने को कहा गया।[6]

जब बलाईयों ने इन नियमों को मानने से इंकार कर दिया तथा हिन्दुओं ने उन्हें प्रताड़ित करना शुरू कर दिया, सार्वजनिक कुओं से पानी लेने पर रोक लगा दी गई तथा मवेशी को चारागाहों पर जाने से मना कर दिया गया। यहाँ तक हिन्दुओं के जमीन से गुजरने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। यहॉ तक कि उनकी खेतों, फसलों को नुकसान पहुँचाया गया और रियासत भी इसमें उनकी कोई मद्‌द नहीं कर पायी।[7]

इस तरह दलितों पर अत्याचार दिनों–दिन बढ़ता ही जा रहा था। सामाजिक स्थिति विद्रूपता की शिकार हो गई थी। कुछ अन्य रियासतों में भी इस तरह की घटनाएं लगातार घट रही थी। ऐसी घटना जयपुर रियासत में चकवारा गाँव में भी हुई[8]। वहाँ पर तो धार्मिक अवसर पर भोज निमंत्रण के दौरान हिन्दुओं ने भारी उत्पात मचाया। वजह सिर्फ इतनी थी कि कैसे एक दलित अच्छा भोजन कर सकता था। अछूत मेजबान घी से बना हुआ भोजन अपने मेहमानों को खाने में परोस रहा था और वे गरीब अछूत मेहमान इतने मूर्ख थे कि घी का बना खाना खा रहे थे। जो केवल सवर्ण हिन्दुओं के खानपान की चीज थी। ऐसी घटनाएँ बताती है कि दलित न सम्मान के साथ जी सकता था, न मर सकता था।

गुजरात के कविथा ग्राम में हिन्दुओं ने अछूतों को उनके बच्चों को सरकारी स्कूल में न पढ़ाने के लिए कहा[9] और इसका उल्लघंन करने के कारण हिन्दूओं ने अछूतों पर घोर अत्याचार किया। क्योंकि उन्होंने अपने नागरिक अधिकारों के उपभोग करने की हिम्मत दिखाई थी। यहाँ तक की बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर को भी अपने सामाजिक जीवन में बचपन से लेकर उनके पूरे जीवन काल में सामाजिक भेदभाव की कडवी सच्चाई से सदैव रूबरू होना पड़ा। उनका मन इस विद्रूपता से व्यथित हो जाता था। इसलिए वे अकसर कहते थे कि ‘‘जब आप अपने ही देशवासियों के एक बड़े हिस्से की जैसे अस्पृश्यों को, सरकारी स्कूलों में पढ़ने

[6] – जाति का विनाश–डा0 भीमराव अम्बेडकर अनुवाद राज किशोर पृ0–41
[7] –जाति का विनाश–डा0 भीमराव अम्बेडकर अनुवाद राज किशोर पृ0–43
[8] – जाति का विनाश–डा0 भीमराव अम्बेडकर अनुवाद राज किशोर पृ0–44
[9] जाति का विनाश–डा0 भीमराव अम्बेडकर अनुवाद राज किशोर पृ0–43

नहीं देते तो क्या तब भी आप राजनीतिक सत्ता पाने की योग्यता रखते है। जब आप उन्हें सार्वजनिक कुओं से पानी नहीं लेने देते तब भी क्या आप राजनीतिक सत्ता पाने की योग्यता रखते है। जब आप उन्हें उनकी इच्छानुसार कपड़े गहने पहनने की अजादी नहीं देते हो तब भी क्या आप राजनीतिक सत्ता पाने की योग्यता रखते है। जब आप उन्हें उनकी मर्जी के अनुसार खाना खाने नहीं देते हो, क्या तब भी आप राजनीतिक सत्ता पाने की योग्यता रखते हैं। मैं ऐसे सवालों की झड़ी लगा सकता हूँ'' पर इतने ही काफी है। वास्तव में दलितों का इतना ज्यादा सामाजिक तिरस्कार हुआ था कि वे हिन्दू समाज में घुटन महसूस करने लगे। जब भीमराव ने तथा अन्य समाज सुधारकों ने उनके जीवन में तत्काल सुधार लाने की कोशिश किया, तब दलितों ने भी अपनी स्थिति से लड़ने का संकल्प लिया। इस संकल्प को आगे बढ़ाया बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने। सामाजिक सुधार के साथ राजनीतिक भूमिका पर भी भी बल दिया। अतः कहा जा सकता है कि इन सामाजिक शोषणों, तिरस्कारों ने दलितों को बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के साथ धर्म परिवर्तन को प्रेरित किया।

धार्मिक कारण –

जब बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने धर्मान्तरण किया, तब उनके साथ 5 लाख के करीब हिन्दू दलितों ने बौद्ध धर्म अपनाया। इसे देखकर हिन्दू समाप्त अचंम्भित हो उठा। उसे हिन्दू समाज के विखंड की गम्भीर चिन्ता व्याप्त हो गई। सवाल स्वाभाविक था कि अखिर ऐसा हुआ क्यों? उसका जवाब बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने देते हुए कहा कि ''धर्म की सबको बहुत जरूरत है। मेरे मत से यह बात निश्चित है कि धर्म के बिना समाज जागृत नहीं हो सकता है। समता, मैत्री, बंधुभाव यह भी बाते संसार के उद्वार के लिए आवश्यक होती है और ये बुद्ध धर्म में ही मिल सकती है। मैने 20 वर्ष से धर्म का अध्ययन किया है, सभी धर्मों का अध्ययन करने के बाद संसार को बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेना चाहिए, ऐसा मेरा मत है''[10] कथन– बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर। बौद्ध धर्म ग्रहण करने के पीछे हिन्दू धर्म की जाटिलता, कर्मकाण्डों की प्रधानता एवं दलितों, अस्पृश्यों को पूजा के अधिकार से वंचित करना शामिल रहा। वास्तव में हिन्दू धर्म एक कानून हैं जो

[10] विकीपीडिया

सर्वोत्तमतः एक वर्ग नैतिकता का कानूनी रूप है। बाबा साहेब ने आदेशों, निषेधों की इस संहिता को धर्म मानने से इंकार कर दिया। इस संहिता, जिसे धर्म बताकर गुमराह किया जाता है कि कई बुराईयां थी। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण स्वतंत्रता और स्वाभाविकता के नैतिक जीवन से मनुष्य को वंचित कर देती है और इसे (कम से कम विवेकवान लोगों के लिए) एक बाहर से आरोपित नियमों के प्रति उद्विग्नता तथा दासतापूर्ण समर्पण के लिए बाध्य कर देती है। इसके तहत आदेश के प्रति समर्पण के लिए कोई जगह नहीं है।[11] हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी बुराई, वे पुजारी वर्ग की प्रधानता को मानते थे। उनका मानना था कि पुजारी वर्ग के लिए जन्म ही मानक नहीं होना चाहिए, बल्कि पौरोहित्य कर्म के लिए अन्य आवश्यक मानक भी होने चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो ''पुजारी मानसिक स्तर पर मूर्ख हो सकता है। शारीरिक स्तर पर उसे कोई गंदा रोग हो सकता है।''[12] हिन्दू एण्ड़ वाण्ट ऑफ पब्लिक कांसस' में डॉ0 अम्बेड़कर कहते है[13] कि ''दूसरे मुल्कों में जाति की व्यवस्था आर्थिक एवं सामाजिक कसौटियों पर टिकी हुई है। गुलामी और दमन को धार्मिक आधार नहीं मिला हुआ है। किन्तु हिन्दू धर्म ने छुआछूत के रूप में उत्पन्न गुलामी को धार्मिक स्वीकृति दी है। इसलिए गुलामी खत्म भी हो जाये तो छूआछूत[14] नहीं खत्म होगी। छूआछूत तभी खत्म होगा, जब सम्पूर्ण हिन्दू सामाजिक व्यवस्था खासतौर से जाति व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया जाये। प्रत्येक संस्था को कोई न कोई धार्मिक स्वीकृति मिली हुई है।''

इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिन्दू समाज में प्रत्येक विश्वास को धर्म का सहयोग मिला है। देखा जाय तो पूरी व्यवस्था ही सवर्ण केन्द्रित है, यानि सवर्णो को समाज में प्रमुखता प्राप्त है। शासन–प्रशासन में अपनी प्रारम्भिक कुशलता का लाभ उठाकर यह वर्ग महत्वपूर्ण पद प्राप्त कर चुके है। फिर चाहे वह शासन हो, प्रशासन हो या न्यायिक व्यवस्था हो, सभी जगहों पर उच्च वर्गो का प्रभुत्व है। जो निश्चित रूप से सभी वर्गों के साथ न्याय का पालन नहीं करता है। क्योंकि वह स्थापित प्रक्रिया के अनुसार व्यवहार करता है। यानि जिनका प्रभुत्व उनकी हर बात

---

[11] जाति का विनाश– बाबा भीमराव अम्बेडकर अनुवाद राजकिशोर, पृष्ठ–118
[12] जाति का विनाश– बाबा भीमराव अम्बेडकर अनुवाद राजकिशोर, पृष्ठ–118
[13] डॉ0 बाबा साहेब अम्बेड़कर राइटिंग एण्ड स्पीपेज वाल्यूम 5 पृष्ठ 89
[14] डॉ0 बाबा साहेब अम्बेड़कर राइटिंग एण्ड स्पीपेज वाल्यूम 5 पृष्ठ 102

सुनी जाती है। अम्बेड़कर साहब को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा जब किसी ने भी उनका सहयोग नहीं किया। क्योंकि वह एक अछूत वर्ग से आते थे। हिन्दू की ही तो बात नहीं, बल्कि मुसलमान समुदाय ने भी कभी इनकी लड़ाई का समर्थन नहीं किया। बाबा साहेब का मानना था कि धर्म एक सामाजिक व्यवस्था का परिचायक है। वह व्यवस्था बनाने का कार्य करता है, लेकिन जब धर्म ही अत्याचार करने लगे, मानव को मानवीय गरिमा से जीवन जीने का हक छीनने लगे तो कोई ऐसे धर्म को क्यों माने। अछूतो को यह पूछने का अधिकार है सवर्ण हिन्दूओं से कि क्या हिन्दुत्व, अछूतो को जीव मात्र के रूप में प्रतिष्ठित करने को तैयार है। क्या उनका धर्म इन्हें बराबरी का दर्जा देने को तैयार है? क्या उन्हें स्वतंत्रता का लाभ मिलेगा। जिससे भाईचारा कायम हो सके''[15] बाबा साहेब को हिन्दू धर्म की रूढ़ियों, कुरीतियों से चिढ़ थी। उन्होंने हिन्दू धर्म को कई भागों में वर्णित किया। वह हिन्दू धर्म को अंधविश्वासी, कट्टरपंथी मानते थे। वे कहते है कि हिन्दू धर्म में बहुत से पंथ ऐसे है, जो कुरीतियों का विरोध तो करते है। परन्तु वेदों का अपौरूषेय मानते है, कुछ उन लोगों को वर्ग है जो हिन्दू धर्म की गलतियों को स्वीकार तो करते है, पर उनकी आलोचना नहीं करते है। सोचते है कि उन गलतियों को समय सुधार देगा।

हिन्दू धर्म के इन्हीं आडम्बरों एवं रूढ़ियों, छूआछूत जैसी भावना से त्रस्त होकर उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया। क्योंकि उनका उद्देश्य दलितों को समाज में सम्मानित स्थान दिलवाना था। ताकि वे मानवीय गरिमा से जीवन जी सके। दलित पिछड़ी शोषित जातियों की नई पीढ़ियाँ समाज में सम्मान से जी सके।

आर्थिक कारण –

ऋग्वेद के 'पुरूष सूक्त' में 'चतुवर्ण की उत्पत्ति' का मत प्रतिपादित किया गया और कहा गया कि ब्रह्मा जी के मुख से ब्राह्मण का, भुजा से क्षत्रिय की, उदर से वैश्य की तथा पैरों से शूद्रों की उत्पत्ति हुई है। अतः ब्राह्मणों को दायित्व समाज की नैतिक व्यवस्था को बनाये रखने के साथ शिक्षा, दीक्षा, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि सम्पन्न कराना है, वहीं क्षत्रिय लोगों की रक्षा करें ताकि समाज सुरक्षित रहे, वैश्य उनके पालन–पोषण की व्यवस्था करें, तथा शूद्र उपर्युक्त तीनों वर्णो की सेवा

[15] डॉ0 भीमराव अम्बेड़कर व्यक्तित्व के कुछ पहलू मोहन सिंह पृष्ठ 106

करें, यानि ये अपने जीवन एवं कर्म के लिए उपर्युक्त तीनों वर्णो के ऊपर आश्रित रहे। इस तरह प्राचीन काल से ही उनकी आर्थिक स्वतंत्रता एवं समाज में सम्मान प्राप्त करने का अधिकार उनसे छीन लिया गया। रामचरित मानस में भी कहा गया है कि 'ढ़ोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी, सकल ताडना के अधिकारी''।

यह शोषण की प्रक्रिया निरन्तर जारी रही, न केवल प्राचीन काल में बल्कि सल्तनत एवं मुगलकाल में भी। किन्तु जब अंग्रेज भारत आये और आधुनिक शिक्षा द्वारा समाज में सुधार की प्रक्रिया आगे बढ़ी तो समाज सुधारकों ने भी इन धार्मिक कुरीतियों पर प्रहार करना शुरू किया तथा इस वर्ग के लोगों को भी अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत नौकरियों में इनकी नियुक्ति होने लगी, विशेषकर सेना में। शिक्षा का प्रसार होने से इस वर्ण में भी जागरूकता का स्तर बढ़ा। अनेक समाज सुधारको यथा ज्योतिबा फूले, महादेव गोविंद रानाडे जैसे सुधारकों ने न केवल सामाजिक, धार्मिक सुधारों की ओर ध्यान दिया, बल्कि इनकी आर्थिक स्थिति को सुधारने पर भी बल दिया। बाबा साहेब अम्बेड़कर ने भी इस वर्ग की आर्थिक समानता पर बल दिया। भारत के समाजवादियों' द्वारा अपनायी गई 'इतिहास की आर्थिक व्याख्या' पर कहना था कि इस पर आक्रमण किया जा सकता है, लेकिन मैं समझता हूँ कि समाजवादियों की इस दलील की वैधता के लिए कि सम्पत्ति की समानता ही वास्तविक सुधार है और किसी भी अन्य सुधार के पहले इसका होना जरूरी है तो इतिहास की आर्थिक व्याख्या आवश्यक नहीं है। बहरहाल समाजवादियों से मैं जो पूछना चाहता हूँ, वह यह कि पहले सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाये बिना ही क्या आप कोई आर्थिक सुधार ला सकते हो?[16]

बाबा साहेब का मानना था कि जब तक एक वर्ग दूसरे वर्ग का शोषण करता रहेगा तब तक संभव ही नहीं है कि भारत में एक स्वतन्त्र समाज की स्थिति हो सकती है। उनका मानना था कि आर्थिक स्वतन्त्रता महत्वपूर्ण प्रश्न है और मुझे समाजवादी आर्दश में विश्वास है और सामाजिक समानता के प्रश्न में मुझे पूर्ण विश्वास है, अतः यदि सम्पूर्ण समानता होगी तभी आर्थिक समस्या का समाधान मिलेगा, और तभी समाजवाद का लक्ष्य प्राप्त होगा। यह निश्चित है कि एक समस्या की समाप्ति, दूसरी समस्या की समाप्ति का मार्ग बनेगी। उनका मानना था कि यह

---

[16] जाति का विनाशः भीमराव अम्बेड़कर, अनुवाद राजकिशोर पृष्ठ 55

कह देना कि सभी वर्गो एवं विचारधारा, समूहों में समानता होने से सम्पन्नता प्राप्त होगी, यह संभव नहीं है अपितु यह नसमझी है। समाजवाद में केवल अर्थ समानता का ही प्रश्न नहीं है, बल्कि यदि समाजवाद एक वास्तविक लक्ष्य है तो और सच्चाई से दूर नहीं है तो किसी भी समाजवादी के सामने यह प्रश्न नहीं होता कि वह समाजिक समानता में विश्वास करता है या नहीं। बल्कि उसके सामने सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह होता कि जब एक वर्ग दूसरे वर्ग का शोषण करता है, दमन करता है, तो उसे बुरा लगता है या नहीं।

बाबा साहेब का मानना था कि सम्पत्ति के व्यक्तिगत स्वामित्व से एक वर्ग को शक्ति प्राप्त होती है और दूसरा वर्ग जो कमजोर होता है, उसका मजबूत आर्थिक शक्ति द्वारा शोषण किया जाता है। इससे निश्चित रूप से एक वर्ग और दूसरे वर्ग के बीच अपने आर्थिक हितो के लिए संघर्ष होना स्वाभाविक है।

☆☆☆

अध्याय–5

नव बौद्ध आंदोलन भारत में, विशेषतः बनारस के संदर्भ में

नव बौद्ध आंदोलन भारत में, विशेषतः बनारस के संदर्भ में

वाराणस्यां नदी पु सिद्ध गन्धर्वसेविता।

प्रविष्टा त्रिपथा गंगा तस्मिन क्षेत्रे मम प्रिये।।[1]

(अर्थात्– हे प्रिये, सिद्ध गन्धर्वो से सेवित वाराणसी में जहाँ पुण्य नदी त्रिपथगा गंगा आती है वह क्षेत्र मुझे प्रिय है) मत्स्यपुराण में शिव ने वाराणसी का वर्णन करते हुए कहा है।

पद्म पुराण के काशी महात्मा खंड–3 में एक श्लोक में वाराणसी का जिक्र है।

वाराणसीति विख्यातां तन्मान निगदामि वः दधिणोत्तरयोर्नधो वार्णसिश्र पूर्वत्।

जान्हवी पश्चि❷मेंऽत्रापि पाशपार्णिगणेश्वरः।।[2]

हिन्दू धर्म ग्रन्थों में बनारस का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान हैं, इसे काशी के नाम से भी जाना जाता है। यह वरूणा एवं अस्सी नामक दो नदियों के बीच स्थित होने के कारण वाराणसी कहा जाता है। इसका उल्लेख वैदिक ग्रन्थों में मिलता है। इसका प्रथम उल्लेख अथर्ववेद में प्राप्त होता है, तथा रामायण एवं महाभारत में काशी के नाम से उल्लेख हुआ है। 6वीं शताब्दी ई0 पू0 के सोलह महाजनपदो में काशी प्रमुख महाजनपद था। हिन्दू धर्म में इसे (बनारस अर्थात काशी) को मोक्ष

---

[1] काशी के घाट–इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र सुनील झा (विकीपीडिया)

[2] 'विडला मंदिर (नया विश्नाथ मंदिर) अभिगमन तिथि 4 फरवरी 2007 विकिपीडिया

प्राप्ति स्थल माना जाता है। अविमुक्त क्षेत्र के रूप में ख्याति अर्जित करने वाले इस स्थल की पवित्रता का उल्लेख बौद्ध एवं जैन धर्म में हुआ है। वाराणसी क्षेत्र को अविमुक्त क्षेत्र, आनंदकानन, सुदर्शन, ब्रह्मावर्त, महाश्मशान, आदि नामों से जाना जाता रहा है।

बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय एवं जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है। इन महाजनपदों में एक महत्वपूर्ण महाजनपद काशी भी था। जो वज्जि महाजनपद के पश्चिम में स्थित था। इसकी राजधानी वाराणसी थी। यहाँ का शक्तिशाली राजा ब्रह्मदत्त था। जिसने कोशल के ऊपर विजय प्राप्त किया। बाद में कोसल शासक ने काशी को कोशल राज्य में मिला लिया। इसी काशी महाजनपद का जिक्र सबसे पहले अथर्ववेद की पैप्लाद शाखा में तथा शतपथ ब्राह्मण में भी हुआ है।

काशी की राजधानी वाराणसी का नाम वरूणा एवं अस्सी नदी पर पड़ा है। इसकी पुष्टि महाभारत में वरूणा या आधुनिक बरना नदी का प्राचीन नाम वराणसी होने की पुष्टि होती है।[3]

जहाँ तक वाराणसी की स्थापना की बात है तो पौराणिक ग्रंथो में इसे शिव की नगरी कहते है, जिसकी स्थापना भगवान शिव ने किया था। ऐसा हिन्दू धर्म ग्रंथों में माना जाता है। यही कारण है कि इसे मोक्ष की नगरी भी माना जाता है। तथा हिन्दू धर्म ग्रन्थो ऋग्वेद, स्कन्द पुराण, रामायण, महाभारत आदि में इसका उल्लेख हुआ है।

स्कन्दपुराण के काशी खंड में कहा गया है कि संसार के सभी तीर्थ मिलकर असिंसभेद के सोलहवें भाग के बराबर भी नही होते है।[4]

वाराणसी :–

गंगा तट पर बसी वाराणसी का पुराना नाम काशी है। इसका निर्माण संभवत अनार्यो ने किया था। परन्तु आर्यो ने काशी उनसे छीन लिया। बनारस गंगा नदी के किनारे स्थित है। अतः जिससे यह एक बड़ी आबादी के निवास का केन्द्र ही नहीं बना, बल्कि व्यापार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कपड़ा एवं चाँदी के

[3] सेन गुप्ता, सौमिनी (9 मार्च 2016) ''इंडियन सिटी शेकन बाप टेम्पल विकिपीडिया
[4] बाम्बिंग्स, द न्यूयार्क टाइम्स अभिगमन तिथि 4 दिसम्बर 2008, विकिपिडिया

व्यापार में इसका महत्वपूर्ण स्थान रहा। जिसके कारण यह विभिन्न महाजनपदों के बीच संघर्ष का केन्द्र बन गया। महाभारत काल में भी काशी का जिक्र आया है कि किस प्रकार भीष्म पितामह ने काशी नरेश की तीन पुत्रियों अंबा, अंबिका, अंबालिका का अपहरण किया। जिसके कारण काशी एवं हस्तिनापुर में घोर शत्रुता आरम्भ हो गयी। अन्ततः काशी पर वत्स का अधिकार हो गया। उत्तर वैदिक काल में ब्रह्मदत्त शासक के समय में काशी पुनः राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हो गयी। महाजनपद काल में काशी का महत्व बढ़ा। महावीर स्वामी एवं महात्मा बुद्ध के समय में काशी का शासक अश्वसेन हुआ। काशी में एक महत्वपूर्ण जैन सन्त पार्श्वनाथ हुए जो जैन धर्म के 23वें तीर्थकर हुए।

महाजनपद काल में व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ने से जहाँ काशी राजनीतिक संघर्षों का बिन्दु बन गई। उस समय मगध, कोशल, वत्स, उज्जयिनी महत्वपूर्ण महाजनपद थे। इनके सत्ता एवं शक्ति संघर्ष में कभी काशी वत्सों के हाथ जाती तो कभी कोशल के और कभी किसी अन्य महाजनपद के। बुद्ध के काल में मगध के शासक बिम्बिसार को कोशला देवी से विवाह के उपलक्ष्य में दहेज रूप में काशी प्राप्त हुआ, जिसकी आमदनी एक लाख मुद्रा थी। परन्तु जब अजातशत्रु शासक बना तो उसमें काशी पर अधिकार कर लिया। आगे देखते है कि मौर्य काल में काशी में सारनाथ महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल बना। काशी व्यापार के साथ–साथ धार्मिक दृष्टिकोण से भी शीर्ष स्थान हासिल करती चली गई। वाराणसी 18वीं शताब्दी में स्वतंत्र काशी राज्य बना। ब्रिटिश शासन में भी काशी महत्वपूर्ण रियासत बना रहा। परन्तु 1910 में वाराणसी को ब्रिटिश शासन ने भारतीय राज्य बना दिया। रामनगर जो वाराणसी का मुख्यालय बना, स्थापत्य कला की दृष्टिकोण से मुगल स्थापत्य से प्रभावित हुआ। यहाँ चुनार के बलुआ पत्थर का किले में निर्माण में बेहतरीन उपयोग किया गया। साथ ही नक्काशीदार छज्जो, खुले प्रांगण, गुम्बददार मंडप से महल को बेहतरीन ढंग से सजाया गया।

काशी का तीर्थ के रूप में हिन्दू धर्म में स्थानः–

हिन्दू मान्यता में वाराणसी का तीर्थ के रूप में सबसे पुराना उल्लेख महाभारत में मिलता है।

यजुर्वेदीय जाबाल उपनिषद में काशी के विषय में महत्वपूर्ण वर्णन मिलता है जिसमें महर्षि अत्रि ने याज्ञवल्क्य से अव्यक्त और अनन्त परमात्मा को जानने का तरीका पूछा तब याज्ञवल्क्य ने कहा कि उस अव्यक्त और अनन्त आत्मा की उपासना अविमुक्त क्षेत्र में हो सकती है। क्योंकि वह वही प्रतिष्ठित है और अत्रि के अविमुक्त क्षेत्र की स्थिति पूछने पर याज्ञवल्क्य ने कहा कि वह वरूणा एवं नाशी नदी के मध्य में है, और जब अत्रि ने यह पूछा कि ये वरूणा एवं नाशी क्या है? तो उनका कहना था कि इन्द्रिय कृत सभी दोषों का निवारण करने वाली वरूणा है और इन्द्रिय कृत सभी पापों का नाश करने वाली नाशी है वह अविमुक्त क्षेत्र देवताओं का निवास स्थल और सभी प्राणियों का ब्रह्मसदन है। वहाँ भगवान रूद्र सभी प्राणियों के प्राण प्रयाण के समय तारक मंत्र का उपदेश देते है। जिसके प्रभाव से प्राणी मोक्ष प्राप्त करता है।[5] प्राचीन लिंगपुराण, महापुराण, लिखित स्मृति, श्रृंगी स्मृति, पाराशर स्मृति, सनत्कुमार संहिता आदि में काशी (वाराणसी) का माहात्म्य का उल्लेख है।

वाराणसी के प्रमुख हिन्दू मन्दिर :

वाराणसी का स्थान हिन्दू धर्म स्थलों के सर्वश्रेष्ठ स्थल रूप में है। यहाँ हिन्दू धर्म से सम्बन्धित बहुत महत्वपूर्ण स्थल और मन्दिर है। जिनमें सबसे महत्वपूर्ण मन्दिर बाबा विश्वनाथ मन्दिर है। जिसे अलाउद्दीन खिलजी ने तुड़वा दिया था। परन्तु अकबर के समय में 1585 में टोडरमल ने विश्वनाथ जी के मन्दिर का पुनः निर्माण करवाया, बाद में औरंगजेब की कठोर धार्मिक नीति से भी बनारस के तीर्थस्थल को काफी क्षति पहुँची। परन्तु मराठों द्वारा संरक्षण दिये जाने से बनारस का गौरव पुनः उभरा। अंग्रेजों के समय में भी बहुत से मंदिरों का निर्माण हुआ। हैवेल के अनुसार– ''बनारस में करीब 3500 मंदिर थे।''[6]

- प्रमुख तीर्थ स्थल एवं मंदिर निम्न हैं–
  1. अस्सी और गंगा का संगम
  2. दशाश्वमेघ घाट
  3. मणिकर्णिका घाट

---

[5] विकिपीडिया
[6] तत्रैव

4. पंचगंगा घाट
5. वरूणा तथा गंगा का संगम

लोलार्क तीर्थ–

6. बाबा विश्वनाथ मंदिर– वाराणसी
7. केदारेश्वर मंदिर, वाराणसी।
8. दुर्गाकुण्ड, वाराणसी।
9. लोलार्क कुण्ड।
10. विशालाक्षी मंदिर, बनारस।
11. साथी गणेश मंदिर, बनारस।
12. चण्डी देवी मंदिर आदि।

परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आज बनारस जहाँ बाबा विश्वनाथ मंदिर के लिए विश्व प्रसिद्ध है। वही सारनाथ के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसकी एक बेहद महत्वपूर्ण स्थिति है। सारनाथ जहाँ महात्मा बुद्ध ने अपना प्रथम धम्म चक्र प्रवर्तन का उपदेश दिया था। यह स्थल विश्व भर के बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए चार महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक है। तीन अन्य स्थल हैं क्रमशः लुम्बिनी, बोध गया, कुशीनगर। अतः आज सारनाथ, बनारस परिक्षेत्र की सबसे बड़ी पहचान है।

बौद्ध धर्म में बनारस का महत्व –

जहाँ हिन्दू धर्म में बनारस का बेहद महत्वपूर्ण स्थान है। वही से 10कि0 मी0 पूर्वोत्तर में स्थित सारनाथ जिसे मृगदाव या ऋषिपत्तन के नाम से भी जाना जाता है, का बौद्ध धर्म में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। सारनाथ को बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण चार तीर्थ स्थानों में से एक माना जाता है। इसकी वजह यह है कि गौतम बुद्ध का बोधगया में ज्ञान प्राप्ति के पश्चात उन्होंने पाँच ब्राह्मण–शिष्य क्रमशः

1. कौण्डिन्य,
2. आँज,
3. अस्सजि,
4. वप्प,

5. भद्दि

सन्यासियों को अपना प्रथम उपदेश दिया। जिसे बौद्ध ग्रन्थों में धर्म चक्र प्रवर्तन नाम से जाना जाता है। सारनाथ से ही बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार प्रारम्भ हुआ। बौद्ध धर्म देश–विदेशों में अपने आचार संहिता के कारण न केवल आदरणीय बना, बल्कि अनुकरणीय एवं पूज्यनीय भी बना। सारनाथ को जैन धर्म में सिंहपुर के नाम से जाना गया। यहाँ पर जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थांकर श्रेंयासनाथ का जन्म सारनाथ में हुआ। यही बनारस परिक्षेत्र में तेइसवें तीर्थांकर पार्श्वनाथ का भी जन्म हुआ।

चूँकि महात्मा बुद्ध ने अपने उपदेशों, जिसमें चार आर्य सत्यों, अष्टांगिक मार्ग एवं दशशील जैसे सिद्धान्तों से मानव को मध्यममार्ग का अनुसरण करते हुए निर्वाण प्राप्ति का मार्ग सुझाया। इसलिए यह स्थल जहाँ से उनका धम्म देश दुनिया में फैला, न केवल भारत के लिए बल्कि विश्व के लिए आश्चर्य का विषय बना। इससे बनारस की छवि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर केवल हिन्दू धर्म के लिए नहीं बल्कि बौद्ध धर्म का प्रतीक बन गयी। आज भी विदेशों से बड़ी संख्या में पर्यटक सारनाथ के बौद्ध तीर्थस्थलों का भ्रमण करने के लिए बड़ी संख्या में आते हैं। इससे न केवल बौद्ध धर्म का विदेशों में प्रसार हुआ। बल्कि भारत में पर्यटन उद्योग को बढ़ाया मिला। जो कि राष्ट्रीय आय का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। बौद्ध धर्म को करीब से जानने से विदेशियों में भी सहिष्णुता, करूणा, शान्ति के प्रति विश्वास बढ़ा।

सारनाथ में बौद्ध धर्म से जुड़े काफी महत्वपूर्ण स्थल है। जिन्हें देखने के लिए विदेशी पर्यटकों का वर्ष भर आगमन होता रहता है।

यहाँ स्थित प्रमुख स्थलों में भगवान बुद्ध का मन्दिर, धामेख स्तूप, चौखण्डी स्तूप, अशोक का चतुर्मुख स्तूप, चीनी मन्दिर, जैन मन्दिर, मूलगंध कुटी विहार, राजकीय संग्रहालय, नवीन विहार इत्यादि महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है। हालांकि मुस्लिम आक्रमणकारियों से इन्हें भी काफी क्षति पहुँची थी। परन्तु 1905 में लार्ड कर्जन द्वारा गठित पुरातत्व विभाग ने खुदाई द्वारा एवं संरक्षण द्वारा यहाँ ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों के संरक्षण पर ध्यान दिया। स्वतन्त्रता के बाद भारत ने राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में यही अशोक द्वारा स्थापित अशोक सिंह शीर्ष को ग्रहण किया।

इतिहास के पन्नों में सारनाथ –

महात्मा बुद्ध द्वारा सारनाथ में दिये गये अपने प्रथम धर्म चक्र प्रवर्तन के कारण सारनाथ इतिहास में काफी ज्यादा प्रसिद्ध हो गया। जैसे–जैसे बौद्ध धर्म

पुष्पित पल्लवित होता गया, सारनाथ अत्यन्त महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान के रूप में प्रसिद्ध होता गया। हालांकि अशोक के समय में निर्मित अनेक स्थापत्य स्थलों के उत्खनन से अवशेष मिलने से यह स्थल काफी चर्चा में आया। यहाँ अशोक द्वारा निर्मित करवाये गये महत्वपूर्ण स्मारकों में धर्मराजिका स्तूप, धमेख स्तूप एवं सिंह स्तम्भ महत्वपूर्ण है। चूँकि अशोक बौद्ध धर्म में विश्वास करता था। अतः बौद्ध धर्म के सम्बर्द्धन हेतु उसने न केवल देश–विदेशों में धम्म यात्राएँ भेजी, बल्कि स्वयं भी महात्मा बुद्ध के जन्म से मृत्यु तक जुड़े इन महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण किया। लेकिन अशोक के बाद उसके उत्तराधिकारियों की रूचि बौद्ध धर्म में नहीं थी। परिणामतः बौद्ध धर्म की लोकप्रियता में कमी आयी। 'मौर्यों के बाद पुण्यमित्र शुंग के काल में ब्राह्मण धर्म का उत्थान हुआ, किन्तु जब कुषाण सत्ता शासन में आयी और कनिष्क के राज्यकाल में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन कश्मीर के कुण्ड़लवन में हुआ, तो एक बार फिर से बौद्ध धर्म अभ्युदय की ओर अग्रसर हुआ और सारनाथ में ही नहीं बल्कि भारत के अनेक भागों में अनेक विहारों एवं स्तूपों का निर्माण करवाया गया। गुप्तकाल में भी बनारस का धार्मिक महत्व काफी रहा। हालांकि ब्राह्मण धर्म प्रमुखता के कारण, लेकिन सारनाथ भी गुप्त शासकों की सहिष्णुतापूर्ण नीति के कारण लोकप्रियता को प्राप्त रहा।

जब ह्वेनसांग भारत आया था, तब उसने सारनाथ की समृद्धि एवं खुशहाली का जिक्र किया था। हालांकि मुस्लिम आक्रमणकारियों के समय में सारनाथ की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचा। हालांकि ब्रिटिश सरकार ने सारनाथ के महत्व को ध्यान में रखते हुए उसके संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया।

सारनाथ का उत्खनन –

सारनाथ का ऐतिहासिक महत्व देखते हुए कर्नल मैकेंजी ने 1815 ई0 में सारनाथ का उल्खनन करवाया। परन्तु कोई विशेष उपलब्धि नहीं प्राप्त हुई। 1835–36 में कनिंघम में महोदय ने भी सारनाथ का विस्तृत उत्खनन करवाया। इस उत्खनन के फलस्वरूप धामेख स्तूप, चौखंडी स्तूप तथा अनेकों विहारों की प्राप्ति हुई। यही नहीं एक शिलापट्ट भी मिला। 1851–52 में मेजर किटोई ने भी सारनाथ में उत्खनन कार्य करवाया कुछेक स्तूप, विहार आदि मिले। परन्तु कोई बड़ी

उपलब्धि हासिल नहीं हुई। कई अन्य लोगों ने भी इस स्थल की खुदाई कराया तब वहाँ से बोधिसत्व की विशाल मूर्ति, मंजुश्री, अवलोकितेश्वर, तारा वसुंधरा की प्रतिमाएँ भी मिली। जो स्त्री पूजा के बौद्ध धर्म में होने को प्रमाणित करती है। 1907 ई0 में पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर जनरल जान मार्शल ने सारनाथ में खुदाई करवाया। यहाँ से अनेक मठ एवं विहार के अवशेष मिले, साथ ही कुमार देवी के अभिलेखों से युक्त मूर्तियाँ विशेष महत्व की यहाँ से प्राप्त हुई।

इस प्रकार सारनाथ इन उत्खननों के परिणाम स्वरूप एक महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल के रूप में उभरा। यहाँ प्राप्त महत्वपूर्ण स्मारकों का विवरण निम्नवत है।

(1) धामेख स्तूप –

धामेख स्तूप का निर्माण मौर्य सम्राट अशोक द्वारा 249 ई0 में बनवाया गया। यह सारनाथ की सबसे आकर्षक संरचना है। धामेख शब्द संस्कृत भाषा के शब्द धर्मेज्ञा से निर्मित है। 11वीं शताब्दी की एक मुद्रा पर धमाक जयतु शब्द मिलता है। जिसमें इसे धमाक कहा गया है। बुद्ध ने सर्वप्रथम धामेख स्तूप से ही धर्म चक्र प्रारम्भ किया। अतः सम्भव है इसका नाम धामेख स्तूप पड़ गया हो। जब कनिंघम महोदय ने इसकी खुदाई करवाया, तब यहाँ से ये धर्म हेतु प्रभवा लिपि में अंकित शिलापट मिला। धामेख स्तूप का आकार गोलाकार कुछ सिलेण्डर के आकार का है इसका व्यास 28.35 मी0, ऊँचाई 39.01 मी0 तथा 11.20 मी0 तक अलंकृत शिलापटों से सजाया गया है।

धामेख स्तूप

इसका विस्तार कुषाण काल में हुआ तथा गुप्तकाल में यह पूर्ण विकसित हुआ। इसे फूल पत्तियों, सुन्दर लिपियों से अलंकृत किया गया है। इसे देखने से इसका विशाल स्वरूप बहुत अद्‌भुत दिखायी देता है जैसे कोई सन्यासी तपस्यारत हो, अद्‌भुत, अनोखा, अलौकिक प्रतीत होता है।

(2) धर्मराजिक स्तूप –

धर्मराजिक स्तूप की खुदाई मार्शल के निर्देशन पर हुई। इस स्तूप का निर्माण मौर्य सम्राट अशोक ने कराया। हालांकि समय के साथ इस स्तूप का कई बार परिवर्द्धन एवं संस्कार हुआ। इसका व्यास 13.48 मी0 है। कुषाण, हूण तथा हर्ष के काल में इसका परिवर्द्धन होता रहा।

धामेख स्तूप के उत्खनन से दो मूर्तियाँ मिली है। ये मूर्तियाँ बेहद महत्वपूर्ण है, सारनाथ से खुदाई में मिली मूर्तियों में। ये मूर्तियाँ क्रमशः बोधिसत्व एवं धर्मचक्रमुद्रा प्रवर्तन मुद्रा में भगवान महात्मा बुद्ध की मूर्तियाँ है।

(3) चौखंडी स्तूप –

इस स्तूप के आकार के कारण इसे चौखंडी स्तूप[7] कहा जाता होगा। क्योंकि यह एक चौकोर आधार पर ईंटों से निर्मित है तीन मंजिला है इसे गुप्तकाल में त्रिमेधि स्तूप कहा जाता था। एलेक्जेंडर कनिंघम ने 1836 में इसकी खुदाई करवाया।

[7] Singh Rana (2 October 2009) Banaras Making of India Heritage City Cambridge School.

चौखंडी स्तूप

संभवतः महात्मा बुद्ध ने यहाँ अपने पाँच शिष्यों को प्रथम उपदेश दिया था। यह धामेख स्तूप तथा सारनाथ से पहले पड़ता है। सम्भवतः आधा मील दक्षिण में स्थित है। यहाँ पर फारसी में अभिलेख मिला है। जिसे टोडरमल के पुत्र गोवर्धन द्वारा सम्भवतः 1589 ई0 में बनवाया गया था।

(4) मूलगंध कूटी विहार –

पूर्व की तरफ मुख वाले इस विहार का निर्माण एक चौकोर कुर्सी पर हुआ है। यह वास्तुकला का बेहतर नमूना है, जो धर्मराजिक स्तूप के उत्तर की ओर स्थित है।

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस विहार का जिक्र मूलगंध कूटी द्वार नाम से किया है। मूलगंध कुटी विहार के भवन पर घण्टे की आकृति उत्कीर्ण है, जो देखने में अत्यन्त मनोहर लगती है। इस पर धर्म चक्र का अंकन भी सजावट के उद्देश्य से किया गया है। इस विहार में भगवान बुद्ध की एक सोने की चमकीली मूर्ति स्थापित थी। मंदिर में आने जाने के लिए तीन द्वार थे। परन्तु बाद में सभी को बन्द कर पूर्व द्वार को ही खुला रखा गया। आज भी शाम के समय मूलगंध कुटी विहार को दीपकों से सजाया जाता है तो उसकी छवि देखते ही बनती है। परिसर की असीम शान्ति एक अलग ही दृश्य उपस्थित करती है। पर्यटक इस दृश्य को देखकर, महसूस कर, महात्मा बुद्ध के वचनों को याद कर असीम सन्तोष एवं सुख का अनुभव करते है।

बुद्ध पूर्णिमा पर बनारस में धम्म यात्रा

बुद्ध पूर्णिमा आयोजित करने वाले संगठन– प्रमुख संगठन जो बुद्धपूर्णिमा पर धम्म यात्रा निकालने में महत्वपूर्ण सहयोग करते है, इस प्रकार हैः

अशोक मिशन एजूकेशनल सोसायटी बुद्ध नगर (कादीपुर) शिवपुर, वाराणसी, मो0– 8795745010। धम्म शिक्षण केन्द्र सारनाथ, वाराणसी ने 18 मई 2019 को सुबह 9 बजे से रात 9 बजे तक महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया परिसर में त्रिविध पावनी वैशाखी पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा) के महापर्व पर सामूहिक भोजन दान की व्यवस्था किया था।

धम्म शिक्षण समिति के अध्यक्ष भिक्खू चन्दिमा है, तथा इस आयोजन की व्यवस्था की देखभाल करने वाले लोगों में बौद्ध भिक्षुओं ने बढ़ चढ़ कर भागीदारी किया। जिसमें प्रमुख नाम निम्न है– भिक्खू कुशला धम्मो, भन्ते यश, भन्ते ज्ञानरक्खित, भन्ते प्रज्ञारक्खित, भन्ते लोकरक्खित, भन्ते पुण्यरक्खित, भन्ते विशुद्ध, भन्ते चित्तबोधि, भन्ते धम्म रतन, भन्ते विनय बोधि, भन्ते कश्यप, भन्ते शान्तरक्खित, भन्ते दोलों, भन्ते उपसन्त, भन्ते प्रज्जवल, उपासक मनीष मौर्या, अरविन्द प्रकाश मौर्या। इसके अतिरिक्त विश्व बौद्ध महासंघ संगठन की भी भागीदारी अनुकरणीय रही।

बुद्ध पूर्णिमा महोत्सव के दौरान सारनाथ में काफी कार्यक्रम आयोजित किया गया था। मैं कैण्ट में अम्बेडकर प्रतिमा से जो कैन्ट (कचहरी में स्थित है) वहाँ से बौद्ध धम्म यात्रा में शामिल हुई। यह बौद्ध धम्मयात्रा विभिन्न बौद्ध संगठनों की तरफ से निकाली गई। हालांकि 2019 में चुनाव होने की वजह से यह पूर्व वर्षों की तरह काफी भव्य नहीं थी। परन्तु बड़ी मात्रा में स्त्री–पुरूषों ने भाग लिया था। यह धम्म यात्रा कचेहरी, पाण्डेयपुर, पहड़िया, आशापुर होते हुए सारनाथ पहुँचकर समाप्त हुई। इस यात्रा में स्त्री–पुरूष, बच्चों की बड़ी संख्या ने भाग लिया। अधिकांश लोग पैदल ही कतारवद्ध होकर चल रहे थे। बुद्धम् शरणम् गच्छामि, संघम् शरणम् गच्छामि की ध्वनि सम्पूर्ण वातावरण में गूँज रहा था। इस धम्म यात्रा में दो रथ और कुछ अन्य वाहन भी थे। इस यात्रा में सबसे आगे महात्मा बुद्ध की प्रतिमा जो पीपल के पत्तों एवं फूलों से सजायी गई थी अत्यन्त मनोहर लग रही थी, और बीच में तथा पीछे

जो रथ थे, वे पीपल के पत्तों एवं फूलों से सजे थे। जिस पर बौद्ध धर्म को मानने वाले गणमान्य लोग बैठे थे। हालांकि जब मैंने पूछा कि इस रथ में कौन बैठता है तब विजय कुमार राव जो एक जाने माने बौद्धिस्ट है तथा स्थानीय सामाजिक कार्यों में अत्यन्त सक्रिय व्यक्ति भी है।

उन्होंने कहा कि इस रथ पर कोई भी व्यक्ति बैठ सकता है जो बौद्ध धर्म को मानता है या इस कार्यक्रम को सहयोग करता है।[8]

इस अवसर पर भंते चंदिमा ने पंचशील झंडा दिखाकर अम्बेडकर स्मारक से धम्म यात्रा रवाना किया।

उनका कहना था कि विजयदशमी बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण पर्व है इसी दिन मौर्य सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को विश्व धर्म घोषित किया। इसी दिन बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के नेतृत्व में 5 लाख दलितों ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लिया था।

[8] साक्षात्कार, विजय कुमार राव, वाराणसी

इस धम्म यात्रा में भाग लेने वाले एक बौद्ध उपासक बुद्ध मित्र मुसाफिर ने कहा– बौद्ध समुदाय आज के ही दिन की प्रतीक्षा करते है। यह बौद्धों के लिए बहुत बड़ा पर्व है। क्योंकि आज के ही दिन महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्होंने संसार को जीवन जीने की प्रेरणा दिया।[9] यहाँ उल्लेखनीय है कि डॉ0 विनोद की ओर से पहाड़िया में भोजन दान किया गया।

जब यह धम्म यात्रा सारनाथ पहुँची, तब काफी शाम हो चुकी थी। वहाँ पर एक बड़ा पंडाल लगा हुआ था। जहाँ भोजन की व्यवस्था थी। जहाँ प्रसाद रूप में पूड़ी, सब्जी, लड्डू एवं खिचड़ी की व्यवस्था थी। सारनाथ आने वाले श्रद्धालु वहाँ भोजन कर रहे थे।

सारनाथ स्थित थाई बौद्ध विहार में भंते गुरूधम्मो ने तथागत बुद्ध के स्थल पर 5 लोगों को धम्मदेशना दी। कहा कि यह स्थली तथागत बुद्ध की स्थली है, यहाँ लोग बौद्ध धर्म को जानने, ज्ञान अर्जित करने के लिए त्रिशरण पंचशील ग्रहण करते है। यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि पूरी धम्म यात्रा में पंचशील के झण्डे से न केवल धम्म यात्रा बल्कि पूरा सारनाथ सजाया गया था।

इस धम्म यात्रा के औचित्य को बताते हुए मूलगंध कुटी विहार के भिक्षु पी0 शिवली और महाथेरो ने कहा कि यह धम्म यात्रा महात्मा बुद्ध, सम्राट अशोक, बोधिसत्व एवं अम्बेडकर के विचारों एवं सन्देशों का जन–जन में प्रचार करती है।[10]

[9] साक्षात्कार, भन्ते चन्दिमा, वाराणसी
[10] साक्षात्कार, भिक्षु पी0 शिवली और महाथेरो, वाराणसी

इस धम्म यात्रा में शहर के ही बौद्ध लोग ही नहीं शामिल थे, बल्कि दूरदराज गाँव के बौद्ध भिक्षु व उपासकों ने भी बड़ी संख्या में भागीदारी किया था। छोटे–छोटे स्कूली बच्चों का उत्साह देखते बन रहा था। ग्रामीण महिलाएँ, शहरी महिलाओं की अपेक्षा ज्यादा सक्रिय थी। जहाँ कुछ झांकियाँ कचहरी रोड, अम्बेडकर प्रतिमा से निकली थी, वही कुछ झांकी आशापुर से भी निकली थी।

इस धम्म यात्रा में डॉ0 विनोद कुमार, शुभावती, नीलम, किरन, अरूण प्रेमी, अरविन्द कुमार, उषा अम्बेडकर, देशना, निशा अम्बेडकर, आरती, आन्ना, प्रहलाद, सुनीता बौद्ध, आर0 के0 राम जैसे लोग इस धम्म यात्रा में शामिल थे।

इस धम्म यात्रा के स्वागत में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। जिसका आयोजन अम्बेडकर नगर की मालती राव एण्ड कम्पनी, अमर सिंह बौद्ध एण्ड कम्पनी आजमगढ़, मंगल मौर्य एण्ड पार्टी चन्दौली, मुन्नी लाल, योगेन्द्र उर्फ भष्मा एण्ड पार्टी आदि ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

शाम के समय में मूलगंध कुटी विहार को बिजली की झालरों के दीयों से सजाया गया था। जिससे मूलगंध कुटी विहार की शोभा अलौकिक हो गई थी। बगल में स्थित विपश्यना केन्द्र भी लोगों की भीड़ से भरा हुआ था।

मेरी मुलाकात वहाँ के बौद्ध उपासक भंते कोलित से हुई।

जिन्होंने विपश्यना केन्द्र के महत्व के बारे में बताया कि यह केन्द्र लोगों के ध्यान अर्जन हेतु बनाया गया था। यहाँ पर इन्द्रियों के नियंत्रण के प्रतीक के रूप में कुछ गोल आकृतियों वाले घूमने वाले छल्ले बने है।[11]

[11] साक्षात्कार, भन्ते कोलित

जो अत्यन्त अद्भुत है, जिसे मणिचक्र कहा जाता है। वहाँ जाने वाले उपासक उन्हें घुमाकर शान्ति का अनुभव करते है।

वहाँ भगवान बुद्ध की प्रतिमा के पास बहुत सारी सामग्रियाँ चढ़ाई गई थी। भंते कोलित का कहना था कि ये सभी व्यक्तियों के जो यहाँ आते है उनकी श्रद्धा के माध्यम है, जिसके माध्यम से वे बौद्ध धर्म में अपनी आस्था प्रकट करते है।[12]

बौद्ध धम्म यात्रा में शामिल लोगों के लिए जल–पान की व्यवस्था मूलगंध कुटी विहार से थोड़ी दूर स्थित लान में की गई थी। वहाँ बड़ी मात्रा में कुर्सियाँ एवं जल की व्यवस्था थी। सायंकाल में यह सब अत्यन्त मनोरम प्रभाव उत्पन्न कर रहे थे।

[12] साक्षात्कार, भन्ते कोलित

अम्बेडकर जयंती

तत्कालीन राष्ट्रपति महामहीम रामनाथ कोविद के द्वारा माल्यार्पण

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में महु, इंदौर में हुआ था। बाबा साहेब ने अपना सारा जीवन दलितों पिछड़ों के उत्थान में, उन्हें समाज में अधिकार प्रदान करने, सम्मान पूर्वक जीवन जीने का अधिकार प्रदान करने में लगा दिया। यही कारण है कि भारत के लोगों के लिए बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का जन्मदिवस, उनके दलितों पिछड़ों के लिए किये गये कार्यों को (योगदान) याद रखने के लिए 14 अप्रैल को एक उत्सव जबरदस्त उत्साह के साथ लोगों द्वारा अम्बेडकर जयंती के रूप में मनायी जाती है। इस दिन को पूरे भारत वर्ष में सार्वजनिक अवकाश के रूप में घोषित किया गया है। इस दिन को समानता दिवस या ज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है। क्योंकि बाबा भीमराव अम्बेडकर ने जीवन भर मनुष्य की समानता के लिए संघर्ष किया। उनका जीवन समानता एवं ज्ञान का प्रतीक कहा जाता है। भीमराव अम्बेडकर विश्व भर में अपने मानवाधिकार आन्दोलन, संविधान निर्माण और उनकी प्रकाण्ड विद्वता के लिए जाने जाते है। यह दिन केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर उन्हें सम्मान प्रदान करने के लिए मनाया जाता है। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की जयंती पहली बार सदाशिव रणपिसे द्वारा 14 अप्रैल 1928 में पुणे शहर में मनायी गई।[13] धीरे–धीरे पूरे भारत एवं विश्व स्तर पर बड़े धूम धाम से इसका आयोजन होने लगा।

[13] विकिपीडिया।

अगर भारत की बात की जाय तो नई दिल्ली संसद भवन में उनकी मूर्ति पर हर वर्ष भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री तथा अन्य राजनीतिक नेताओं द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। इसके अलावा समाजसेवकों द्वारा तथा आम जनता द्वारा भी जगह–जगह उनके सम्मान में कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

वाराणसी में अम्बेडकर जयंती

वाराणसी में वर्तमान स्वरूप में बौद्ध जयंती की शुरुआत 1985 में श्री एस0 आर0 दारापुरी (आई0 पी0 एस0) जो उस समय वहां पर सी0 आई0 डी0 विभाग में तैनात थे , के द्वारा करवाई गयी थी। उससे पहले अम्बेडकर जयंती बहुत छोटे स्तर पर कचेहरी स्थित डॉ0 अम्बेडकर की प्रतिमा पर ही मनाई जाती थी। उस समय वाराणसी में अम्बेडकर जयंती पर वर्तमान की तरह जुलूस तथा झांकियाँ आदि निकालने की परम्परा नहीं थी। श्री दारापुरी के उपक्रम से ही अम्बेडकर जयंती पर विभिन्न क्षेत्रों/गाँवों से झांकियाँ एवं जुलूस लेकर कचेहरी स्थित अम्बेडकर प्रतिमा स्थल पर एकत्र हो कर शहर में घूमने के बाद कचेहरी प्रतिमा पर वापस आ कर मीटिंग की शुरुआत हुयी थी। इसके पीछे उनका उद्देश्य अम्बेडकर जयंती को एक भव्य एवं व्यापक रूप देना था। वर्तमान में यह जयंती सर गोवर्धनपुर में रविदास जयंती की तरह एक व्यापक एवं भव्य रूप धारण कर चुकी है।[14]

[14] साक्षात्कार, एस0 आर0 दारापुरी

एस0 आर0 दारापुरी

अम्बेडकर जयंती मनाने के पीछे कारक –

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने भारतीय संविधान का प्रारूप तैयार किया। इसलिए उन्हें भारतीय संविधान का पिता कहा जाता है। वो एक महान मानवाधिकार कार्यकर्ता थे। उन्होंने 1923 ई0 में बहिष्कार हितकारिणी सभा की[15] स्थापना करके भारत के गरीब, दलित, शोषित, निम्न स्तरीय समूह के लोगों की आर्थिक स्थिति को सुधारने के साथ ही शिक्षा की जरूरत के लक्ष्य पर काम किया। यहाँ तक की वे इनके हितों के लिए महात्मा गाँधी से भी टकरा गये। पूना पैक्ट के द्वारा दलितों शोषितों, के हितों की रक्षा किया।

इन्होंने शिक्षित करना, आन्दोलन करना, संगोष्ठी करना, के नारे का इस्तेमाल कर लोगों के लिए, उन्होंने समता का एक आन्दोलन ही खड़ा कर दिया। जिसका उद्देश्य जातिवाद एवं शोषण समाप्त करना था। अस्पृश्य लोगों के लिए बराबरी के अधिकार की मांग करने के लिए उन्होंने 1927 में एक पैदल मार्च किया।

मन्दिर प्रवेश आन्दोलन, जाति विरोधी आन्दोलन, पुजारी का विरोध[16] आदि के द्वारा उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों की सामाजिक विद्रूपताओं को उजागर किया। यहाँ तक कि ब्रिटिश शासन का साथ भी इसलिए दिया कि उनके चले जाने पर कहीं ऐसा न हो कि भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजनैतिक सुधार की

---
[15] विकीपीडिया
[16] जाति का विनाष डा0 भीमराव अम्बेडकर (अनुवाद राज किशोर पृष्ठ–118)

स्थितियाँ मंद न पड़ जाये। 1930 में मन्दिर प्रवेश आन्दोलन के द्वारा दलित वर्ग की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया। उनका मानना था कि राजनैतिक शक्ति ही दलितों की समस्याओं के सुधार का एक मात्र तरीका नहीं है, बल्कि उन्हें समाज में बराबरी का अधिकार मिले तभी उनकी समस्यायें कम हो सकती है।

जब उन्हें भारत के संविधान निर्माण का अवसर मिला तो उन्होंने जहाँ मूल अधिकारों के तहत अनुच्छेद 17 के द्वारा अस्पृश्यता का उन्मूलन किया। उसके लिए कठोर दण्ड के प्रावधान किये। समानता के अधिकार द्वारा उन्हें समाज में सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार दिया। अनु0 14 से 18 तक और नीति निदेशक सिद्धान्तों द्वारा उन्होंने सम्पत्ति के सही वितरण को सुनिश्चित करने, जीवन निर्वाह हालत में सुधार करने, काम करने की सही मानवीय परिस्थितियों के निर्माण करने की बात रखकर उन्होंने कमजोर वर्ग के लोगों का कल्याण सुनिश्चित किया। यही कारण है कि समाज का दलित शोषित वर्ग उन्हें अपना उन्नायक एवं उद्धारक समझता है और उनके प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के लिए प्रतिवर्ष उनके जन्मदिवस को एक पर्व के रूप में मनाता है।

अम्बेडकर जयंती के दौरान बनारस में कार्यक्रम–

वैसे तो अम्बेडकर जयंती सम्पूर्ण विश्व में मनायी जाती है। परन्तु विशेषतः भारत में मनायी जाती है। भारत का हर गाँव, शहर, प्रदेश पूरे जोशो खरोश से अम्बेडकर जयंती को मनाता है। यह तकरीबन हर साल अम्बेडकर अनुयायियों द्वारा अम्बेडकर को दी जाने वाली विशेष श्रद्धांजलि होती है। इस कार्यक्रम के तहत

चित्रकारी, सामान्य ज्ञान, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम, निबन्ध लेखन, नृत्य नाटिका, परिचर्चा, खेल कार्यक्रम जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम होते है। विश्वविद्यालय, विद्यालय द्वारा संगोष्ठियों व सेमीनार का भी आयोजन किया जाता है।

वर्ष 2019 में बाबा साहेब की 128वीं जयंती थी। जो पूरे भारत में उल्लास पूर्वक मनायी गई। उत्तर प्रदेश के बनारस शहर में भी बाबा साहेब की जयंती पर काफी कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अन्धरापुल स्थित लच्छीपुरा कालोनी में महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के छात्रसंघ के पूर्व उपाध्यक्ष राहुल राज के साथ स्थानीय लोगों ने बाबा साहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और छोटे बच्चों में शिक्षा सामग्री का वितरण किया। बाबा साहेब के ''शिक्षा ही समाज का उत्थान कर सकती है'' विचार को बढ़ावा दिया। उनका कहना था कि बाबा साहेब समाज के पिछड़े वर्ग को शिक्षित करना

चाहते थे। इसलिए हम लोग उनके शिक्षा सन्देश को आगे बढ़ायेंगे। चूँकि गरीब के पास आवश्यक संसाधन नहीं होते है। जिससे वह अपने बच्चों की शिक्षा को जारी रख सके। हालांकि अब सरकार ने भी निःशुल्क शिक्षा को बढ़ावा देने का भरसक प्रयास जारी रखा है। राहुल राज ने कहा कि हम लोग गरीब बच्चों को पढ़ाने की जिम्मेदारी उठाये तो समाज से शिक्षा का अंधेरा खत्म हो सकता है।[17] इस अवसर पर विकास चौहान, मो0 आदिल, राहुल दूबे, अभिषेक गौतम, गौरव कुमार, प्रवीन राय, कृष्णवीर सिंह आदि लोग उपस्थित थे।

अम्बेडकर संगठन –

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयन्ती समारोह समिति द्वारा डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती बहुत धूमधाम से मनायी जाती है। इसके संरक्षक मण्डल में– माननीय ललित बौद्ध, कामता प्रसाद, नन्दकिशोर, राम कुमार प्रसाद, धर्मराज, बनवारी लाल बौद्ध।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयन्ती समारोह समिति के अध्यक्ष– मुसाफिर, महामंत्री अरूण कुमार प्रेमी है। इसके उपाध्यक्ष– डॉ0 विनोद कुमार, ओम प्रकाश, पी0 राम अरूण कुमार कौले, अंजू कुमारी बौद्ध, डॉ0 रश्मि गौतम।

सहायक सचिव– मा0 ब्रजेश कुमार भारतीय, माननीय उद्धव जी। कोषाध्यक्ष– माननीय डी0 के0 चौधरी, रामखेलावन। संगठन मंत्री– श्रीमती केवला देवी, श्री राजेन्द्र प्रसाद, श्री प्रज्ञानन्द, श्री कैलाश प्रसाद, श्री रोहित राम। प्रचार मंत्री– श्याम नारायण प्रसाद, मेही राम, योगेन्द्र प्रसाद, रविन्द्र कुमार, किशोरी लाल कश्यप। विधिक सलाहकार– श्री धम्म पाल कौशाम्बी, रामवचन राम, श्री हरिप्रसाद, राम प्रसाद। सम्प्रेषक– अरूण कुमार, आर0 के0 व्यास, राम जी गौतम। सदस्यगण– अशोक, आनन्द, राम दुलार, गौतम, धर्मेन्द्र कुमार (गब्बर), डॉ0 राजेश जैसल, ओंकार नाथ, विजय भारती, विनोद कुमार आदि, प्रेमलाल, राजदेव, शम्भू नाथ, जी0पी0 चौधरी, जी राम, दीनानाथ, कैलाश प्रसाद, भानू राम, डॉ0 प्रहलाद, विन्ध्याचल प्रसाद, हीरालाल, डॉ0 शीतला प्रसाद, प्रेमनाथ, शिव नारायण राम, माधोराम, मंचू राम, सेवा लाल, राम जी मैनेजर, राजेन्द्र प्रसाद, यशवन्त राव

[17] साक्षात्कार, राहुल राज

अम्बेडकर, रामचन्द्र आदि बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की कांस्य प्रतिमा की स्थापना के सहयोगी संगठन।

अखिल भारतीय अनुसूचित जाति, जनजाति कर्मचारी कल्याण संघ वाराणसी के पदाधिकारी (2010 ई0)

संरक्षक मण्डल– मुसाफिर, नन्द किशोर, श्यामनाथ राम, ई0 एस0 वी0 राव, ई0 सेवाराम, ई0 हरन्द कुमार, राजेन्द्र प्रसाद, ई0 आर0 के0 सिंह, राम खेलावन, केवला देवी, लालमन राम, डा0 वीराम, डा0 आर0 एस0 आनन्द, राम कुमार प्रसाद, प्रान्तीय संयुक्त सचिव, श्री श्याम नारायण प्रसाद,

अध्यक्ष – अरूण कुमार प्रेमी

वरिष्ठ उपाध्याय – पी0 राम, इं0 आनन्द शंकर

उपाध्यक्ष – कामता प्रसाद, इं0 सत्य प्रकाश, धर्मराज, आर0के0 प्रसाद, डॉ0 राहुल राज

सचिव– रोहित राम

कोषाध्यक्ष– डी0 के0 चौधरी

उपसचिव– बृजेश कुमार भारतीय

संयुक्त सचिव– अंजू कुमारी बौद्ध, पुष्पा देवी, अजय कुमार, आनन्द प्रकाश

संगठन सचिव– ओम प्रकाश, राम आधार राव, संजय कुमार प्रेमी, धर्मेन्द्र कुमार

प्रचार सचिव– रविन्द्र कुमार, डा0 रमेश प्रसाद, प्रदीप कुमार, प्रवीण कुमार

संक्षेपक– आर0 एस0 राठौर, आर0 के0 व्यास, डा0 विष्णुकान्त, अशोक, हीरा प्रसाद भारतीय।

विधि सलाहकार – राम वचन राम, डा0 एम0 पी0 अहिरवार, राजेन्द्र प्रसाद, डा0 एस0 के गौतम

कार्यकारिणी सदस्य गण – राम लाल शास्त्री, नारायण प्रसाद, डा0 लालिज कुमार चन्द्रा, डा0 राजीव कुमार, पन्नाराम, सी0 आर0 घुसिया, भैया लाल कनौजिया, बेचनराम, उद्धव प्रसाद, विजय कुमार राव, गोविन्द कुमार भारती, जय प्रकाश, विमलेश, अरूण कुमार सुरेश लोखण्डे, मनोज सिंह गौतम, रमाकान्त जैसवार, लव कुमार प्रहलाद राग ई0 अनिल कुमार बब्बन प्रसाद, डॉ0 रवि भारती लल्ली कुमारी,

गणेश राम, मुरारी राम , जिलाजीत, दयाशंकर, राजकुमार, बसन्त लाल, गुलाब राम, अरूण कुमार भारती, सुरेश गौतम, रविन्द्र कुमार, प्रेमलाल जी0 पी0 चौधरी।

लहरतारा का सर्वे

लहरतारा वाराणसी जिले का एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रसिद्ध कस्बा है, जो वाराणसी कैन्ट से 5 किमी0 की दूरी पर कैन्ट से सारनाथ रास्ते पर स्थित है। कैन्ट से लहरतारा करीब 5 से 10 मिनट में पहुँचा जा सकता है। लहरतारा की प्रसिद्धि की सबसे बड़ी वजह कबीर की जन्मस्थली होना है। कहा जाता है कि कबीर का जन्म 1440 ई0 में वाराणसी के लहरतारा गाँव में एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था। समाज के भय से उस ब्राह्मणी ने कबीर को लहरतारा गाँव के तालाब के पास छोड़ गई थी। एक मुस्लिम निःसन्तान दम्पत्ती ने कबीर का पालन–पोषण किया। चूकिं कबीर एक निर्गुण सन्त एवं समाज सुधारक थे। उनके विचार–साखी, शबद, रमैनी में लिपिबद्ध है। यही कारण है कि लहरतारा गाँव अत्यंत प्रसिद्ध है एवं कबीरपंथियों के लिए तीर्थ स्थान है। आज भी ज्यादातर अनुसूचित जाति के लोग कंबीरपंथ को मानते है। और यही समुदाय धर्मान्तरित होकर नव बौद्ध बन रहा है। अतः मैंने नव बौद्ध के सम्बंध में अध्ययन हेतु लहरतारा को केन्द्र बनाया।

लहरतारा कस्बे की कुल जनसंख्या तकरीबन 5124 है। 2011 की जनगणना के मुताबिक जिसमें पुरूषों की कुल जनसंख्या 2750 तथा स्त्रीयों की जनसंख्या 2374 के करीब है। लहरतारा गाँव में स्त्री पुरूष लिंगानुपात 863/1000 (912/1000 U.P.) है तथा साक्षरता का स्तर 78.76% (67.68% U.P.) जिसमें से पुरूषों की साक्षरता स्तर स्त्री से ज्यादा है। यह तकरीबन 85.52% है, जबकि स्त्री साक्षरता 70.92% है, जो तकरीबन 15% कम है, पुरूषों की साक्षरता के स्तर से। यहाँ पर बच्चों का लिंगानुपात 875/1000 है। चूँकि लहरतारा एक शहरी कस्बाई क्षेत्र है, अतः यहाँ पर जागरूकता का स्तर अन्य क्षेत्रों से ज्यादा है। यदि यहाँ पर देखा जाय तो कुल जनसंख्या का 98.81% जनसंख्या हिन्दू है, जो कि इस कस्बे में बहुसंख्यक है। वही मुस्लिम जनसंख्या तकरीबन 0.62% है अगर हम ईसाईयों की बात करें तो उनकी जनसंख्या 0.35%, सिक्ख 0.06%, जैन 0.01% और बौद्धों की जनसंख्या

लहरतारा की कुछ जनसंख्या का 0.10% है। लहरतारा में अनुसूचित जाति समुदाय सम्पूर्ण जनसंख्या का 37.94% तथा अनुसूचित जनजाति 1.13% है। लहरतारा में जो लोग नव बौद्ध बने है, वह ज्यादा अनुसूचित जाति से सम्बंधित है। विशेष रूप से चमार है। जो स्वयं को हरिजन या भारती नाम से सम्बोधित करते है। यहाँ की जनसंख्या का बहुसंख्यक लगभग 80% लोग व्यवसाय से जुड़े है, जो सरकारी सेवा में हैं। यदि देखा जाये तो अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोग ज्यादातर सफाइ र्कर्मी या क्लर्क की नौकरी में है, गिने चुने लोग ही उच्च सेवा मे है। ज्यादातर महिलाएँ गृहणी है या छोटे–मोटे व्यवसाय, शिक्षा में कार्यरत है। लहरतारा के निवासी राम अनुज बौद्ध जो स्वंय बैंक में क्लर्क है, कहते हैं कि यहाँ बौद्ध धर्म के प्रति पहले की अपेक्षा अब ज्यादा रूझान बढ़ रहा है। लोग जैसे–जैसे शिक्षित हो रहे है, वे अम्बेड़कर विचारों को समझने लगे है। शोभावती जी स्वंय अनुसूचित जाति परिवार से सम्बंधित है, किन्तु अब बौद्ध धर्म ग्रहण कर चुकी है। बताती है कि बौद्ध धर्म के प्रति रूझान में वृद्धि हुई है न केवल शहरी क्षेत्रों में बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी। हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का स्तर वैचारिक स्तर पर ज्यादा नहीं है किन्तु बौद्ध गतिविधियों में वे बढ़–चढ़कर भागीदारी करते है।

इस प्रकार लहरतारा में मेरी मुलाकात अधिकांश महिलाओं से ही हुई उनसे बातचीत करके पता चला कि उनमें से ज्यादातर महिलाओं को बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर के बारे में जानकारी तो है कि वह एक महान समाज सुधारक थे। उन्होंने निम्न जातियों, महिलाओं, दलितों, पिछड़ों के लिए बहुत काम किया है, लेकिन वे बाबा साहेब के नवयान के बारे में नहीं जानती है। हालांकि उनमें से बहुत सारे लोगों ने पिछले दो दशक में बौद्ध धर्म ग्रहण किया है। परन्तु वे खुद को बौद्ध ही मानते है, नव बौद्ध जैसी बातों में वे विश्वास नहीं करते है। वे खुद को बौद्ध धर्म और महात्मा बुद्ध के उपासक ही मानते है। सारनाथ को अपना तीर्थ स्थल। जब लहरतारा की महिलाओं से उनकी पूजा उपासना के बारे में पूछा तो अधिकांश महिलाओं ने बताया कि हम लोग धूप दीप करते है, भगवान बुद्ध को। यही नहीं काफी ऐसे अनुसूचित जाति के लोग भी मिले जो लिखते तो हिन्दू धर्म है परन्तु वे बौद्ध धर्म की उपासना करते है। यहाँ एक चीज और ध्यान देने योग्य रही जो उच्च

शिक्षित लोग है, उनको छोड़ दिया जाय तो बाकी लोगों को बाबा साहेब के विचारों के बारे में जानकारी नगण्य है। उनको लगता है बाबा साहेब ने बौद्ध धर्म को अपनाया, सम्मान पूर्वक जीने के लिए एवं शिक्षा अर्जित करने को कहा। वे नवयान और उसके सिद्धांतो से परिचित ही नहीं है। उनके लिए बौद्ध धर्म के हीनयान, महायान, नवयान में कोई फर्क ही नहीं है। वे कर्मकाण्ड़ों में विश्वास करते है। अधिकांश नव बौद्ध लोग हिन्दू संस्कारों को मानते हैं, और महात्मा बुद्ध की पूजा भी हिन्दू रीति–रिवाजों धूप द्वीपों से करते है। धर्म यात्रा में बढ़–चढ़कर भागीदारी करते है। लहरतारा की केवल नव बौद्ध महिलाओं में ही नहीं बल्कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति महिलाओं में भी बौद्ध उत्सवों को लेकर अत्यंत उल्लास का वातावरण था।

वाराणसी

निश्चित रूप से बनारस की कुल आबादी जनगणना रिपोर्ट 2011 के अनुसार 36,76,841 है। जिसमें पुरूषों की जनसंख्या 19,21,857 तथा महिलाओं की जनसंख्या 17,54,984 है। जनसंख्या वृद्धि दर 17.15% है तथा स्त्री–पुरूष लिंगानुपात 913/1000 के लगभग है बनारस का जन घनत्व 2395/वर्ग किमी0 है। बच्चों का (0.6 वर्ष) का लिंगानुपात 885/1000 है। साक्षरता का स्तर उत्तर प्रदेश की साक्षरता 67.7% के मुकाबले 75.6% है। यहाँ पुरूषों की साक्षरता का स्तर महिलाओं के मुकाबले ज्यादा है। यह अन्तर लगभग 17.1% है, पुरूष साक्षरता 83.8% है, जबकि महिला साक्षरता 66.7% है। धार्मिक आधारित जनगणना के आधार पर देखा जाये तो यहाँ पर बहुसंख्यक जनसंख्या हिन्दू है। वाराणसी की कुल अबादी का 70% से अधिक जनसंख्या हिन्दू धर्म को मानती है। जबकि 20% लोग इस्लाम धर्म में विश्वास करते है। वही 0.34% लोग ईसाई मत के, 0.22% सिक्ख धर्म, 0.04% बौद्ध धर्म में विश्वास करते है तथा 0.12% जैन धर्म एवं अन्य मत को मानने वाले है।

इस प्रकार अगर बनारस की सम्पूर्ण आबादी में बौद्ध धर्म की भागीदारी को देखा जाय तो 0.04% का मतलब है 1470 लोग जो कि निश्चित रूप से बनारस में सारनाथ के महत्व को देखते हुए अत्यंत कम जनसंख्या है। तब 1470 बौद्ध जनसंख्या में अगर देखा जाय तो नव बौद्ध जनसंख्या (दलित बौद्ध) की जनसंख्या

का 80% है। यानि 1200 की संख्या नव बौद्धों की है। हालांकि यह जनसंख्या स्वयं को नव बौद्ध जैसी किसी दायरे में नहीं बाधती है। ये स्वंय को बौद्ध ही मानते है, उनका मानना है कि नव बौद्ध जैसी कोई चीज है ही नहीं।

बुद्ध पूर्णिमा पर बनारस कैंट से निकलने वाली धम्म यात्रा के दौरान एक शोधार्थी होने के कारण मेरी मुलाकात नव बौद्ध सम्प्रदाय के उपासकों से हुई। इसमें काफी शिक्षित, उच्च पदस्थ, सामाजिक रूप से काफी सक्रिय लोग थे। जिसमें से कुछ नाम निम्नवत है, रेशमा जो कि एक 22 साल की शिक्षित नव युवती है। जो सामाजिक तौर पर बौद्ध धर्म की गतिविधियों में काफी सक्रिय है। इसके अलावा शुभावती प्रभू, भन्ते बोधिशील, भन्ते कोलित बुद्ध मित्र मुसाफिर, डॉ0 हरीश, डॉ0 संतोष यादव, विजय कुमार राव आदि बौद्ध गतिविधियों में सक्रिय लोगों से मुलाकात हुई। इनमें से कुछ लोग उच्च शिक्षा प्राप्त एवं प्रतिष्ठित सेवारत लोग थे। जब इनसे नव बौद्ध धर्म की बनारस में स्थिति और धर्मान्तरण बारे में बात किया तो इनका कहना था कि पहले धर्मान्तरण बड़ी संख्या में होता था। परन्तु पिछले एक दशक से धर्मान्तरण में कमी आयी है, इसके पीछे वे व्यक्ति की व्यस्त दिनचर्या एवं हिन्दू संगठनों की जागरूकता को जिम्मेदार कारक मानते हैं। उनका मानना है कि बौद्ध गतिविधियों में शहरी लोगों की अपेक्षा ग्रामीण भागीदारी ज्यादा होती है। उन्हें सिर्फ सूचना भिजवाने की जरूरत होती है। ग्रामीण लोग ऐसे समारोहो में बढ़–चढ़कर हिस्सेदारी करते है। इसके पीछे कहीं न कहीं उनकी धार्मिक प्रवृत्ति भी महत्वपूर्ण कारक होती है। जबकि वे बहुत ज्यादा शिक्षित भी नहीं होते है। गिने चुने लोगों को छोड़कर ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी, शहरी महिलाओं की अपेक्षा बहुत ज्यादा होती है। हालांकि वैचारिक रूप से देखा जाय तो शहरी महिलाएँ अम्बेड़कर के विचारों से ज्यादा परिचित और प्रभावित होती है, परन्तु जब सामूहिक भागीदारी का प्रश्न होता है तो ग्रामीण महिलाएँ भले ही अम्बेड़कर विचारधारा से परिचित नहीं है, लेकिन फिर भी उनकी सक्रिय भागीदारी उनके समाज के हितों के प्रति उनकी जागरूकता को प्रदर्शित करती है। बनारस कैन्ट से सारनाथ भ्रमण के दौरान अनेक ग्रामीण महिलाओं से मुलाकात हुई और उनमें से अधिकांश महिलाओं ने अम्बेड़कर विचारधारा से अपनी अनभिज्ञता जाहिर किया।

☆☆☆

अध्याय–6

निष्कर्ष

एवं

सुझाव

निष्कर्ष एवं सुझाव

बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर और उनके नवयान पर शोध के दौरान यह अनुभव हुआ कि बाबा साहेब का नवयान आरम्भ करने के पीछे और दलितों के बड़ी मात्रा में बौद्ध धर्म ग्रहण करने के पीछे, जिसे नव बौद्ध धर्म कहा जाता है जो उद्देश्य बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का था, वह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि काफी हद तक पूरा हुआ। हालाँकि पूर्णतः प्राप्त हुआ, ऐसा नहीं कहा जा सकता है।

दलितों से नव बौद्ध बने दलितों की स्थिति काफी बेहतर है। समाज में उनके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार किया जाता है। बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने संविधान द्वारा उन्हें सुरक्षा प्रदान किया। जिससे दलितों (नव बौद्ध) के आत्मविश्वास में काफी वृद्धि हुई। फिर भी उनके सामने अनेक चुनौतिया है जैसे

- बौद्धों के समक्ष नवबौद्धों की समानता का प्रश्न,
- बौद्ध धर्म मानने वाले दलितों को नवबौद्ध के रूप में सरकारी आकड़ों में दर्ज कराने की समस्या,
- राजनीतिक समुदाय के रूप में एक जुट करने की समस्या,

बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतो पर आधारित नवयान में 22 हिन्दू विरोधी शपथ ग्रहण करना अनिवार्य किया गया था। जिसमें त्रिदेवों की पूजा, हिन्दू धार्मिक कर्मकाण्ड़ों आदि को न मानना और न ही हिन्दू समारोहो, उत्सवों में भागीदारी करना, जो कि नवयान के मूल सिद्धांतों में था।

बनारस अध्ययन के दौरान ऐसा पाया गया कि जिन दलित जातियों ने हिन्दू धर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म को ग्रहण किया, वे नव बौद्ध कहलाये। वास्तव में वे अपने आपको नव बौद्ध मानते ही नहीं है, उनका मानना है कि नव बौद्ध जैसी कोई संकल्पना ही नही है। वे महात्मा बुद्ध के बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतो में ही विश्वास करते है, और बौद्धों के मूल बौद्ध एवं नव बौद्ध विभाजन से इत्तेफाक नहीं रखते है। उनका मानना है कि यह मतभेद उत्पन्न करता है। उनका यह भी मानना है कि हमारे पूर्वज बौद्ध धर्म को ही मानते थे। किन्तु बाद में हिन्दूओं ने जबरदस्ती हमारा

धर्म परिवर्तन करवा दिया था, और हमें हिन्दू जातियों में शामिल कर लिया गया। अब जबकि हम नव बौद्ध धर्म ग्रहण करके हम अपना धर्मान्तरण नहीं कर रहे है, बल्कि अपने मूलधर्म (पूर्वज धर्म) में वापसी कर रहे है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, समानता, हासिल करना और दलितों को स्वाभिमान के साथ जीवन जीने के लिए अग्रसर करना, जो बाबा साहेब का मूल उद्देश्य था। जब उन्होंने देखा कि हिन्दू धर्म में रहकर ये सब चीजे प्राप्त करना आसान नही है, तब उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण किया। बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतो में विश्वास करते हुए बौद्ध धर्म को उसके अन्य कर्मकाण्डी मत महायान, वज्रयान के प्रभाव से अपने नवयान को मुक्त रखा। परन्तु आज जब हम नवयान और बाबा साहेब के मत को मानने वाले नव बौद्धों के क्रिया कलापों को देखते है तो एक बात स्पष्ट रूप से नजर आती है कि नवयान भी धार्मिक कर्मकाण्ड़ों से घिर गया है। नव बौद्ध बने दलित बाबा साहेब को दलित समाज का उद्धारक तो मानते है, परन्तु बाबा साहेब के 22 सिद्धांतो का अक्षरशः पालन नही करते है। वे बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतो में विश्वास करते है। लेकिन आज भी अनेक हिन्दू संस्कारो का पालन करते है। सबसे पहले हम उनकी पूजा पद्धति के बारे में बात करे तो बाबा साहेब ने भी महात्मा बुद्ध को ईश्वर नहीं माना बल्कि उन्हें सिर्फ आचार्य माना। जिनका मकसद लोगों के जीवन को सही राह दिखाना और जनकल्याण ही था। उन्होने धार्मिक कर्मकाण्ड़ों का विरोध किया।

बुद्ध पूर्णिमा पर आयोजित होने वाले समारोहों में यदि हम भागीदारी की बात करते है तो इसमें न केवल बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग बल्कि नव बौद्ध कहे जाने वाले दलित जो धर्मान्तरित है, बड़ी मात्रा में भागीदारी करते है। इस प्रकार हम देखते है कि बौद्ध धर्म अपने मूल स्वरूप से काफी अलग नजर आता है। वे धार्मिक कर्मकाण्ड जिनका विरोध महात्मा बुद्ध ने भी किया और अम्बेडकर ने भी किया, मौजूदा बौद्ध पूजा परम्परा में वो चीजे काफी हद तक शामिल हो गयी है। मूर्ति पूजा, बौद्ध परम्परा बन गई है एवं महात्मा बुद्ध की भगवान के रूप में पूजा की जाने लगी है, वह भी धूप–दीप के साथ। इस सम्बंध में भन्ते कोलित का कहना है कि निश्चित रूप से बौद्ध धर्म में इन कर्मकाण्ड़ों की जगह नहीं है, लेकिन श्रद्धालु इसी रूप में ही उपासना करने में प्रसन्नता का अनुभव करते है और यही प्रक्रिया

उनकी श्रद्धा प्रकट करने का सबसे बेहतर तरीका है जिसे वे मानते है तो फिर हम कैसे उनकी भावनाओं का अनादर कर सकते है। यहाँ पर 12 मणिचक्र की व्यवस्था है जिसका उद्देश्य उपासक के ध्यान द्वारा इंद्रियों को वश में करना है। परन्तु अब लोगों के पास आधुनिक दौड़ भाग में ध्यान का समय नहीं है, वे (उपासक) इस स्थल पर पर्यटन स्थल के रूप भ्रमण करने आते है, और अपनी सुविधानुसार समय व्यतीत करते है। मैंने वहाँ भ्रमण के दौरान यह अनुभव किया कि महात्मा बुद्ध का धर्म, कर्मकाण्ड़ों से परिपूर्ण हो गया है। उस स्थान पर जहाँ महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों को उपदेश देने की मुद्रा में मूर्तियाँ बनी हुई है।

वहाँ अंधविश्वास, कर्मकाण्ड प्रबल रूप से दिखायी पड़ता है। जिस पर स्पष्ट रूप से हिन्दू कर्मकाण्ड़ों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। महात्मा बुद्ध की प्रतिमा के पीछे थाली में सजाकर धूप, दीप, शीतल पेय पदार्थ के विभिन रूप को श्रद्धावत् पूजा हेतु समर्पित किया गया था। जो कि निश्चित रूप से विलासिता का प्रतीक है।

जबकि बौद्ध धर्म में साफतौर पर सुगन्धित एवं ऐसे पेय पदार्थो की मनाही की गई थी। भन्ते कोलित का कहना है कि कोशिश किया जाता है कि श्रद्धालु ऐसा न करे, किन्तु वो नहीं मानते है। उन्हें ऐसा करना अच्छा लगता है।

अतः हमें श्रद्धालुओं की श्रद्धा के आगे अपनी पूजा पद्धतियों में छूट देनी ही पड़ती है। वरना लोगों के मन को दुःख हो सकता है। अतः हम उनको उनकी इच्छानुसार अपनी श्रद्धा प्रकट करने का अवसर देते है।

मूलगंधकुटी विहार भ्रमण करते हुए हमारी मुलाकात भन्ते बोधिशील से हुई। उन्होंने बताया कि जब मैं छः साल का था, तभी से बौद्ध भिक्षु बन गया था। जब मैंने उनसे बौद्ध और नव बौद्धों के बीच समानता का प्रश्न उठाया तो उन्होंने बताया कि निश्चित रूप से बौद्ध धर्म में सभी समान है, और सभी को समानता, करूणा की दृष्टि से देखा जाता है, किसी में कोई भेदभाव नहीं है। भन्ते बोधशील ने बताया कि बौद्ध धर्म में जितनी सादगी से पहले पूजा होती थी, अब उतनी सादगी नहीं है। पहले की अपेक्षा कर्मकाण्ड़ों की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है जो सही नहीं है। किन्तु प्रत्येक धर्म को अपने धर्मानुयायियों की आवश्यकतानुसार अपने स्वरूप में थोड़ा बहुत परिवर्तन करना ही पड़ता है, जो समय की आवश्यकता भी है। इसके पीछे बहुत बड़ा उद्देश्य, धर्मानुयायियों की संख्या में वृद्धि करना भी है।

धर्मान्तरण के मुद्दे पर भन्ते बोधिशील ने बताया कि पहले की अपेक्षा धर्मान्तरण में काफी कमी दर्ज की गई है। अब लोग अपने धर्म परिवर्तन करने में पहले की तरह बहुत इच्छुक नहीं है। इसके पीछे बड़ी वजह उनके मूल धर्म में होने वाला सुधार है। जैसा कि हम जानते है कि 1956 के समय से ही दलितों ने बड़ी मात्रा में बौद्ध धर्म ग्रहण किया और यह प्रक्रिया निरन्तर जारी रही।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर ने बचपन से ही अत्याधिक तिरस्कार एंव अपमान का सामना किया। अतः उन्होंने हिन्दू धर्म के ही त्याग का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि दलितों को भी समाज में सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार मिलना चाहिए। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने नवयान प्रारम्भ किया। नवयान के माध्यम से उन्होंने दलितों को समाज में सम्मानपूर्ण स्थान दिलवाया। बौद्ध धर्म के रूप में उन्हें एक ऐसा धर्म मिला, जिसमें समानता, दया, सद्भाव जैसी भावनाएँ मौजूद रही। जिसने दलितों से नव बौद्ध बने लोगों में स्वाभिमान जगाया। दलितों का बड़ी मात्रा में बौद्ध धर्म में पलायन हुआ, तब हिन्दू धर्म ने भी अपनी सुधार की प्रक्रिया आरम्भ किया तथा संविधान के अनुच्छेद 17 के अनुसार अस्पृश्यता उन्मूलन द्वारा दलितों को अपने अधिकारों एवं सम्मान के प्रति जागरूक किया। जिसका प्रभाव बनारस जैसे शिक्षा के गढ़ में विशेषतः देखने को मिलता है।

चूँकि बनारस में सारनाथ बौद्धों का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान है। इसलिए यहाँ बौद्ध धर्म में धर्मान्तरण की प्रक्रिया तीव्र रही। लेकिन सवाल उठता है

कि क्या मूल बौद्धों के मन में दलित से बौद्ध बने लोगों के लिए समानता की भावना थी या नहीं, तो बनारस भ्रमण के दौरान यह स्पष्ट रूप से दिखा कि मूल बौद्ध भी अन्य बौद्ध धर्मानुयायियों की न केवल इज्जत करते है, बल्कि उनके प्रति भी समानता का दृष्टिकोण रखते है। भन्ते कोलित का कहना था कि बौद्ध धर्म में किसी भी प्रकार के विभेद के लिए कोई जगह नहीं, क्योंकि महात्मा बुद्ध का मानना था कि सभी मनुष्य एक समान है तो ऐसी स्थिति में सभी मनुष्यों को समान समझना और उनके साथ कोई भेदभाव न बरतना बौद्ध धर्म का उद्देश्य है। अतः बौद्ध धर्म मे मूलबौद्ध एवं नव बौद्ध जैसी कोई अवधारणा नहीं है, वे सभी बौद्ध धर्म के उपासक है। बौद्ध धर्म में सबको समान स्थान है।

यही कारण है कि वहाँ ऐसे बहुत से बौद्ध भिक्षु मिल जायेंगे। जो है तो अनुसूचित जाति से परन्तु बचपन से भिक्षु बन गये है एवं समाज में उनका बड़ा सम्मान है।

सारनाथ चूँकि बौद्ध पर्यटन स्थल होने के कारण न केवल देश से बल्कि विदेशों से बड़ी संख्या में बौद्ध पर्यटक भ्रमण हेतु आते है। जिससे यहाँ व्यापार एवं रोजगार का बड़ी संख्या में विकास हुआ है। जिससे यहाँ लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। अधिकांश दलित जो नव बौद्ध धर्म में धर्मान्तरित हुए है। उच्च शिक्षा प्राप्त है और जो उच्च शिक्षित नहीं है, वे अपनी आने वाली पीढ़ियों की शिक्षा को लेकर काफी जागरूक है। वास्तव में बाबा साहेब ने शिक्षा पर विशेष ध्यान देकर और शिक्षा को ही उन्नति का मार्ग बताकर दलितों को शिक्षा के लिए जागरूक किया।

नव बौद्ध जो कि स्वंय को नव बौद्ध नहीं मानते है, परन्तु बाबा साहेब की शिक्षा पर विशेष ध्यान देकर शिक्षार्जन पर बल दिया। यही कारण है कि आज बनारस परिक्षेत्र में बौद्धों की साक्षरता का स्तर दलितों की साक्षरता स्तर से काफी बेहतर है। जिसका योगदान उनकी आर्थिक सम्पन्नता में विशेष रूप से देखा जा सकता है। यहाँ नव बौद्ध विदेशी पर्यटकों के लिए स्थानीय गाइड के रूप में भी काम करते है, चूँकि वर्ष भर यहाँ पर्यटकों का आवागमन लगा रहता है। अतः यहाँ लोगों को वर्ष भर रोजगार के अवसर उपलब्ध रहते है, जिससे लोगों की आर्थिक सम्पन्नता में बढ़ोत्तरी ही देखी गई है।

बाबा साहेब ने नवयान के रूप में जिस नये मत का प्रचलन जिस उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया। उसने निश्चित रूप से अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। केवल बौद्ध धर्म ग्रहण करने वाले बौद्धों को ही नहीं बल्कि दलितों को समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त हुआ। हम यह नहीं कह सकते कि भेदभाव पूरी तरह से समाप्त हो गया। किन्तु काफी हद तक भेदभाव में कमी आयी। समाज में एक बात और सामने आयी कि बहुत सारे दलित लोग है, जो महात्मा बुद्ध की पूजा करते है, किन्तु बौद्ध धर्म में धर्मान्तरित नही है। मैं सारनाथ में ऐसे कई लोगो से मिली और जब उनसे इस बारे में बात किया तब उन्होंने बताया कि हम बाबा साहेब के विचारों को मानते है और बौद्ध धर्म में विश्वास करते है, पर जरूरी नही है कि हम धर्मान्तरण ही करे। बाबा साहेब के नये मत का असल उद्देश्य समतापूर्ण समाज स्थापना ही था। जिसके लिए लिए हम उनके विचारों को मानते है और उनके उद्देश्यों को प्राप्त करने की कोशिश करते है, अपने मूल धर्म में रहकर भी।

परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना – 1

"बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर को अपने सामाजिक जीवन में जिन अवरोधो ने उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए विवश किया, बौद्ध धर्म अपनाने के बाद वह उन समस्त प्रतिरोधो से निबटने में कामयाब रहे" उपरोक्त परिकल्पना को शोधार्थिनी ने अपने शोध के दौरान सत्य पाया क्योंकि बाबा साहेब ने संविधान में अनुच्छेद 14 से 18 तक व्यक्ति को समता का अधिकार दिला कर तथा अनुच्छेद 17 में अस्पृश्यता का उन्मूलन सम्मिलित कर दलित समाज को सम्मान पूर्वक जीवन यापन का अवसर उपलब्ध करवाया। बाबा साहेब के आदेशानुसार ही नव बौद्ध दलितो एवं गैर बौद्ध दलितो ने विशेषकर नव बौद्धों ने शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। यही कारण है कि आज बनारस में अनेक बुद्धिजीवी दलित समुदाय से आते है। दलित समुदाय की अपेक्षा नव बौद्ध अर्थात बौद्ध दलितो का सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक जीवन अधिक संपन्न है।

परिकल्पना – 2

"दलितो के बौद्ध धर्म अपनाने की मुख्य वजह बौद्ध धर्म की विशिष्टतायें थी। जिनको बाबा साहेब ने स्वीकार किया था" उपरोक्त परिकल्पना को शोधार्थिनी ने अपने शोध के द्वारा सत्य पाया। चूंकि यह कहा जा सकता है कि समानता, दलितो के बौद्ध धर्म ग्रहण करने की एक बड़ी वजह थी। बुद्ध पूर्णिमा की धम्म यात्रा में बौद्धों एवं नव बौद्धों की समान भागीदारी थी। यहां तक कि मूलगंधकुटी विहार, विपश्यना केंद्र आदि में पूजा–पाठ, ध्यान के दौरान बौद्धों एवं नव बौद्धों में कोई भेदभाव नहीं था। भन्ते कोलित ने कहा कि सारनाथ में मूल बौद्ध एवं नव बौद्ध जैसी कोई भावना नहीं है, यह एक संकीर्ण विभाजन है, जो लोग राजनीतिक लाभ हेतु करते है। यहां सभी लोग एक साथ जलपान, सामूहिक भंडारे के आयोजन में सक्रिय भागीदारी करते है।

परिकल्पना – 3

"नव बौद्ध दलित एवं गैर बौद्ध दलितो में बाबा साहेब को लेकर मत भिन्नता है" उपरोक्त परिकल्पना को शोधार्थिनी ने अपने शोध के दौरान असत्य पाया। क्योंकि सारनाथ भ्रमण के दौरान ऐसे दलित परिवारों से मुलाकात हुई, जो बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर धम्म यात्रा में भाग लेने आए थे, वरन् न केवल धम्म यात्रा में बढ़–चढ़कर भाग लिए अपितु सामूहिक भोजन दान का भी आयोजन किया। उनका कहना है कि बाबा साहेब के विचारों पर चलने के लिए यह जरूरी नहीं है कि वे धर्म परिवर्तन करें। बल्कि शैक्षिक, आर्थिक रूप से सक्षम होकर समाज में अपना स्थान बनाया जा सकता है।

6.2 सुझाव :–

- शिक्षा पर विशेष ध्यान देकर इन चुनौतियों से निपटा जा सकता है।
- राजनीतिक जागरूकता को बढ़ावा देना।
- समाज में शोषण की समाप्ति, समानता की स्थापना, शिक्षा पर विशेष ध्यान देकर किया जा सकता है। क्योंकि बाबा साहेब का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति के अभ्युदय का, समाज में समानता का सबसे बड़ा माध्यम है। शिक्षा

व्यक्ति की केवल मानसिक रूप से समृद्धि ही नहीं बनाती है। बल्कि आर्थिक उत्थान को भी सुनिश्चित करती है। इसलिए शिक्षा पर बल देकर, दलित, शोषित, पीड़ितों की मुक्ति सुनिश्चित करनी होगी।

- किसी भी देश–समाज की प्रगति सहिष्णुता, सद्भाव एवं सहयोग पर संभव है। अतः केवल सवर्णों को ही नहीं बल्कि नवयान अनुयायियों (नव बौद्धों) को भी दुराग्रह की दृष्टि से कोई कार्य नहीं करना चाहिए। सभी धर्मों को और नवयान अनुयायियों को भी सद्भाव एवं प्रेम पर बल देकर अपने अनुयायियों एवं प्रशंसकों की संख्या में वृद्धि करनी चाहिए।
- बौद्ध धर्म को धार्मिक कर्मकांडों एवं जटिलताओं से मुक्त रखने का प्रयास करना चाहिए। आज विश्व में शांति एवं करुणा की महती आवश्यकता है। ऐसे में बौद्ध धर्म ऐसे विचारों के प्रसार को बढ़ावा देने में विशेष भूमिका निभा सकता है। इसका सबसे बड़ा प्रभाव भारत की समृद्धि पर पड़ेगा।
- बनारस की समृद्धि में बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण स्थल सारनाथ की अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। सारनाथ को सरकार द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल बनाने के लिए वहा अवसंरचनात्मक विकास को बढ़ावा देना चाहिए। वहां बौद्ध (नव बौद्धों, मूल बौद्धों, तथा अन्य समुदायों के) लोगों को स्थानीय गाइड के रूप में प्रशिक्षित करके लोगों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जाय। इससे विदेशी पर्यटकों को सारनाथ भ्रमण के दौरान होने वाली कठिनाइयों से बचाया जा सकता है। बनारस की एक बेहतरीन पर्यटन स्थल के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्थिति मजबूत होगी।
- चूंकि बाबा साहेब अम्बेडकर और बौद्ध धम्म समारोहों में ग्रामीण आबादी बड़ी संख्या में और बड़े उत्साह से प्रतिभाग करती है। परन्तु वह बाबा साहेब के विचारों के संदर्भ में पूर्ण अवगत नही है, अतः नव बौद्ध संगठनों को सक्रिय तौर पर बाबा साहेब के विचारों से ग्रामीण जनता को परिचित कराने एवं उनकी सामाजिक, शैक्षिक, एवं आर्थिक समृद्धि में सहभागी बनना चाहिए।
- मूल बौद्धों एवं नव बौद्धों को एकजुट होकर बौद्ध धम्म के प्रचार–प्रसार पर विशेष ध्यान देना चाहिए, ताकि न केवल बौद्धों की संख्या में वृद्धि हो, बल्कि

वह राजनीतिक तौर पर भी एक मजबूत संगठन के रूप में उभर सकें और बनारस की राजनीति में महत्वपूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करके बौद्ध समाज की समस्याओं के समाधान की कोशिश करनी चाहिए।

☆☆☆

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

1. प्राथमिक स्त्रोत

1.1 साक्षात्कार पद्धति पर आधारित

1.1.1 प्रत्यक्ष साक्षात्कार

1.1.2 दूरभाष आधारित वार्ता

1.2 भ्रमण एवं निरीक्षण व अवलोकनात्मक पद्धति

साक्षात्कार पद्धति – प्रत्यक्ष साक्षात्कार

1. भिक्खू चन्दिमा, सारनाथ का प्रांगण, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 6:00 बजे।

2. विजय कुमार राव, कैन्ट, कचेहरी रोड, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 4:00 बजे।

3. बुद्ध मित्र मुसाफिर कैन्ट, कचेहरी रोड, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 3:00 बजे।

4. डॉ0 विनोद कुमार, पहाड़िया आशापुर, वाराणसी कैन्ट, 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 5:00 बजे।

5. भन्ते गुरुधम्मो, सारनाथ, वाराणसी, 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 7:00 बजे।

6. भिक्षु पी शिवली, सारनाथ, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 7:30 बजे।

7. भिक्षु महाथेरो, सारनाथ, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 7:45 बजे।

8. प्रभावती प्रभू, कैन्ट, कचेहरी रोड, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 4:15 बजे।

9. भन्ते कोलित, विपश्यना केंद्र, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 6:15 बजे।

10. देशना बौद्ध, कैन्ट, कचेहरी रोड, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 4:35 बजे।

11. नीलम, कैन्ट, कचेहरी रोड, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 4:25 बजे।

12. किरन, कैन्ट, कचेहरी रोड, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 4:45 बजे।

13. सुनीता बौद्ध, कैन्ट, कचेहरी रोड, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 4:55 बजे।

14. राहुल राज (छात्रसंघ उपाध्यक्ष, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ), लच्छीपुरा कॉलोनी, वाराणसी 14 अप्रैल 2019 सायंकाल 4:00 बजे।

15. डॉ0 हरीश, सारनाथ, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, सायंकाल 5:05 बजे।

16. रामा अनुज बौद्ध (बैंक क्लर्क) लहरतारा कस्बा, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, प्रातःकाल 10:00 बजे।

17. शोभावती (व्यवसायी) लहरतारा कस्बा, वाराणसी 18 मई 2019 बुद्ध पूर्णिमा, प्रातःकाल 11:00 बजे।

मौखिक वार्ता एवं दूरभाष आधारित वार्ता :–

- एस0 आर0 दारापुरी, (सेवानिवृत्त– पूर्व आई0जी0) से मौखिक एवं दूरभाष आधारित वार्ता
- भन्ते बोधिशील से दूरभाष आधारित वार्ता
- देशना (नवबौद्ध युवती) दूरभाष आधारित वार्ता
- भन्ते कोलित, विपश्यना केंद्र के भिक्षु से दूरभाष व चैट आधारित वार्ता

2. द्वितीयक स्त्रोत

2.1 अधिनियम व आकडें :-

- भारत का संविधान,
- जनसंख्या एवं नगरीकरण 2011

2.2 पुस्तक :-

- डॉ0 प्रिया सेन सिंह, संशोधित ''भीमाम्बेडकर शतकम्''

➢ ''द वुद्ध एंड हिज धम्म'' लेखक भीमराव अम्बेडकर अनुवादक – डॉ0 भदन्त आनन्द कौशल्यायन
➢ डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, ''भगवान बुद्ध और उनका धम्म''
➢ भगवान दास, ''भारत में बौद्ध का पुर्नजागरण एवं समस्याये'', दलित लिवरेशन टुडे, मई 1996 लखनऊ
➢ B.R. Ambedkar's Anniversary
➢ Ambedkar and Untouchabilty : Fighting he Indian caste System New York : Columbia university press Page 2 ISBN 0-231-1302-1
➢ "Mhar" Encyclopedia Britannica. Britannica.com
➢ मोहन सिंह, ''डॉ0 भीमराव अम्बेडकर व्यक्तित्व के कुछ पहलू''
➢ डॉ0 अम्बेडकर राइटिंग एण्ड स्पीचेज वाल्यूम 3
➢ बाबा भीमराव अम्बेडकर– ''बुद्ध एण्ड धम्म''
➢ मधुलिमये, ''डॉ0 अम्बेडकर एक चिन्तन''
➢ अखिल मूर्ति, ''प्राचीन भारत का इतिहास''
➢ एस0 के0 झा, जनसंख्या एवं नगरीकरण 2011
➢ कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव, ''प्राचीन भारत इतिहास तथा संस्कृति''
➢ कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव, ''आउट लाइन आफ महायान बुद्धिज्म''
➢ एस0 के पाण्डे, ''प्राचीन भारत का इतिहास''
➢ भारत अश्वघोष, ''भारतीय दलित आन्दोलन का इतिहास''
➢ बाबा भीमराव अम्बेडकर अनुवादित राजकिशोर, ''जाति का विनाश''
➢ भीमराव अम्बेडकर, ''शुद्र कौन है''
➢ बाबा भीमराव अम्बेडकर, ''अस्पृश्य : अस्पृश्यता के मूल पर एक शोध''
➢ डॉ0 वी0 आर0 अम्बेडकर, ''कांग्रेस और गांधी ने अस्पृश्यों के लिए क्या किया''
➢ डॉ0 वी0 आर0 अम्बेडकर, ''सोशल जस्टिस एंड पोलिटिकल सेफगार्ड आफ डिप्रेस्ड क्लासेस''

- विजय कुमार (निदेशक), ''डॉ0 अम्बेडकर का मत परिवर्तन और बौद्ध धर्म'' विश्व संवाद केंद्र, देहरादून
- क्रिस्टोफर एस क्वीन, ''अम्बेडकर बुद्धिज्म''
- गुंजेश गौतम झा (प्रवक्ता), ''डॉ0 अम्बेडकर धर्मान्तरण तथा हिंदुस्तान की एकता एवं अखंडता''
- डॉ0 अम्बेडकर राइटिंग एंड स्पीचेज

2.3 समाचार पत्र :-

- दैनिक जागरण
- अमर उजाला
- हिंदुस्तान
- राष्ट्रीय सहारा
- दैनिक भास्कर
- नवभारत

2.4 पत्रिकाएं :-

- योजना
- इंडिया टुडे
- परीक्षावाणी
- भारत अश्वघोष, सितंबर–अक्टूबर 1997

2.5 वेबसाइट :-

www.navayan.com

www.wikipedia.com

www.encylopedia.com

https://www.bhaskar.com/news/UP-VAR-b-r-ambedkar-death-anniversary-story-sarnath-varanasi-4964010-PHO.html?sld_seq=1 dated 12/6/2019